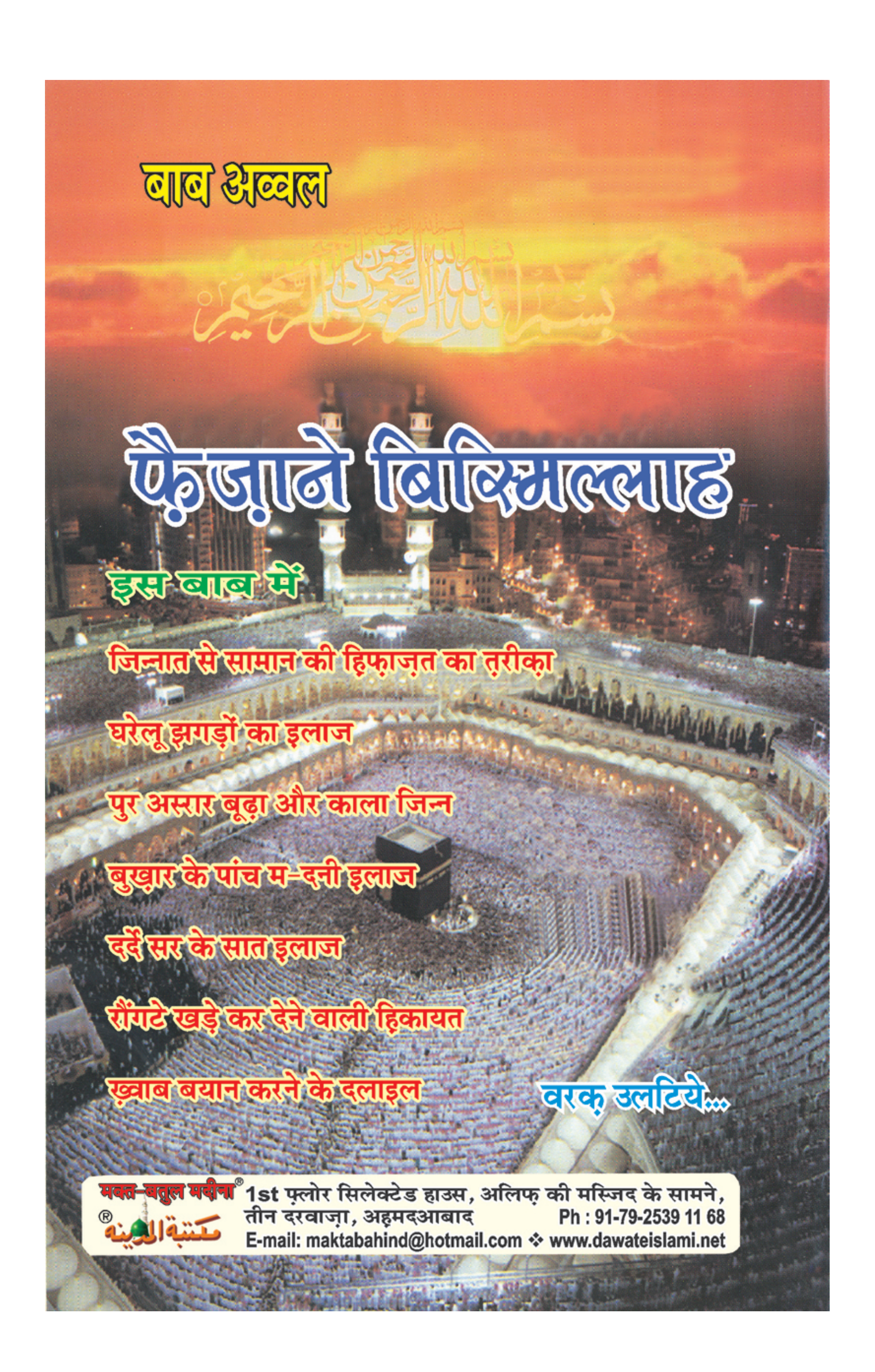

बाब अव्वल
بسم الله الرحمن الرحيم
फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह
इस बाब में
जिन्नात से सामान की हिफ़ाज़त का त़रीक़ा
घरेलू झगड़ों का इलाज
पुर असरार बूढ़ा और काला जिन्न
बुख़ार के पांच म-दनी इलाज
दर्दे सर के सात इलाज
रौंगटे खड़े कर देने वाली हिकायत
ख़्वाब बयान करने के दलाइल
वरक़ उलटिये...
मक्त-बतुल मदीना®
مكتبة المدينة
1st फ़्लोर सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद Ph : 91-79-2539 11 68
E-mail: maktabahind@hotmail.com ❖ www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **फ़रमाते हैं, "जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजे अल्लाह तआ़ला उस पर दस10 बार रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा ।"**

(मुस्लिम, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:175, ह़दीस़ नं:408)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अधूरा काम

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदी-नए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो भी अहम काम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ के साथ शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है ।"

(अद दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:26)

बिस्मिल्लाह पढ़े जाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खाने खिलाने, पीने पिलाने, रखने उठाने, धोने पकाने, पढ़ने पढ़ाने, चलने (गाड़ी वग़ैरा) चलाने, उठने उठाने, बैठने बिठाने, बत्ती जलाने, पंखा चलाने, दस्तर ख़्वान बिछाने बढ़ाने, बिछौना लपेटने बिछाने, दुकान खोलने बढ़ाने, ताला खोलने लगाने, तेल डालने इत्र लगाने, बयान करने ना'त शरीफ़ सुनाने, जूती पहनने इ़मामा सजाने, दरवाज़ा खोलने बन्द फ़रमाने, **अल ग़-रज़** हर जाइज़ काम के शुरूअ़ में (जब कि कोई मानेए़ शर-ई न हो) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ पढ़ने की आ़दत बना कर इस की ब-र-कतें लूटना ऐन सआ़दत है ।

जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना स़फ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, "इन्सान के साज़ो सामान और मल्बूसात को जिन्नात इस्ते'माल करते हैं । लिहाज़ा तुम में से जब कोई शख़्स़ कपड़ा (पहनने के लिये) उठाए या (उतार कर) रखे तो "*बिस्मिल्लाह* शरीफ़" पढ़ लिया करे । इस के लिये अल्लाह तआ़ला का नाम मोहर है ।" (या'नी *बिस्मिल्लाह* पढ़ने से जिन्नात इन कपड़ों को इस्ते'माल नहीं करेंगे ।)

(लुक़्त़ुल मरजान फ़ी अह़कामिल जान्न, लिस्सुयूत़ी, स़-फ़ह़ा : 98)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह हर चीज़ रखते उठाते بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ पढ़ने की आ़दत बनानी चाहिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शरीर जिन्नात की दस्त बुर्द से ह़िफ़ाज़त ह़ासिल होगी ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ पढ़ने में दुरुस्त मख़ारिज से ह़ुरूफ़ की अदाएगी लाज़िमी है । और कम अज़ कम इतनी आवाज़ भी ज़रूरी है कि रुकावट न होने की सूरत में अपने कानों से सुन सकें । जल्द बाज़ी में बा'ज़ लोग ह़ुरूफ़ चबा जाते हैं । जान बूझ कर इस त़रह पढ़ना मम्नूअ़ है और मा'ना

फ़ासिद होने की सूरत में **गुनाह**। लिहाज़ा जल्दी जल्दी पढ़ने की आदत की वजह से जो लोग ग़लत़ पढ़ डालते हैं वोह अपनी इस्लाह़ कर लें नीज़ जहां पूरी पढ़ने की कोई ख़ास़ वजह मौजूद न हो वहां सिर्फ़ **''बिस्मिल्लाह''** केह लें तब भी दुरुस्त है।

खलबली मच गई

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''जब بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ नाज़िल हुई तो बादल मश्रिक़ की सम्त दौड़े, हवाएं साकिन हो गईं, समुन्दर जोश में आ गया, चौपायों ने ग़ौर से सुनने के लिये अपने कान लगा दिये और शैत़ानों को आस्मानों से पत्थर मारे गए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, ''मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस शै पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी गई मैं उस में ***ब-र-कत*** दूंगा।''

(अद दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:26)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पारह 19 सू-रतुन नम्ल की तीसवीं आयत का ह़िस्सा भी है और क़ुरआने मजीद की एक पूरी आ-यते मुबा-रका भी जो कि दो सूरतों के मा बैन फासिले के लिये उतारी गई।

(ह़ल्बी कबीर, स़-फ़ह़ा:307)

बिस्मिल्लाह की "ب" की जामेइय्यत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बा'ज़ अंबियाअ عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर स़ह़ाइफ़ और कुतुब नाज़िल फ़रमाईं जिन की ता'दाद **104** है। इन में से **60 स़ह़ीफ़े** ह़ज़रत सय्यिदुना शुऐब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर, **30 स़ह़ीफ़े** ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर, **10 स़ह़ीफ़े** ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर तौ़रात शरीफ़ उतरने से क़ब्ल नाज़िल हुए नीज़ चार[4] बड़ी किताबें नाज़िल हुईं :-

(1) ***तौ़रात शरीफ़*** ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर। (2) ***ज़बूर शरीफ़*** ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर। (3) ***इन्जीले मुक़द्दस*** ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर और (4) ***क़ुरआने मुबीन*** जनाबे रह़मतुल लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर। इन तमाम किताबों और जुम्ला स़ह़ाइफ़ का मतन और मज़ामीन क़ुरआने मजीद में और सारे क़ुरआने मजीद का मज़्मून सू-रए फ़ातिह़ा में, और सू-रए फ़ातिह़ा का सारा मज़्मून بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ में और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ का सारा मज़्मून इस के ह़र्फ़ **''ب''** में मौजूद है, और इस के मा'ना येह हैं कि بِیۡ کَانَ مَا کَانَ وَبِیۡ یَکُوۡنُ مَا یَکُوۡنُ। (या'नी जो कुछ भी है मुझ (या'नी अल्लाह) ही से है और जो कुछ होगा मुझ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) ही से होगा।)

(अल मजालिसुस सुन्निय्या, स़-फ़ह़ा:3)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्मे आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि ***अमीरुल***

मो 'मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अफ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नबियों के सुल्त़ान, सर–वरे ज़ी शान, सरदारे दो[2] जहान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ (की फ़ज़ीलत) के बारे में इस्तिफ़्सार किया, तो **अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन, अ़निल उ़यूब** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ के नामों में से एक नाम है और *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ के ***इस्मे आ 'ज़म*** और इस के दरमियान ऐसा ही कु़र्ब है जैसे आंख की सियाही (पुतली) और सफे़दी में।''

(अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जिल्द:1, स़–फ़ह़ा:738, ह़दीस़ नं:2071)

इस्मे आ'ज़म के साथ दुआ़ क़बूल होती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ''इस्मे आ'ज़म''की बहुत ब–र–कतें हैं, इस्मे आ'ज़म के साथ जो दुआ़ की जाए वोह क़बूल हो जाती है। सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद ह़ज़रत रईसुल मु–त–कल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, ''बा'ज़ उ़–लमा ने بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ को इस्मे आ'ज़म कहा। सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे़ पाक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है, ''**बिस्मिल्लाह** ज़बाने आ़रिफ़ (आ़रिफ़ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पहचानने वाला) से ऐसी है जैसे ***कलामे ख़ालिक़*** عَزَّوَجَلَّ से ***''कुन''***। (''कुन'' या'नी ''हो जा।'')

(अह़्सनुल विआ़अ, स़–फ़ह़ा :6)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने नेक और जाइज़ कामों में ब–र–कत दाखि़ल करने के लिये हमें पहले بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ज़रूर पढ़ लेना चाहिये। अगर आप बात बात पर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ने की आ़दत बनाने के आरज़ू मन्द हैं तो ***दा 'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म–दनी क़ाफ़िलों*** में आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म–दनी क़ाफ़िलों में दुआ़एं करने वालों के मसाइल ह़ल होने के ***मु–तअ़द्दद*** वाके़आ़त मिलते रहते हैं। चुनान्चे

टेढ़ी नाक

एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में पेश करने की सअ़्–य (सई) करता हूं, मेरी नाक की हड्डी टेढ़ी थी, आंखों और सर का दर्द भी पीछा नहीं छोड़ता था। मैं ने ***मदी–नतुल औलिया मुल्तान*** शरीफ़ में वाके़अ़ निश्तर मेडिकल अस्पताल में ऑपरेशन करवाने का इरादा किया था। इस से क़ब्ल आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म–दनी क़ाफ़िले*** के साथ पाक पत्तन शरीफ़ के सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासि़ल हुई। पहले ही से सुन रखा था कि ***म–दनी क़ाफ़िले*** में दुआ़एं क़बूल होती हैं लिहाज़ा मैं ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ की, ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के म–दनी क़ाफ़िले की ब–र–कत से मेरी नाक की हड्डी दुरुस्त फ़रमा दे।'' ***म–दनी क़ाफ़िले*** से वापसी के चन्द रोज़ बा'द जो नाक की हड्डी को बग़ौर देखा तो मेरी ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूंकि आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कु़र्ब में रह कर ***म–दनी क़ाफ़िले*** के स़दके़ मांगी हुई दुआ़ की क़बूलिय्यत खुली आंखों से नज़र आ रही थी और वोह यूं कि मेरी ***नाक की टेढ़ी हड्डी*** बिल्कुल दुरुस्त हो चुकी थी !

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
लेने को ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो
पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

टेढी हों हड्डियां
होंगी सीधी मियां
दर्द सारे मिटें
क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे शक मुसाफ़िरों की दुआ़ क़बूल है और फिर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मुसाफ़िर हो और मज़ीद आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब में दुआ़ मांगी जाए वोह क्यूं न क़बूल होगी। सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद रईसुल मु-त-कल्लिमीन ह़ज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ''अह़सनुल विआ़अ'' स़-फ़ह़ा **57** पर दुआ़ की क़बूलिय्यत के आदाब में से **23** वां ''अदब'' बयान करते हुए फ़रमाते हैं, औलियाओ उ़-लमाअ की मजालिस''। (या'नी किसी भी वली और सुन्नी आ़लिम की मह़फ़िल में या उन के क़ुर्ब में दुआ़ मांगेंगे तो क़बूल होगी।) इस ''अदब'' के ह़ाशिये में सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه औलियाओ उ़-लमाअ के बारे में फ़रमाते हैं, ''रब عَزَّوَجَلَّ स़ह़ीह़ ह़दीसे़ क़ुदसी में फ़रमाता हैं, ''هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ या'नी ''येह वोह लोग हैं कि इन के पास बैठने वाला बद बख़्त नहीं रहता।''

(मत़बूआ़ मक-त-बतुल मदीना, कराची)

यक ज़माना स़ोह़बते बा औलिया
बेहतर अज़ सद सालह त़ाअ़ते बे रिया

(या'नी औलियाए किराम की लम्ह़ा भर स़ोह़बत, सौ100 साल की ख़ालिस़ इबादत से बेहतर है।)

वली ख़्वाह ह़याते ज़ाहिरी के साथ मुत्तसि़फ़ हो या मज़ार शरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा हो उस का क़ुर्ब क़बूलिय्यते दुआ़ का सबब है। करोड़ों शाफ़ेइय्यों के पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, ''मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है, दो[2] रक्अ़त नमाज़ अदा कर के इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर दुआ़ मांगता हूं, *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ाजत पूरी कर देता है।''

(अल ख़ैरातुल ह़िसान, स़-फ़ह़ा:230, मदीना पब्लिशिंग, कराची)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की करामत

मा'लूम हुवा मज़ाराते औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰه تَعَالٰى पर भी दुआएं क़बूल होतीं, इल्तिजाएं सुनी जातीं और मुरादें बर आती हैं। चुनान्चे सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब 21 बरस के नौ जवान थे उस वक़्त का वाक़े़आ़ ख़ुद उन ही की ज़बानी मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे फ़रमाते हैं, ''सत्तरहवीं शरीफ़ माहे फ़ाख़िर रबीउ़ल आख़िर सिन 1293 हिजरी में कि फ़क़ीर को इक्कीसवां साल था। आ'ला ह़ज़रत मु-स़न्निफ़े अ़ल्लाम सय्यिदुनल वालिद क़ुद्दि-स सिर्रुहुल माजिद व ह़ज़रते मुह़िब्बुर रसूल जनाब मौलाना मौलवी मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर स़ाह़िब बदायूनी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَه के हमराहे रिकाब ह़ाज़िरे बारगाहे बेकस पनाहे ह़ुज़ूरे पुर नूर मह़बूबे इलाही निज़ामुल ह़क़्क़े वद्दीन ***सुल्त़ानुल औलिया*** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हुवा। ह़ुजरए मुक़द्दसा के चार त़रफ़ मजालिसे बात़िला लह्वो सरोद गर्म थीं। शोरो

ग़ोग़ा से कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देती। दोनों ह़ज़राते आ़लिय्यात अपने कुलूबे ***मुत्मइन्नह*** के साथ हाज़िरे मुवा–ज–हए अक्दस हो कर मश्गूल हुए। इस फ़क़ीरे बे तौक़ीर ने हुजूमे शोरो शर्र से ख़ातिर (या'नी दिल) में परेशानी पाई। दरवा–ज़ए मुतह्हरा पर खड़े हो कर ह़ज़रते ***सुल्तानुल औलिया*** رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ से अ़र्ज़ की कि ऐ मौला ! ग़ुलाम जिस के लिये ह़ाज़िर हुवा, येह आवाज़ें उस में ख़लल अन्दाज़ हैं। (लफ़्ज़ येही थे या इन के क़रीब, बहर ह़ाल मज़्मूने मा'रूज़ा येही था) येह अ़र्ज़ कर के **बिस्मिल्लाह** केह कर दाहिना पांव दरवा–ज़ए हुजरए त़ाहेरा में रखा बिऔ़ने रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ वोह सब आवाज़ें दफ़्अ़तन गुम थीं। मुझे गुमान हुवा कि येह लोग ख़ामोश हो रहे, पीछे फिर कर देखा तो वोही बाज़ार गर्म था। क़दम कि रखा था बाहर हटाया फिर आवाज़ों का वोही जोश पाया। फिर **बिस्मिल्लाह** केह कर दाहिना पांव अन्दर रखा। بِحَمۡدِ اللّٰہِ تَعَالٰی फिर वैसे ही कान ठंडे थे। अब मा'लूम हुवा कि येह मौला عَزَّوَجَلَّ का करम और ह़ज़रते ***सुल्तानुल औलिया*** رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ की करामत और इस बन्दए नाचीज़ पर रह़मतो मऊ़नत है। शुक्र बजा लाया और हाज़िरे मुवा–ज–हए आ़लिया हो कर मश्गूल रहा। कोई आवाज़ न सुनाई दी, जब बाहर आया फिर वोही ह़ाल था कि ख़ानक़ाहे अक्दस के बाहर क़ियाम गाह तक पहुंचना दुश्वार हुवा। फ़क़ीरने येह अपने ऊपर गुज़री हुई गुज़ारिश की, कि अव्वल तो वोह ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ थी और रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, وَاَمَّا بِنِعۡمَۃِ رَبِّکَ فَحَدِّثۡ (पारह:30, सू–रतुदुहा, आयत:11) अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को लोगों से ख़ूब बयान कर। म–अ़ हाज़ा इस में ग़ुलामाने औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के लिये बिशारत और मुन्किरों पर बला व ह़सरत है। इलाही عَزَّوَجَلَّ ! स़दक़ा अपने मह़बूबों رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن का हमें दुन्या व आख़िरत व क़ब्रो ह़श्र में अपने मह़बूबों عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان के ब–रकाते बे पायां से बहरा मन्द फ़रमा।

(अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद दुआ़अ स़–फ़ह़ा:60 ता 61)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ह़िकायत "बाईस[22] ख़्वाजा की चौखट देहली शरीफ़" की है। इस में ताजदारे देहली ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ की नुमायां करामत है। जब कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ की भी येह करामत ही है कि क़ब्रे अन्वर वाले कमरे में क़दम रखते थे तो उन्हें ढोल बाजों की आवाज़ें न सुनाई देती थीं। इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि बिलफ़र्ज़ अगर मज़ाराते औलिया पर जु–हलाअ ग़ैर शर–ई ह़–रकात कर रहे हों और उन को रोकने की क़ुदरत न हो तब भी अपने आप को अहलुल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के दरबारों की हाज़िरी से मह़रूम न करे। हां मगर येह वाजिब है कि उन ख़ुराफ़ात को दिल से बुरा जाने और उन में शामिल होने से बचे। बल्कि उन की त़रफ़ देखने से भी ख़ुद को बचाए।

पुर असरार बूढ़ा और काला जिन :

मस्जिदुन न–बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पुर बहार फ़ज़ाओं में एक बार अमीरुल मो'मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म और दीगर स़ह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में क़ुरआने पाक के फ़ज़ाइल पर मुज़ा–करह हो रहा था। इस दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मअ़–दी कर्ब

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ***"या अमीरल मो'मिनीन !*** आप ह़ज़रात بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के अ़जाइबात को क्यूं भूल रहे हैं, खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ बहुत ही बड़ा अ़जूबा है, ***अमीरुल मो'मिनीन*** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सीधे हो कर बैठ गए और फ़रमाने लगे, "ऐ अबू स़ौर ! (येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मअ़-दी कर्ब की कुन्यत थी) आप हमें कोई अ़जीबा सुनाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मअ़-दी कर्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, "ज़मानए जाहिलिय्यत था, क़ह़त़ साली के दौरान तलाशे रिज़्क़ की ख़ात़िर मैं एक जंगल से गुज़रा, दूर से एक ख़ैमे पर नज़र पड़ी, क़रीब ही एक घोड़ा और कुछ मवेशी भी नज़र आए। जब क़रीब पहुंचा तो वहां एक ह़सीनो जमील औ़रत भी मौजूद थी और ख़ैमे के स़ेह़न में एक बूढ़ा शख़्स़ टेक लगा कर बैठा हुवा था।" मैं ने उस को धमकाते हुए कहा, "जो कुछ तेरे पास है मेरे ह़वाले कर दे !" उसने कहा, "ऐ आदमी ! अगर तू मेहमानी चाहता है तो आ जा और अगर इम्दाद दरकार है तो हम तेरी मदद करेंगे।" मैंने कहा, "बातें मत बना, तेरे पास जो कुछ है मेरे ह़वाले कर दे !" तो वोह बूढ़ा कमज़ोरों की त़रह़ बमुश्किल तमाम खड़ा हुवा और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर मेरे क़रीब आया और निहायत फुरती से मुझ पर झपटा और मुझे ***पटख़*** कर मेरे सीने पर चढ़ बैठा और कहने लगा, "अब बोल ! मैं तुझे ज़ब्ह़ कर दूं या छोड़ दूं ?" मैं ने घबरा कर कहा, "छोड़ दो" वोह मेरे सीने से हट गया। मैंने दिल में अपने आप को मलामत की और कहा, "ऐ ***अ़म्र !*** तू अ़रब का मश्हूर शह सुवार है इस कमज़ोर बूढ़े से हार कर भागना ना मर्दी है। इस ज़िल्लत से तो मर जाना ही बेहतर है।" चुनान्चे मैंने फिर उस से कहा, "तेरे पास जो कुछ है मेरे ह़वाले कर दे !" येह सुनते ही بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर वोह ***पुर असरार बूढ़ा*** फिर मुझ पर ह़मला आवर हुवा और चश्मे ज़दन में मुझे गिरा कर सीने पर सुवार हो गया और केहने लगा, "बोल, तुझे ज़ब्ह़ कर दूं या छोड़ दूं ?" मैं ने कहा, "मुझे मुआ़फ़ कर दो।" उसने छोड़ दिया मगर फिर मैंने उस से सारे माल का मुत़ा-लबा कर दिया। उसने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर फिर पछाड़ कर मुझ पर क़ाबू पा लिया, मैंने कहा, "मुझे छोड़ दो !" उसने कहा, "अब तीसरी बार मैं ऐसे ही नहीं छोडूंगा" येह केह कर उसने पुकार कर कहा, "ऐ कनीज़ ! तेज़ धारदार तल्वार ले आ !" वोह ले आई, उसने मेरे सर के अगले हिस्से़ की चोटी काट डाली और मुझे छोड़ दिया। हम अ़-रबों में रवाज है कि जब किसी की चोटी के बाल काट दिये जाते हैं तो वोह दोबारा उगने से क़ब्ल अपने घरवालों को मुंह दिखाते हुए शरमाता है। (क्यूं कि चोटी कट जाना शिकस्त खु़र्दह की अ़लामत है।) चुनान्चे मैं एक साल तक उस ***पुर असरार बूढ़े*** की ख़िदमत का पाबन्द हो गया।

साल पूरा हो जाने के बा'द वोह मुझे एक वादी में ले गया। वहां उसने बुलन्द आवाज़ से بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी तो तमाम परिन्दे अपने घोंसलों से बाहर निकल कर उड़ गए, दोबारा इसी त़रह़ पढ़ने पर तमाम दरिन्दे अपनी अपनी पनाहगाहों से बाहर चले गए। फिर तीसरी बार ज़ोर से पढ़ने पर ***ऊनी लिबास में मल्बूस खजूर के तने जितना लम्बा ख़ौफ़नाक काला जिन्न*** ज़ाहिर हुवा, उस को देख कर मेरे बदन में झुरझुरी की लहर दौड़ गई। ***पुर असरार बूढ़े*** ने कहा, "ऐ अ़म्र ! हिम्मत रख, अगर येह मुझ पर ग़-लबा पा ले तो कहना, "अब की बार मेरा साथी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ की ब-र-कत से ग़ालिब होगा।" फिर वोह ***पुर असरार बूढ़ा और काला जिन्न*** दोनों गुथ्थम गुथ्था हो गए, ***पुर असरार बूढ़ा*** हार गया और ***काला जिन्न*** उस पर ग़ालिब आ गया। इस पर मैंने कहा, "अब की बार मेरा साथी लातो उ़ज़्ज़ा (या'नी काफ़िरों के इन दोनों बुतों) की वज्ह से जीत जाएगा। येह सुन कर ***पुर असरार बूढ़े*** ने मुझे ऐसा ज़ोरदार तमांचा रसीद किया कि मुझे दिन ***दिहाड़े तारे*** नज़र आ गए। और ऐसा मह़सूस हुवा कि अभी मेरा सर उखड़ कर धड़ से जुदा हो जाएगा। मैंने मा'ज़ेरत चाही और कहा कि दोबारा ऐसी ह़-र-कत नहीं करूंगा। चुनान्चे दोनों में फिर मुक़ाबला हुवा। ***पुर असरार बूढ़ा*** उस ***काले जिन्न*** को दबोचने में कामयाब हो गया तो मैं ने कहा, "मेरा साथी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ की ब-र-कत से ग़ालिब आ गया।" येह केहने की देर थी कि ***पुर असरार बूढ़े*** ने निहायत फुरती के साथ उस को ज़मीन में लकड़ी की त़रह़ गाड़ दिया। और फिर उस का पेट ***चीर*** कर उस में लालटेन की त़रह़ कोई चीज़ निकाली और कहा, "***ऐ अम्र !*** येह इस का धोका और कुफ़्र है।" मैं ने उस ***पुर असरार बूढ़े*** से इस्तिफ़्सार किया, आप का और इस काले जिन्न का क़िस्सा क्या है?" कहने लगा, "एक नस़रानी जिन्न मेरा दोस्त था, उस की क़ौम से हर साल एक जिन्न मेरे साथ जंग लड़ता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ की ब-र-कत से मुझे फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाता है।"

फिर हम आगे बढ़ गए। एक मक़ाम पर वोह ***पुर असरार बूढ़ा*** जब ग़ाफ़िल हो कर सो गया तो मौक़ा' पा कर मैंने उस की तल्वार छीन कर निहायत फुरती के साथ उस की पिंडलियों पर एक ज़ोरदार वार किया जिस से दोनों टांगें कट कर जिस्म से जुदा हो गईं, वोह चीख़ने लगा, "ओ ग़द्दार! तूने मुझे सख़्त धोका दिया है!" मगर मैं ने उस को संभलने का मौक़ा' ही न दिया, पै दर पै वार कर के उस के टुकड़े टुकड़े कर डाले! फिर जब मैं ख़ैमे में वापस आया तो वोह कनीज़ बोली, "***ऐ अम्र !*** जिन्न से मुक़ाबले का क्या बना? मैं ने कहा, "बूढ़े शैख़ को जिन्नातने क़त्ल कर दिया है।" वोह कहने लगी, "तू झूट बोल रहा है। ओ बे वफ़ा! उस के क़ातिल जिन्नात नहीं बल्कि तू ख़ुद है येह कह कर उसने बे क़रारो अश्कबार हो कर अ़-रबी में पांच[5] अश्आ़र पढ़े जिन का तर-जमा है :

"(1) ऐ मेरी आंख! तू उस बहादुर शह़ सुवार पर ख़ूब रो और पै दर पै आंसू बहा। (2) ऐ ***अम्र !*** तेरी ज़िन्दगी पर अफ़्सोस है, ह़ालां कि तेरे दोस्त को ज़िन्दगी ने मौत की त़रफ़ धकेल दिया है। (3) और (ऐ अम्र ! अपने दोस्त को अपने हाथों) क़त्ल करने के बा'द तू (अपने क़बीले) बनी ज़ुबैदह और कुफ़्फ़ार (या'नी ना शुक्रों) के गुरोह के सामने किस त़रह़ फख़् के साथ चल सक्ता है। (4) मुझे मेरी उ़म्र की क़सम! (ऐ अम्र) अगर तू लड़नें में वाक़ेई सच्चा होता (या'नी बिग़ैर धोका दिये मर्दों की त़रह़ उस से मुक़ाबला करता) तो उस की त़रफ़ से ज़रूर तेज़ धारदार तल्वार तुझ तक पहुंच कर रहती। (और तेरा काम तमाम कर देती)। (5) (ऐ उस बूढ़े को क़त्ल करनेवाले!) बादशाहे ह़क़ीक़ी (अल्लाह तआ़ला) तुझे बुरा और ज़िल्लतवाला बदला दे (तेरे जुर्म के बदले में) और तुझे भी उस की त़रफ़ से ज़िल्लतो रुस्वाईवाली ज़िन्दगी मिले (जिस त़रह़ कि तूने अपने दोस्त के साथ ज़िल्लतो रुस्वाईवाला सुलूक किया है)।"

मैं झल्ला कर क़त्ल करने के लिये उस पर चढ़ दौड़ा मगर वोह हैरत अंगेज़ तौर पर मेरी नज़रों से औझल हो गई गोया उस को ज़मीन ने निगल लिया।

(मुलख़्ख़स अज़ : लक़्तुल मर्जान फ़ी अह़कामिल लजान लिस सुयूती स-फ़हा : 141 ता 143)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ की किस क़दर हैरत अंगेज़ ब-रकात हैं। इन ब-र-कतों को लूटने की आदत बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र की सआदत हासिल कीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के मसाइल हैरत अंगेज़ तौर पर हल होंगे और *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ग़ैबी इम्दादें होंगी।

निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान

आशिक़ाने रसूल का एक म-दनी क़ाफ़िला कपड़वंज (गुजरात-अल हिन्द) पहुंचा ***"अलाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत"*** के दौरान एक शराबी से मुडभेड़ हो गई, आशिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस पर खूब ***इन्फ़िरादी कोशिश*** की, जब उसने सब्ज़ सब्ज़ इमामेवालों की शफ़्क़तें और प्यार देखा तो हाथों हाथ उनके साथ चल पड़ा, आशिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत की ब-र-कत से गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ा ली, सब्ज़ इमामे का ताज भी सर पर सज गया, म-दनी लिबास का भी ज़ेहन बन गया, छे[6] दिन तक ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की सआदत हासिल कर सका, मज़ीद 92 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की मगर ज़ादे क़ाफ़िला या'नी सफ़र के अख़राजात न थे। एक दिन एक रिश्तेदार से मुलाक़ात हो गई उसने जब मुआशरे के बदनाम और शराबी को दाढ़ी, सब्ज़ सब्ज़ इमामे और म-दनी लिबास में देखा तो देखता ही रह गया, जब उस को बताया गया कि येह सब म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत है और اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अस्बाब हो जाने की सूरत में मज़ीद 92 दिन के सफ़र का ***अज़्मे मु-सम्मम*** है। तो उस रिश्तेदारने कहा, "पैसों की फ़िक्र मत करो। 92 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का ख़र्च मुझ से क़बूल कर लो और साथ में 92 दिन तक घर के अख़राजात भी अपने ज़िम्मे लेता हूं," यूं वोह "दीवाना" 92 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया।

ग़ैबी इम्दाद हो, घर भी आबाद हो
रिज़्क़ के दर खुलें, ब-र-कतें भी मिलें
चल के ख़ुद देख लें, क़ाफ़िले में चलो
लुत्फ़े हक़्क़ جَلَّ देख लें, क़ाफ़िले में चलो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांच[5] म-दनी फूल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का इर्शादे सआदत बुन्याद है, "पांच[5] आदतें ऐसी हैं कि कोई उन्हें इख़्तियार कर ले तो दुन्या-व-आख़िरत में सआदत

मन्द हो जाए। (1) वक़्तन फ़-वक़्तन لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم केहता रहे (2) जब किसी मुसीबत में मुब्तला हो (म-स्-लन : बीमार हो या नुक़्सान हो जाए या परेशानी की ख़बर सुने) तो اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيۡهِ رٰجِعُوۡنَ और وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِىِّ الْعَظِيْمِ पढ़े। (3) जब भी ने'मत मिले तो शुक्राने में اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ कहे। (4) जब किसी (जाइज़) काम का आग़ाज़ करे तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़े और (5) जब गुनाह कर बैठे तो यूं कहे, اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْهِ (या'नी मैं अ़ज़्मतवाले ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करते हुए उस की त़रफ़ तौबा करता हूं।)

(अल मु-नब्बिहात लिल अ़स्क़लानी स़-फ़ह़ा:58)

जैसा दरवाज़ा वैसी भीक :

मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "अल्लाह तआ़ला ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ में अपने इस्मे ज़ात के साथ रह़मत की दो[2] सिफ़ात का बयान फ़रमाया है क्यूं कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नामे मुबारक में हैबत थी और ***रह़मान*** और ***रह़ीम*** में रह़मत। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का नाम सुन कर नेक बन्दों को भी कुछ अ़र्ज़ करने की जुर्अत न होती थी लेकिन ***रह़मान*** और रह़ीम सुन कर हर मुजरिम और ख़त़ाकार को भी अ़र्ज़ करने की हिम्मत पड़ी और ह़क़ीक़त भी येही है, उस के जलाल के सामने कौन दम मार सक्ता है और ज़ुहूरे जमाल के वक़्त हर एक नाज़ कर सक्ता है। "**तफ़्सीरे कबीर शरीफ़**" में इस के मा तह़त ***एक अ़जीब ह़िकायत*** लिखी है कि एक साइल एक बहुत बड़े मालदार के अ़ज़ीमुश्शान दरवाज़े पर आया और कुछ सुवाल किया, मकान में से मा'मूली सी चीज़ आई। फ़क़ीरने ले ली और चला गया। दूसरे दिन एक बहुत मज़बूत़ फावड़ा ले कर आया और दरवाज़ा खोदने लगा, मालिकने पूछा, "येह क्या करता है?" फ़क़ीरने कहा, "या तो अ़त़ा को दरवाज़े के लाइक़ कर या दरवाज़ा अ़त़ा के लाइक़ कर।" या'नी जब दरवाज़ा इतना बड़ा बनाया है तो ज़रूरी है कि बड़े दरवाज़े से बड़ी ही भीक मिला करे क्यूं कि अ़त़ा दरवाज़े और नाम के लाइक़ ही होनी चाहिये। हम फ़क़ीर गुनहगार बन्दे भी अ़र्ज़ करते हैं, "***ऐ मौला*** عَزَّوَجَلَّ हम को हमारे लाइक़ न दे बल्कि अपने जूदो सख़ा के लाइक़ दे। बेशक हम गुनहगार हैं लेकिन तेरी गफ़्फ़ारी हमारी गुनहगारी से वसीअ़ है।"

(तफ़्सीरे नईमी पहला पारह स़-फ़ह़ा : 40)

गुन्हे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगरचे लाख से हैं सवा
मगर ऐ अफ़ुव्व عَزَّوَجَلَّ *तेरे अ़फ़्व का न ह़िसाब है न शुमार है।*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यक़ीनन ***रह़मान*** और ***रह़ीम*** है, जो उस की रह़मत पर नज़र रखे और उस के साथ अपना हुस्ने ज़न क़ाइम करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में उस का बेड़ा पार है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उस को कभी भी मह़रूमी नहीं हो सक्ती। चुनान्चे ***तफ़्सीरे नईमी*** पारह अव्वल स़-फ़ह़ा 38 पर है।

रह़्मत भरी ह़िकायत

दो[2] भाई थे, एक परहेज़गार दूसरा बदकार। जब बदकार मरने लगा तो परहेज़गार भाईने कहा, ''देखा तुझे मैंने बहुत समझाया मगर तू अपने गुनाहों से बाज़ न आया, अब बोल तेरा क्या ह़ाल होगा ? उसने जवाब दिया कि अगर क़ियामत के रोज़ मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेरा फ़ैस़ला ***मेरी मां*** के सिपुर्द कर दे तो बताओ कि मां मुझे कहां भेजेगी दोज़ख़ में या जन्नत में ? परहेज़गार भाईने कहा कि मां तो वाक़ेई जन्नत में ही भेजेगी। गुनहगारने जवाब दिया। ***''मेरा रब*** عَزَّوَجَلَّ ***''मेरी मां से भी ज़ियादा महरबान है।''*** येह कहा और इन्तिक़ाल हो गया। बड़े भाईने ख़्वाब में उसे निहायत ख़ुशह़ाल देखा, मग़्फ़िरत की वजह पूछी, कहा, ''मरते वक़्त की उसी बातने मेरे तमाम गुनाह बख़्शवा दिये।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़्मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

हम गुनहगारों पे तेरी महरबानी चाहिये
सब गुनह धुल जाएंगे रह़्मत का पानी चाहिये

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़्मत बहुत बड़ी है, ज़बान से निक्ला हुवा ''एक लफ़्ज़'' मग़्फ़िरत का सबब भी हो सक्ता है और हलाकत का भी। जैसा कि अभी ह़िकायत में आपने सुना कि एक जुमले ने उस गुनहगार का बेड़ा पार करवा दिया। इसी त़रह़ हलाकत की मिस़ाल येह है कि अगर कोई ज़बान से स़रीह़ कुफ़्र बक दे और तौबा किये बिग़ैर मर जाए तो हमेशा के लिये जहन्नम उस का मुक़द्दर है। हलाकत से ख़ुद को बचाने और मग़्फ़िरत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है। अगर सफ़र की सच्ची निय्यत कर ली जाए और किसी वजह से सफ़र नस़ीब न हो तब भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार है। ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की निय्यत करने वाले एक ख़ुश नस़ीब की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनिये और झूमिये। चुनान्चे

बाग़ का झूला :

ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिंध) के एक मह़ल्ले में ***अ़लाक़ाई दौरा*** बराए नेकी की दा'वत से ***मु-त-अस़्स़िर*** हो कर एक मॉडर्न नौ जवान मस्जिद में आ गया। बयान में म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाई गई तो उस ने ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र करने के लिये नाम लिखवा दिया। अभी **म-दनी क़ाफ़िले** में उस की रवानगी में कुछ दिन बाक़ी थे कि क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से उस का इन्तिक़ाल हो गया। किसी अहले ख़ाना ने मर्ह़ूम को ख़्वाब में इस ह़ालत में देखा कि वोह एक हरियाले बाग़में हश्शाश बश्शाश झूला झूल रहा है। पूछा, ''यहां कैसे आ गए ?'' जवाब दिया, ''**दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले के साथ आया हूं, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का बड़ा करम हुवा है, मेरी मां से केह देना कि वोह मेरा ग़म न करे मैं यहां बहुत चैन से हूं।**''

खुल्द में होगा हमारा दाख़िला इस शान से

عَزَّوَجَلَّ وصلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم
या रसूलल्लाह ! का ना'रा लगाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ? ख़ुश बख़्त नौ जवान ने म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ***निय्यत*** ही की थी, और सफ़र मुक़द्दर में न था मगर उस पर करम बालाए करम हो गया।

वस्वसा : येह कैसे हो सक्ता है कि एक मॉडर्न नौ जवान सिर्फ़ म-दनी क़ाफ़िले की निय्यत के सबब ही रह्मत से हम किनार हो जाए और उस के अगर कोई गुनाह हैं तो उस पर कोई गरिफ़्त न हो ?

इलाजे वस्वसा : येह सब ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत पर है कि अगर चाहे तो किसी एक गुनाह पर गरिफ़्त फ़रमा ले और चाहे तो किसी एक नेकी पर नवाज़ दे। या मह्ज़ अपने फ़ज़्लो करम से यूं ही नवाज़ दे। चुनान्चे पारह 24 सू-रतुज़ ज़ुमुर की आयत नं 53 में ख़ुदाए रह्मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है,



तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ, ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह्मत से ना उम्मीद न हो, बे शक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब गुनाह बख़्श देता है। बे शक वोही बख़्शने वाला महरबान है।

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस़ में येह मज़्मून मौजूद है कि

100 अफ़राद का क़ातिल बख़्शा गया :

बनी इसराईल का एक शख़्स़ जिसने **99** क़त्ल किये थे एक राहिब[1] के पास पहुंचा और पूछा, "क्या मेरे जैसे मुजरिम के लिये कोई तौबा की गुन्जाइश है ?" राहिब ने उसे मायूस कर दिया तो उस ने राहिब को भी क़त्ल कर डाला। मगर फिर नादिम हो कर तौबा का त़रीक़ा लोगों से पूछता फिरा। आख़िर किसी ने कहा, "फ़ुलां क़स्बे में चले जाओ।" (वहां ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का एक वली है वोह तुम्हारी रहनुमाई करेगा।) चुनान्चे वोह उस की त़रफ़ चल दिया मगर रास्ते में बीमार हो गया। जब **क़रीबुल मर्ग** हुवा तो उस ने अपना सीना उस क़स्बे की त़रफ़ कर दिया और फ़ौत हो गया। अब उस को ले जाने के बारे में रह्मतो अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों में इख़्तिलाफ़ हुवा। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने मय्यित और कस्बे के दरमियान वाले हिस्सए ज़मीन को सिमट कर मय्यित के क़रीब हो जाने का हुक्म फ़रमाया। और जिधर से वोह चला था और जहां पहुंच कर फ़ौत हुवा था उस दरमियानी फ़ासिलों को मज़ीद त़वील हो जाने का हुक्म फ़रमाया। फिर पैमाइश का हुक्म फ़रमाया तो वोह जिस क़स्बे की त़रफ़ जा रहा था उस से एक बालिश्त क़रीब

पाया गया और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।

(सह़ीह़ बुख़ारी, ह़दीस़ नं:3470, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:466)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की बारगाह में ह़ाज़िरी और उन की बस्ती की ता'ज़ीम करते हुए उस को अपनी रूह़ का क़िब्ला बनाना इन्तिहाई पसन्दीदह अ़मल है, बस ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर झूम जाइये जो परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ **100** आदमियों के क़ातिल को मह़ज़ अपनी रह़मत से बख़्श दे वोह अगर सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ***म-दनी क़ाफ़िले*** की निय्यत करने वाले किसी ख़ुश नस़ीब नौ जवान पर महरबान हो जाए तो येह भी उस की रह़मत ही रह़मत है और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को हर शै पर क़ुदरत ह़ासिल है। मेरा म-दनी मश्वरा है कि ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा। ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल की ब-र-कतों के क्या कहने ! यक़ीनन आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की स़ोह़बत रंग ला कर रहती है। ज़िन्दगी अपनी जगह पर, मगर बा'ज़ अमवात भी क़ाबिले रश्क हुवा करती हैं, ऐसी ही एक क़ाबिले रश्क मौत का तज़्किरा सुनिये और रश्क कीजिये :

क़ाबिले रश्क मौत

मुह़म्मद वसीम अ़त्तारी (बाबुल मदीना नोर्थ कराची) सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ के पास तशरीफ़ लाते थे, बेचारे के हाथ में केन्सर हो गया और डॉक्टरों ने हाथ काट डाला। उन के अ़लाक़े के एक इस्लामी भाईने बताया, वसीम भाई शिद्दते दर्द के सबब सख़्त अज़िय्यत में हैं। मैं अस्पताल में इयादत के लिये ह़ाज़िर हुवा और त-सल्ली देते हुए कहा, "दीवाने ! बायां हाथ कट गया इस का ग़म मत करो। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दायां हाथ तो मह़फ़ूज़ है और सब से बड़ी सआ़दत येह कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान भी सलामत है। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैंने उन्हें काफ़ी स़ाबिर पाया, सिर्फ़ मुस्कुराते रहे। यहां तक कि बिस्तर से उठ कर मुझे बाहर तक पहुंचाने आए। रफ़्ता रफ़्ता हाथ की तक्लीफ़ ख़त्म हो गई मगर बेचारे का दूसरा इम्तिह़ान शुरूअ़ हो गया और वोह येह कि सीने में पानी भर गया, दर्दो कर्ब में दिन कटने लगे। आख़िर एक दिन तक्लीफ़ बहुत बढ़ गई। ***ज़िक्रुल्लाह*** शुरू कर दिया। सारा दिन ***अल्लाह, अल्लाह*** की स़दाओं से कमरा गूंजता रहा, त़बीअ़त बहुत ज़ियादा तश्वीश्नाक हो गई थी, डॉक्टर के पास ले जाने की कोशिश की गई मगर इन्कार कर दिया, दादी जानने फ़र्ते शफ़्क़त से गोद में ले लिया, ज़बान पर ***कलिमए त़य्यिबा*** لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जारी हुवा और 22 सालह मुह़म्मद वसीम अ़त्तारी की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से पर्वाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ؕ

जब मर्ह़ूम को ग़ुसुल के लिये ले जाने लगे तो अचानक चादर चेहरे से हट गई, मर्ह़ूम का चेहरा गुलाब के फूल की त़रह़ खिला हुवा था, ग़ुसुल के बा'द चेहरे की बहार में मज़ीद निखार आ गया। तदफ़ीन के बा'द आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ना'तें पढ़ रहे थे, क़ब्र से ख़ुश्बुओं की ऐसी लपटें आने लगीं के मशामे जां मुअ़त्त़र हो गए मगर जिसने सूंघी उसने सूंघी। घर के किसी

फ़र्दने इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में मर्हूम वसीम अ़त्तारी को फूलों से सजे हुए कमरे में देखा, पूछा, ''कहां रहते हो ?'' हाथ से एक कमरे की त़रफ़ इशारा करते हुए कहा, ''येह मेरा मकान है। यहां मैं बहुत खुश हूं।''फिर एक आरास्ता बिस्तर पर लेट गए। मर्हूम के वालिद स़ाहि़बने ख़्वाब में अपने आप को वसीम अ़त्तारी की ***क़ब्र*** के पास पाया, यकायक ***क़ब्र*** शक़ हुई और मर्हूम सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए हुए सफे़द कफ़न में मल्बूस बाहर निकल आए ! कुछ बातचीत की और फिर ***क़ब्र*** में दाख़िल हो गए और ***क़ब्र*** दोबारा बन्द हो गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी, मर्हूम की और उम्मते मह़बूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमा और हम सब को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल में इस्तिक़ामत दे और मरते वक़्त ज़िक्रो दुरूद और कलिमए त़य्यिबा नस़ीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

आ़सी हूं, मग़्फ़िरत की दुआ़एं हज़ार दो
ना'ते नबी सुना के लह़द में उतार दो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"बिस्मिल्लाह कीजिये" कहना मम्नूअ़ है

बा'ज़ लोग इस त़रह़ कह देते हैं, ''**बिस्मिल्लाह** कीजिये !'' ''**आओ जी बिस्मिल्लाह**'', ''मैं ने **बिस्मिल्लाह कर डाली**।'' ताजिर ह़ज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उ़मूमन ''बोनी'' कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग उस को भी ''**बिस्मिल्लाह**''कहते हैं म-स़-लन : ''मेरी तो आज अभी तक '' **बिस्मिल्लाह** ही नहीं हुई !'' जिन जुम्लों की मिस़ालें पेश की गईं येह सब ग़लत़ अन्दाज़ हैं। इसी त़रह़ खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्स़र खानेवाला उस से कहता है,''आइये आप भी खा लीजिये।''आ़म तौ़र पर जवाब मिलता है, ''**बिस्मिल्लाह**''या इस त़रह़ केहते हैं, ''**बिस्मिल्लाह** कीजिये।'' बहारे शरीअ़त हिस़्स़ा :16,स़-फ़ह़ा : 32 पर है कि,''इस मौक़े' पर इस त़रह़ **बिस्मिल्लाह** केहने को उ़-लमा ने बहुत ***सख़्त मम्नूअ़*** क़रार दिया है।'' हां ! येह कह सक्ते हैं,''**बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खा लीजिये।'' बल्कि ऐसे मौक़े' पर दुआ़इया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, म-स़-लन : بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ या'नी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें और तुम्हें ब-र-कत दे। या अपनी मादरी ज़बान में केह दीजिये, ''***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत दे।''

"बिस्मिल्लाह" कहना कब कुफ़्र है ?

ह़रामो ना जाइज़ काम से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ हरगिज़, हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए कि ''**फ़तावा आ़लमगीरी**'' में है, ***''शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त, या जुवा खेलते वक़्त ''बिस्मिल्लाह'' कहना कुफ़्र है।***

(फ़तावा आ़लमगीरी जिल्द : 2, स़-फ़ह़ा : 273)

फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा

क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गंजीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! जब तुम ***वुज़ू*** करो तो بِسْمِ اللہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہ कह लिया करो जब तक तुम्हारा ***वुज़ू*** बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे फ़िरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे।"

(त़-बरानी सग़ीर, जिल्द : 1, स़-फ़हा : 73, हदीस नंबर : 186)

हर हर क़दम पर एक नेकी

जो शख़्स किसी जानवर पर सुवार होते वक़्त **बिस्मिल्लाह** और اَلْحَمْدُلِلّٰہ पढ़ ले तो उस जानवर के हर ***क़दम*** पर उस सुवार के हक़ में एक नेकी लिखी जाएगी।

(तफ़्सीरे नईमी जिल्द अव्वल स़-फ़हा :42)

किश्ती में नेकियां ही नेकियां

जो शख़्स ***किश्ती*** में सुवार होते वक़्त **बिस्मिल्लाह** और اَلْحَمْدُلِلّٰہ पढ़ ले, जब तक वोह उस में सुवार रहेगा उस के वासिते नेकियां लिखी जाती रहेंगी।

(तफ़्सीरे नईमी, जिल्द : 1, स़-फ़हा : 82)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के फ़ज़ाइल इस क़दर ज़ियादा हैं कि पढ़ या सुन कर जी चाहता है कि हर वक़्त "بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" ही पढ़ते रहें, मगर येह सआदत सिर्फ़ रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ही की इनायत से मिल सक्ती है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माहौल में रह कर एक दूसरे पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** के ज़रीए भी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का करम हो जाए तो بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ते रहने की आदत बन सक्ती है। यक़ीनन दीन की तब्लीग़ो इशाअ़त में ***इन्फ़िरादी कोशिश*** को बड़ा अ़मल दख़ल है। **हत्ता कि हमारे मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **नीज़ सब के सब अंबियाअ** عَلَیْہِمُ السَّلَام **ने नेकी की दा'वत के काम में इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाई है।** اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी के मुबल्लेग़ीन भी इन्फ़िरादी कोशिश करने वाली सुन्नत पर अ़मल कर के लोगों को दिलों में इश्क़े रसूल** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की शम्अ़ रौशन करने में मश्ग़ूल हैं।** उन की इन्फ़िरादी कोशिशों की ब-र-कतों भरी तहरीरें कभी कभी मुझे नज़र नवाज़ हो जाती हैं। चुनान्चे

ड्राइवर पर इन्फ़िरादी कोशिश

एक आशिक़े रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे तहरीर दी थी, उस का ख़ुलासा अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं, "दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़ ***फ़ैज़ाने मदीना*** (बाबुल मदीना कराची) में जुमे'रात को होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से भर कर आई हुई मख़्सूस बसें वापसी के इन्तिज़ार में जहां खड़ी होती हैं, वहां से गुज़रा तो क्या देखता हूं कि एक ख़ाली बस में गाने बज रहे हैं और ड्राइवर बैठ कर चरस के कश लगा रहा है, मैं ने जा कर ड्राइवर से ***महब्बत*** भरे अन्दाज़ में मुलाक़ात की, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुलाक़ात की ब-रकात फ़ौरन ज़ाहिर हुईं और उसने ख़ुद बख़ुद गाने बन्द कर दिये और चरस वाली सिगरेट भी बुझा दी। मैं ने मुस्कुरा कर

सुन्नतों भरे बयान की केसेट ***क़ब्र की पहली रात*** उस को पेश की, उस ने उसी वक़्त टेप रेकॉर्डर में लगा दी, मैं भी साथ ही बैठ कर सुनने लगा कि दूसरों को बयान सुनाने का मुफ़ीद त़रीक़ा येही है कि खुद भी साथ में सुने। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस ने बहुत अच्छा असर लिया, घबरा कर गुनाहों से तौबा की और बस से निकल कर मेरे साथ इज्तिमाअ़ में आ कर बैठ गया।"

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान की केसेट तोह्फ़तन दीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! ***इन्फ़िरादी कोशिश*** से कितना फ़ाइदा होता है! लिहाज़ा हर मुसल्मान पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करना और उन को नमाज़ों की दा'वत देना चाहिये। इज्तिमाअ़ वग़ैरा के लिये अगर बस या वेगन में आएं तो ड्राइवर व कन्डक्टर को भी शिर्कत की दरख़्वास्त करनी चाहिये। अगर बिलफ़र्ज़ कोई आने के लिये तैयार नहीं होता तो सुनने की दरख़्वास्त कर के उस को बयान की केसेट पेश कर दी जाए, और वोह सुन ले तो वापस ले कर दूसरी दी जाए। और जहां तक मुम्किन हो बयान की **केसेटें** दे कर बदले में उन से गानों की **केसेटें** ले कर डब करवा कर मज़ीद आगे बढ़ा देनी चाहिएं, इस त़रह़ कुछ न कुछ गुनाहों भरी **केसेटों** का اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा होगा। ***इन्फ़िरादी कोशिश*** और समझाना तर्क नहीं करना चाहियें। अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन जल्ल जलालुहू पारह 27 सू-रतुज़् ज़ारियात की आयत नंबर 55 में इर्शाद फ़रमाता है,

وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ○

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ के समझाना मुसल्मानों को फ़ाइदा देता है।

कोई माने या न माने अपना स़वाब खरा

अगर हमारी बात कोई नहीं मानता फिर भी اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें ***नेकी की दा'वत*** देने का स़वाब मिल जाएगा। चुनान्चे ***हुज्जतुल इस्लाम*** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ***"मुका-श-फ़तुल कुलूब"*** में फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ किया, "ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके, उस की क्या जज़ा है ?" फ़रमाया, "मैं उस की हर बात पर एक साल की इ़बादत का स़वाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।"

(मुका-श-फ़तुल कुलूब, स़-फ़ह़ा : 48)

रूए ज़मीन की सल्तनत से बेहतर

अगर आप की ***इन्फ़िरादी कोशिश*** से कोई नमाज़ों और सुन्नतों की राह पर चल पड़ा तो आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। जैसा कि **रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मोअ़ज़्ज़म है, "अल्लाह तआ़ला एक शख़्स़ को तेरे ज़रीए़ से हिदायत फ़रमा दे तो येह तेरे लिये तमाम रूए ज़मीन की सल्त़नत मिलने से बेहतर है।"

(जामेउस स़ग़ीर, स़-फ़ह़ा :444, ह़दीस़ नं : 7219)

ज़ह्‌रे क़ातिल बे असर हो गया

एक मर्तबा सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद से कुछ मजूसियों ने अ़र्ज़ किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमें कोई ऐसी निशानी बताइये जिस से हम पर इस्लाम की ***ह़क़्क़ानिय्यत*** वाज़ेह़ हो । चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ***ज़हरे क़ातिल*** मंगवाया और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर उसे खा लिया । **बिस्मिल्लाह** की ब-र-कत से उस ***ज़हरे क़ातिल*** ने आप पर कोई असर न किया । येह मन्ज़र देख कर मजूसी (आतश परस्त) बे साख़्ता पुकार उठे, ***दीने इस्लाम ह़क़ है ।***

(तफ़्सीरे कबीर जिल्द अव्वल स़-फ़ह़ा : 155)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि खाने पीने से क़ब्ल بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लेने से जहां आख़ेरत का अ़ज़ीम स़वाब है वहीं दुन्या में भी इस का येह फ़ाइदा है कि अगर खाने या पीने की चीज़ में कोई मुज़िर (नक़्स़ान देह) अजज़ा शामिल हों भी तो वोह اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नुक़्स़ान नहीं करेंगे । ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ***ज़हर असर न करने*** का येह वाक़ेआ़ दीगर कुतुब में कुछ अल्फ़ाज़ के फ़र्क़ के साथ भी मिलता है या येह भी हो सक्ता है कि एक से ज़ियादा बार येह करामत ज़ाहिर हुई हो । चुनान्चे

ख़ौफ़नाक ज़हर

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मक़ामे **''ह़ीरह''** में जब अपने लश्कर के साथ पड़ाव किया तो लोगों ने अ़र्ज़ किया, या सय्यिदी ! हमें अन्देशा है कि कहीं येह अ़-जमी लोग आप को ***ज़हर*** न दे दें लिहाज़ा मोह़तात रहियेगा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''लाओ मैं देख लूं कि ***अ़-जमिय्यों*** का ***ज़हर*** कैसा होता है ?'' लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **''बिस्मिल्लाह''** पढ़ कर खा लिया । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बाल बराबर भी ज़रर (या'नी नुक़्स़ान) न पहुंचा और **''कल्बी''** की रिवायत में येह है कि एक ***ईसाई पादरी*** जिस का नाम **अ़ब्दुल मसीह़** था एक ऐसा ***ज़हर*** ले कर आया कि उस के खा लेने से एक घन्टे के बाद मौत यक़ीनी होती है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से ***ज़हर*** मांग कर उस के सामने ही بِسۡمِ اللّٰہِ وَبِاللّٰہِ رَبِّ الۡاَرۡضِ وَ السَّمَآءِ بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِہٖ دَاءٌ पढ़ा और ज़हर खा गए । येह मन्ज़र देख कर **अ़ब्दुल मसीह़** ने अपनी क़ौम से कहा, ''ऐ मेरी क़ौम ! इन्तिहाई ह़ैरत नाक बात है कि येह इतना ***ख़त़रनाक ज़हर*** खा कर भी ज़िन्दा हैं, अब बेहतर येही है कि इन से सुल्ह़ कर ली जाए, वरना इन की फ़त्ह़ यक़ीनी है ।'' येह वाक़ेआ़ **अमीरुल मो'मिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सि़द्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा ।

(मुलख़्ख़स़ अज़ हुज्जतुल्लाहि अ़-लल आ़-लमीन जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:617)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कितना ख़ास् करम था और यक़ीनन बि-इज़्निल्लाह येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ***करामत*** थी। करामत की बे शुमार अक़्साम हैं जिन में से एक क़िस्म "***मोहलिकात*** (या'नी हलाक कर देने वाली अश्या) का अस़र न करना" भी है। औलियाउल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर भी ज़हर वग़ैरा अस़र न करने के वाक़ेआ़त मन्क़ूल हैं चुनान्चे

आग थी या बाग़

एक बद अ़क़ीदा बादशाह ने एक ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ब-मअ़ रु-फ़क़ाअ गरिफ़्तार कर लिया और कहा कि करामत दिखाओ वरना आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को साथियों समते शहीद कर दिया जाएगा। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ऊंट की मेंगनियों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि उन को उठा लाओ और देखो कि वोह क्या हैं? जब लोगों ने उन को उठा कर देखा तो वोह ***ख़ालिस़ सोने के टुकड़े*** थे। फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक ख़ाली प्याले को उठा कर घुमाया और औंधा कर के बादशाह को दिया तो वोह पानी से भरा हुवा था। और औंधा होने के बा वुजूद उस में से एक क़त़रा भी पानी नहीं गिरा। येह दो[2] करामतें देख कर ***बद अ़क़ीदा बादशाह*** केहने लगा कि येह सब नज़र बन्दी और जादू है। फिर बादशाह ने **आग** जलाने का हुक्म दिया। जब **आग** के शो'ले बुलन्द हुए तो वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और उन के रु-फ़क़ाअ आग में कूद पड़े। साथ में छोटे से शहज़ादे को भी लेते गए, बादशाह अपने बच्चे को आग में गिरते देख कर उस के फ़िराक़ में बे चैन हो गया, कुछ देर के बा'द नन्हे शहज़ादे को इस हाल में बादशाह की गोद में डाल दिया गया कि उस के एक हाथ में ***सेब*** और दूसरे हाथ में ***अनार*** था। बादाशाह ने पूछा, "बेटा! तुम कहां चले गए थे?" तो उस ने कहा, "मैं एक बाग़ में था," येह देख कर ज़ालिम व ***बद अ़क़ीदा बादशाह*** के दरबारी कहने लगे इस काम की कोई ह़क़ीक़त नहीं (येह जादू है) बादशाह ने कहा, "अगर तुम येह ज़हर का प्याला पी लो तो मैं तुम्हें सच्चा मान लूंगा। उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बार बार ***ज़हर*** का प्याला पिया, हर मर्तबा ***ज़हर*** के अस़र से उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़क़त कपड़े फटते रहे मगर उन की ज़ात पर ***ज़हर*** का कोई अस़र नहीं हुवा।

(मुलख़्ख़स़ अज़ हुज्जतुल्लाहि अलल आ़-लमीन, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:611)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

फ़ानूस बन के जिस की ह़िफ़ाज़त "हवा" करे
वोह शम्अ़ क्या बुझे जिसे रौशन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ करे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे शक औलियाउल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की तो बहुत बड़ी शान है और उन की करामात के भी क्या केहने! औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की ग़ुलामी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लम गीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** का तु़र्रए इम्तियाज़ है, इस से वाबस्तगान पर भी रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ के ऐसे ऐसे इन्आ़मात होते हैं कि अ़क़्लें हैरान रह जाती हैं चुनान्चे

हैरत अंगेज़ हादिसा

बरोज़ इतवार 26 ***रबीउन्नूर शरीफ़*** सिन 1420 हिजरी बु-मताबिक़ 11/7/1999 ब-वक़्त दोपहर पंजाब के मश्हूर शहर ***लाला मूसा*** की एक मसरूफ़ शाहराह पर किसी ट्रेलर ने ***दा'वते इस्लामी*** के एक ज़िम्मेदार मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ البَارِی (महल्ला साकिन इस्लाम पूरा लाला मूसा) को बूरी तरह कुचल दिया। यहां तक कि उन के पेट की जानिब से ऊपर और नीचे का हिस्सा अलग अलग हो गया। मगर हैरत की बात येह थी कि फिर भी वोह ज़िन्दा थे, और हैरत बालाए हैरत येह कि हवास इतने बहाल थे कि बुलन्द आवाज़ से اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़े जा रहे थे। लाला मूसा के अस्पताल में डॉक्टरों के जवाब दे देने पर उन्हें शहर **गुजरात** के अज़ीज़ भट्टी अस्पताल ले जाया गया। उन्हें अस्पताल ले जाने वाले इस्लामी भाई का ब-क़सम बयान है, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ البَارِی की ज़बान पर पूरे रास्ते इसी तरह बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और ***कलि-मए तय्यिबह*** का विर्द जारी था। येह म-दनी मन्ज़र देख कर डॉक्टर्ज़ भी हैरानो शश्दर थे कि येह ज़िन्दा किस तरह हैं! और हवास इतने बहाल कि बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और ***कलि-मए तय्यिबह*** पढ़े जा रहे हैं! उन का केहना था कि हम ने अपनी ज़िन्दगी में ऐसा बा हौसला और बा कमाल मर्द पहली मर्तबा ही देखा है। कुछ देर बा'द वोह खुश नसीब आशिक़े रसूल मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ البَارِی ने बारगाहे महबूबे बारी عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बसद बे क़रारी इस तरह इस्तिग़ासा किया,

या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***आ भी जाइये !***
या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***मेरी मदद फ़रमाइये !***
या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये !***

इस के बा'द ब-अवाज़े बुलन्द لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ते हुए जामे शहादत नोश कर गए। जी हां! जो मुसल्मान हादिसे में फ़ौत हो वोह शहीद है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

वासिता प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद के वोह फ़ाजिर गया

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह वाक़िआ उन दिनों मुख़्तलिफ़ अख़्बारात ने शाए' किया था। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शहीदे दा'वते इस्लामी मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ البَارِی दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार मुबल्लिग़ थे और हादिसे के एक रोज़ क़ब्ल ही आशिक़ाने रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले के साथ सफ़र कर के लौटे थे। मर्हूम रोज़ाना सदाए

मदीना भी लगाते थे। दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल में नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाना "स़दाए मदीना लगाना" कहलाता है। اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बे शुमार ख़ुश नस़ीब इस्लामी भाई येह सुन्नत अदा करते हैं। जी हां! नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाना भी सुन्नत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबी **बक्रह** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ (जो कि बनी स़क़ीफ़ के एक स़ह़ाबी हैं) फ़रमाते हैं, "मैं सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े फ़ज्र के लिये निकला तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस सोते हुए शख़्स़ पर गुज़रते उसे नमाज़ के लिये आवाज़ देते या अपने पांव मुबारक से हिलाते।"

(अबू दावूद शरीफ़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:33, ह़दीस़ नं:1264)

कौन पांव से हिलाए ?

जो ख़ुश नस़ीब "स़दाए मदीना" लगाते हैं اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अदाए सुन्नत का स़वाब पाते हैं। याद रहे पांव से हिलाने की सब को इजाज़त नहीं। सिर्फ़ वोह बुज़ुर्ग पांव से हिला सक्ते हैं के जिस से सोने वाले की दिल आज़ारी न होती हो। हां अगर कोई मानेए़ शर-ई़ न हो तो अपने हाथों से पांव दबा कर जगाने में ह़-रज नहीं। यक़ीनन हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर अपने किसी ग़ुलाम को मुबारक पांव से हिला दें तो उस के सोए नस़ीब जगा दें और किसी ख़ुश बख़्त के सर, आंखों या सीने पर अपना मुबारक क़दम रख दें तो ख़ुदा की क़सम! कौनैन का चैन बख़्श दें।

एक ठोकर में उहुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा

रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अक्बर ﷺ एड़ियां
येह दिल, येह जिगर है, येह आंखें, येह सर है
जिधर चाहो रख्खो क़दम जाने आ़लम ﷺ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मरते वक़्त कलिमा पढ़ने की फ़ज़ीलत

اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐसा लगता है मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی की ख़िद्मते दा'वते इस्लामी रंग लाई और उन्हें आख़िरी वक़्त ***कलिमा*** नस़ीब हो गया। और जिस को मरते वक़्त ***कलिमा*** नस़ीब हो जाए उस का आख़िरत में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ हो वोह दाख़िले जन्नत होगा।

(अबू दावूद शरीफ़, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:132, ह़दीस़ नं:3116)

फ़ज़्लो करम जिस पर भी हुवा
उसने मरते दम कलिमा
पढ़ लिया और जन्नत में गया
ला इला-ह इल्लल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मोटा ताज़ा शैत़ान

एक मर्तबा दो[2] शयात़ीन में मुलाक़ात हुई। एक शैत़ान ख़ूब ***मोटा ताज़ा*** था। जब कि दूसरा ***दुबला पतला***। मोटे ने दुबले से पूछा, "भाई ! आख़िर तुम इतने कमज़ोर क्यूं हो ?" उस ने जवाब दिया, "मैं एक ऐसे नेक बन्दे के साथ हूं जो घर में दाख़िल होते और खाते पीते वक़्त ***बिस्मिल्लाह शरीफ़*** पढ़ लेता है तो मुझे उस से दूर भागना पड़ता है। यार ! येह तो बताओ ! तुम ने बहोत जान बना रखी है इस में क्या राज़ है ?" मोटा बोला, "मैं एक ऐसे ग़ाफ़िल शख़्स़ पर मुसल्लत़ हूं जो घर में **बिस्मिल्लाह** पढ़े बिग़ैर दाख़िल हो जाता है और खाते पीते वक़्त भी **बिस्मिल्लाह** नहीं पढ़ता लिहाज़ा मैं उस के इन तमाम कामों में शरीक हो जाता हूं और उस पर जानवर की त़रह़ सुवार रहता हूं। (येह राज़ है मेरी सिह़ह़त मन्दी का)।"

(असरारुल फ़ातिह़ा, स़-फ़ह़ा:155)

नौ[9] शयात़ीन के नाम व काम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से येह दर्स मिलता है कि अगर हम अपने कामों में शैत़ान की शिर्कत से ह़िफ़ाज़त और ख़ैरो ब-र-कत के त़लबगार हैं। तो हर नेक काम के आग़ाज़ में **बिस्मिल्लाह** पढ़ा करें। ब-सूरते दीगर हर फ़े'ल में शैत़ाने लईन शरीक हो जाएगा। शैत़ान की कस़ीर औलाद है और उन की मुख़्तलिफ़ कामों पर ड्यूटियां लगी हुई हैं चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ***ह़जर अ़स्क़लानी*** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی नक्ल करते हैं, ***अमीरुल मो'मिनीन*** ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शैत़ान की औलाद ***नौ***[9] हैं।

(1) ***ज़लीतून*** (2) वस़ीन (3) लक़ूस (4) आ'वान (5) हफ़्फ़ाफ़ (6) मुर्रह (7) मुस-व्वित़ (8) दासिम और (9) वल्हान।

ज़लीतून :- बाज़ारों में मुक़र्रर है, और वहां अपना झन्डा गाड़े रहता है।

वस़ीन :- लोगों को ना गहानी आफ़ात में मुब्तला करने के लिये मुक़र्रर है।

लक़ूस :- आतश परस्तों पर मुक़र्रर है।

आ'वान:- हुक्मरानों के साथ होता है।

हफ़्फ़ाफ़ :- शराबियों के साथ होता है।

मुर्रह :- गाने बाजे, बजाने वालों पर मुक़र्रर है।

मुसव्वित़:- अफ़्वाहें आ़म करने पर मुक़र्रर है। वोह लोगों की ज़बानों पर अफ़्वाहें जारी करवा देता है, और अस्ल ह़क़ीक़त से लोग बे ख़बर रहते हैं।

दासिम :- घरों में मुक़र्रर है। अगर स़ाह़िबे ख़ाना घर में दाख़िल हो कर न सलाम करे और न **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर क़दम अनन्दर रखे, तो येह उन घर वालों को आपस में लड़वा देता है, ह़त्ता कि त़लाक़ या ख़ुला' या मारपीट तक नौबत ***पहूंच*** जाती है।

वल्हान :- वुज़ू, नमाज़ और दीगर इबादात में वस्वसे डालने के लिये मुक़र्रर है।

(अल मुनब्बिहात लिल अ़स्क़लानी, स़-फ़ह़ा : 91)

घरेलू झगड़ों का इलाज

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيهِ رَحمَةُ المَنّان फ़रमाते हैं, "***घर*** में दाख़िल होते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घर वालों को ***सलाम*** करते हुए घर के अन्दर आएं। अगर घर में कोई न हो तो اَلسَّلامُ عَلَيْكَ اَيُّهَاالنَّبِيُّ وَرَحمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहें, बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाख़िल होते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ और ***क़ुल हुवल्लाह शरीफ़*** पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में ***ब-र-कत*** भी।

(मिर्आतुल मनाज़ीह़, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:9)

या इलाही عَزَّوَجَلَّ *हर घड़ी शैत़ान से मह़फ़ूज़ रख*
दे जगह फ़िरदौस में नीरान से मह़फ़ूज़ रख

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खाने से पहले बिस्मिल्लाह ज़रूर पढ़िये

खाने पीने से क़ब्ल ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ना ***सुन्नत*** है। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जिस खाने पर **बिस्मिल्लाह** न पढ़ी जाए वोह खाना शैत़ान के लिये ह़लाल हो जाता है। (या'नी **बिस्मिल्लाह** न पढ़ने की सूरत में शैत़ान उस खाने में शरीक हो जाता है।)

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, जिल्द : 2, स़-फ़ह़ा : 172, ह़दीस़ नं : 2017)

खाने को शैत़ान से बचाओ

खाने से पहले **बिस्मिल्लाह** न पढ़ने से खाने में ***बे ब-र-कती*** होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्स़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, हम ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत, मालिके कौस़रो जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में ह़ाज़िर थे। खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी ब-र-कत हम ने किसी खाने में नहीं देखी मगर आख़िर में बड़ी बे ब-र-कती देखी। हम ने अ़र्ज़ की, "***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसा क्यूं हुवा ?" इर्शाद फ़रमाया, "हम सब ने खाना खाते वक़्त **बिस्मिल्लाह** पढ़ी थी। फिर एक शख़्स़ बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैत़ान ने खाना खा लिया।

(शर्हुस्सुन्नह, जिल्द : 6 स़-फ़ह़ा : 62 ह़दीस़ नं:2818)

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

उम्मुल मो'मिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गन्जीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है, "जब कोई शख़्स़ खाना खाए तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले। या'नी **बिस्मिल्लाह** पढ़े और अगर शुरूअ़ में **बिस्मिल्लाह** पढ़ना भूल जाए तो यूं कहे, "بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ"।

(अबूदावूद शरीफ़,जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:356, ह़दीस़ नं:3767)

शैतान ने खाना उगल दिया

हज़रते सय्यिदुना उमय्या बिन मख़्शी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़े गन्जूर, शाहे गयूर, महबूबे रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे। एक शख़्स बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाना खा रहा था, जब खा चुका और सिर्फ़ एक लुक़्मा ही बाक़ी रह गया तो वोह लुक़्मा उठाया और उसने कहा, "بِسْمِ اللہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ". ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुस्कुरा कर इर्शाद फ़रमाया, "शैतान इस के साथ खाना खा रहा था, जब इस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया तो जो कुछ उस के पेट में था **उगल** दिया।

(अबूदावूद शरीफ़,जिल्द:3, स-फ़हा:356, हदीस नं:3768)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

निगाहे मुस्तफ़ा से कुछ पोशीदा नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी खाना खाएं याद कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लिया करें। जो नहीं पढ़ता उस का ***क़रीन*** नामी शैतान भी खाने में साथ शरीक हो जाता है। सय्यिदुना उमय्या बिन ***मख़्शी*** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वाली रिवायत से साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **मुक़द्दस निगाहें** सब कुछ देख लिया करती हैं, जभी तो शैतान को क़ै करता हुवा मुला-हज़ा फ़रमा लिया और शैतान की बद हवासी देख कर मुस्कुरा दिये। चुनान्चे ***मुफ़्ती अहमद यार ख़ान*** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, ***रहमते आलम*** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस नज़रें हक़ीक़त में छुपी हुई मख़्लूक़ को भी मुला-हज़ा फ़रमाती हैं, और हदीसे मुबारक बिल्कुल अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है किसी तावील की ज़रूरत नहीं। जैसे हमारा पेट मख्खी वाला खाना (जब के मख्खी उस में मौजूद हो) क़बूल नहीं करता। ऐसे ही शैतान का मे'दा **बिस्मिल्लाह** वाला खाना हज़्म नहीं कर पाता। अगर्चे उस का क़ै किया हुवा खाना हमारे काम नहीं आता, मगर मरदूद बीमार पड़ जाता है और ***भूका*** भी रह जाता है और हमारे खाने की फ़ौत शुदह ब-र-कत लौट आती है। ग़रज़ येह कि इस में हमारा फ़ाइदा है और शैतान के दो[2] नुक़्सान और मुम्किन है कि वोह मरदूद आइन्दा हमारे साथ बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** वाला खाना भी इस डर से न खाए कि शायद येह बीच में **बिस्मिल्लाह** पढ़ ले और मुझे क़ै करनी पड़ जाए। हदीसे पाक में जिस आदमी का ज़िक्र है ग़ालिबन वोह अकेला खा रहा था अगर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ खाता तो **बिस्मिल्लाह** न भूलता क्यूं कि वहां तो हाज़िरीन **बिस्मिल्लाह** बुलन्द आवाज़ से केहते थे और साथ वालों को **बिस्मिल्लाह** केहने का हुक्म करते थे।

(मिर्आत शर्हे मिश्कात, जिल्द:6, स-फ़हा:30)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी क़ाफ़िलों में भी खाने की इब्तिदा व इन्तिहा के वक़्त अक्सर बुलन्द आवाज़ से **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ के साथ दुआएं पढ़ाई जाती हैं, म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर दुआएं और सुन्नतें सीखने की सआदत हासिल करता रहता है, आप भी ***दा'वते इस्लामी*** के ***मदनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। आशिक़ाने रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के म-दनी क़ाफ़िलों के तो क्या केहने ! सुनिये और झूमिये

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने म-दनी ऑपरेशन फ़रमाया !

एक आ़शिक़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बयान अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूं, हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** नाका खारडी (बलोचिस्तान, पाकिस्तान) में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये ह़ाज़िर हुवा था, ***म-दनी क़ाफ़िले*** के एक मुसाफ़िर के सर में चार[4] छोटी छोटी गांठें हो गई थीं। जिन के सबब उन को आधा सीसी (या'नी आधे सर) का दर्द हुवा करता था। जब दर्द उठता तो दर्द की त़रफ़ वाले चेहरे का हिस्सा सियाह पड़ जाता और वोह तक्लीफ़ के सबब इस क़दर तड़पते कि देखा न जाता। एक रात वोह इसी त़रह़ दर्द से तड़पने लगे, हम ने गोलियां खिला कर उन को सुला दिया। सुब्ह़ उठे तो हश्शाश बश्शाश थे। उन्होंने बताया कि اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर करम हो गया, मेरे ख़्वाब में ***सरकारे रिसालत मआब*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब-मअ़ चार[4] यार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان करम फ़रमाया। ***सरकारे मदीना*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी जानिब इशारा करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, "इस का दर्द ख़त्म कर दो।" चुनान्चे यारे ग़ारो यारे मज़ार सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मेरा इस त़रह़ ***म-दनी ऑपरेशन*** किया कि मेरा सर खोल दिया और मेरे दिमाग़ में से चार काले दाने निकाले और फ़रमाया, "बेटा ! अब तुम्हें कुछ नहीं होगा।" वाकेई वोह इस्लामी भाई बिल्कुल तन्दुरुस्त हो चुके थे। सफ़र से वापसी पर उन्हों ने दोबारा "चेक-अप" करवाया। डॉक्टर ने ह़ैरान हो कर कहा, "भाई कमाल है, तुम्हारे दिमाग़ के चारों दाने ग़ाइब हो चुके हैं" ! इस पर उस ने रो रो कर ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की ब-र-कत और ख़्वाब का तज़किरा किया। डॉक्टर बहोत मु-त-अस्सिर हुवा। उस अस्पताल के डॉक्टरों समेत वहां मौजूद बारह अफ़राद ने 12 दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की ***निय्यतें*** लिखवाईं और बा'ज़ डॉक्टर्ज़ ने अपने चेहरे पर हाथों हाथ सर-वरे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक सजाने की निय्यत की।

है नबी ﷺ की नज़र	*क़ाफ़िले वालों पर*
आओ सारे चलें	*क़ाफ़िले में चलो*
सीखने सुन्नतें	*क़ाफ़िले में चलो*
लूटने रह़मतें	*क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! ख़्वाब में इ़लाज का येह वाक़ेआ़ नया नहीं है। **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब-अ़त़ाए रब्बे मुजीब عَزَّوَجَلَّ मरीज़ों को शिफ़ा देते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की मश्हूर किताब "**हुज्जतुल्लाहि अ़-लल आ़-लमीन फ़ी मुअ-जिज़ाति सय्यिदिल मुर्सलीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दूसरी जिल्द से ख़्वाब के ज़रीए शिफ़ा की 5 ***ह़िकायात*** सुनिये, सुनाइये और अपना ईमान ताज़ा फ़रमाइये।

(1) आक़ा ﷺ ने आंखों को रौशन फ़रमा दिया !

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुबारक हर्बी رَحمۃُ اللہِ تَعالٰی علیہ का बयान है, अ़ली अबुल कबीर عَلَیہِ رَحمۃُ اللہِ الْقدِیر नाबीना थे, ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदारे फ़ैज़ आसा़र से फ़ैज़याब हुए, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों पर अपना दस्ते शिफ़ा फेरा, सुब्ह़ उठे तो आंखें रौशन हो चुकी थीं।

(मुलख़्ख़स़ अज़ हुज्जतुल्लाहि अ़-लल आ़-लमीन जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:526)

आंख अ़त़ा कीजिये उस में ज़िया दीजिये
जल्वा क़रीब आ गया तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) आक़ा ﷺ ने गिल्टियों का इलाज फ़रमा दिया

हज़रते सय्यिदुना तक़िय्युद्दीन अबू मुह़म्मद अ़ब्दुस्सलाम عَلَیہِ رَحمۃُ رَبِّ الْاَنَام फ़रमाते हैं, "मेरे भाई इब्राहीम के गले में ख़नाज़ीर (या'नी गिल्टियां) हो गई थीं, शिद्दते दर्द के सबब बे क़रार थे, ख़्वाब में सरकारे नामदार صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने करम फ़रमाया," अ़र्ज़ किया, "***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बीमारी के सबब सख़्त तक्लीफ़ में हूं।" फ़रमाया, "तुम्हारी फ़रियाद सुन ली गई है।" اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-र-कत से मेरे भाई को शिफ़ा ह़ासि़ल हो गई।

(मुलख़्ख़स़ अज़ हुज्जतुल्लाहि अ़-लल आ़-लमीन जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:526)

सरे बालीं उन्हें रह़मत की अदा लाई है
ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) आक़ा ﷺ के करम से दम्मे के मरीज़ को शिफ़ा मिली

एक बुज़ुर्ग رَحمۃُ اللہِ تَعالٰی علیہ फ़रमाते हैं, "मैं सख़्त बीमार था और अपने मकान की निचली मन्ज़िल पर स़ाह़िबे फ़िराश (बिछौने पर पड़ा) था, मेरे ज़ईफ़ुल उ़म्र वालिदे गिरामी رَحمۃُ اللہِ تَعالٰی علیہ ज़ीक़ुन्नफ़्स (या'नी दम्मा) के म-रज़ की शिद्दत के बाइस़ ऊपर की मन्ज़िल पर बिस्तर में थे। न मैं ऊपर चढ़ सक्ता था न वोह बेचारे नीचे उतर पाते थे। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुश क़िस्मती से मैं एक रात सर-वरे काइनात, शाहे मौजूदात, सरापा ब-रकात, मंबए इनायात صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने सरकारे नामदार صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में तकिया पेश किया, सरकार صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा हुए, मैं ने अपनी और अपने ज़ईफ़ुल उ़म्र वालिद स़ाह़िब की बीमारी के बारे में फ़रियाद की मेरी फ़रियाद सुन कर सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऊपर की मन्ज़िल पर तशरीफ़ ले गए। जब नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हुवा तो मेरे कानों में आह ! आह ! की आवाज़ आई, दर अस्ल मेरे वालिदे मोह़्तरम सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे, मेरे पास आ कर फ़रमाने लगे, "बेटा करम बालाए करम हो गया, आज

शब रह्‌मते आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ पर करम फ़रमा दिया।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "अब्बा जान ! सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ गुनहगार के पास ही से हो कर आप को नवाज़ने के लिये ऊपर की मन्ज़िल पर जल्वा आराअ हुए थे। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ इस के बा'द मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मंबए जूदो सख़ावत, सरापा रह्‌मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-र-कत से हम दोनों रू-ब सिह़्ह़त हो गएं।

(मुलख़्ख़स़ अज़ हुज्जतुल्लाहि अ़-लल आ़-लमीन जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:526)

मरीज़ाने जहां को तुम शिफ़ा देते हो दम भर में

عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ख़ुदारा दर्द का हो मेरे दरमां या रसूलल्लाह !

(क़बा-लए बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) आक़ा ﷺ ने बर्स़ का इ़लाज फ़रमाया

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "मेरे कन्धे पर बर्स (कोढ़) का दाग़ पैदा हो गया, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा तो मैं ने अपने म-रज़ की शिकायत की। सरकारे नामदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस्ते शिफ़ा फेरा, सुब्ह़ जागा तो اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बर्स़ का नामो निशान तक न था।"

(मुलख़्ख़स़ अज़ हुज्जतुल्लाहि अ़-लल आ़-लमीन जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:531)

म-रज़े इ़स्यां की तरक़्क़ी से हुवा हूं जां ब-लब
मुझ को अच्छा कीजिये ह़ालत मेरी अच्छी नहीं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) आक़ा ﷺ ने हाथ के आबले दुरुस्त कर दिये

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं, ह़ज़रते ह़म्माद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथों में आबले पड़ कर फट गए थे त़बीबों ने मुत्तफ़िक़ा त़ौर पर राय दी कि हाथ काट दिया जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, वोह रात मैं ने इन्तिहाई कर्बो इज़्तिराब के आ़लम में घर की छत पर गुज़ारी और गिड़गिड़ा कर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ए शिफ़ा की। जब सोया और ज़ाहिरी आंख बन्द हुई तो दिल की आंख खुल गई اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, मैं ने अ़र्ज़ की, "***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे हाथ पर चश्मे करम फ़रमाइये।" फ़रमाया, "हाथ फैलाओ," मैंने फैला दिया तो सरकार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक फेर दिया और फ़रमाया, "खड़े हो जाओ !"जब खड़ा हुवा तो اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ब-र-कत से मेरे हाथ की बीमारी ख़त्म हो चुकी थी।

(ऐज़न स़-फ़ह़ा : 528)

येह मरीज़ मर रहा है, तेरे हाथ में शिफ़ा है
ऐ त़बीब ! जल्द आना, म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसा : सिर्फ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ही शिफ़ा देने वाला है मगर इन हिकायात को सुन कर वस्वसे आते हैं कि क्या ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा भी कोई शिफ़ा दे सक्ता है ?

इ़लाजे वस्वसा : बे शक ज़ाती त़ौर पर सिर्फ़ और सिर्फ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ही शिफ़ा देने वाला है, मगर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से उस के बन्दे भी शिफ़ा दे सक्ते हैं। हां अगर कोई येह दा'वा करे कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई त़ाक़त के बिगैर फुलां दूसरे को शिफ़ा दे सक्ता है तो यक़ीनन वोह काफ़िर है। क्यूं कि शिफ़ा हो या दवा एक ज़र्रा भी कोई किसी को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा के बिगैर नहीं दे सक्ता। हर मुसल्मान का येही अ़क़ीदा है कि अंबिया व औलिया عَلَیْہِمُ السَّلَام وَرَحِمَھُمُ اللّٰہ تَعَالٰی जो कुछ भी देते हैं वोह मह्ज़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से देते हैं, مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अगर कोई येह अ़क़ीदा रखे कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी या वली को म-रज़ से शिफ़ा देने या कुछ अ़त़ा करने का इख़्तियार ही नहीं दिया। तो ऐसा शख़्स हुक्मे कुरआनी को झुटला रहा है। पारह 3 सूरए आले इ़मरान का आयत नंबर 49 और उस का तर-जमा पढ़ लीजिये اِن شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वस्वसे की जड़ कट जाएगी और शैत़ान नाकामो ना मुराद होगा। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक क़ौल की हिकायत करते हुए कुरआने पाक में इर्शाद होता है।

وَاُبْرِئُ الْاَکْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِ اللّٰهِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धों और सफ़ेद दाग वाले (या'नी कोढ़ी)को और मैं मुर्दे जिलाता हूं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से।

(पारह : 3, सूरह : आले इमरान, आयत नंबर : 49)

देखा आपने? ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام साफ़ साफ़ फ़रमा रहे हैं कि मैं ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की बख़्शी हुई कुदरत से मादर ज़ाद अन्धों को बीनाई और कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूं। ह़त्ता कि मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया करता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अंबिया عَلَیْہِمُ السَّلَام को त़रह़ त़रह़ के इख़्तियारात अ़त़ा किये गए हैं और फ़ैज़ाने अंबिया से औलिया को भी अ़त़ा किये जाते हैं लिहाज़ा वोह भी शिफ़ा दे सक्ते हैं और बहोत कुछ अ़त़ा फ़रमा सक्ते हैं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह शान है तो आक़ाए ईसा, सरदारे अंबिया, ***मीठे मीठे मुस्त़फ़ा*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़्मत निशान कैसी होगी ! येह याद रखिये कि सर-वरे काइनात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जमीअ़ मख़्लूक़ात और जुम्ला अंबियाओ मुर्सलीन عَلَیْہِمُ السَّلَام के कमालात के जामे' हैं, बल्कि जिस को जो मिला सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के स़दक़े मिला। याद रखिये मख़्लूक़ में से किसी भी मुआ़-मले में किसी और को सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बेहतर समझने वाला काफ़िर है। तो मा'लूम हुवा कि जब सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام मरीज़ों को शिफ़ा अंधों को आंखें और मुर्दों को ज़िन्दगी दे सकते हैं तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह सब ब-द-र-जए ऊला अ़त़ा फ़रमा सकते हैं।

عَلَیْہِ السَّلَام عَلَیْہِ السَّلَام

हुस्ने यूसुफ़, दमे ईसा पे नहीं कुछ मौक़ूफ़
जिस ने जो पाया है, पाया है बदौलत उन की

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

76 हज़ार नेकियां

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे मदी–नए मुनव्वरह,सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सर–वरे हर दो–सरा, महबूबे किब्रिया عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़र्हत निशान है, "जो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ेगा ***अल्लाह*** तबा–र–क व तआ़ला हर ह़र्फ़ के बदले उस के नामए आ'माल में ***चार हज़ार*** नेकियां दर्ज फ़रमाएगा, ***चार हज़ार*** गुनाह बख़्श देगा और ***चार हज़ार*** द–रजात बुलन्द फ़रमाएगा।"

(फ़िरदौसुल अख़्बार, जिल्द:4, स़–फ़ह़ा : 26, ह़दीस़ नंबर :5573)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! अपने प्यारे प्यारे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान हो जाइये!! ज़रा ह़िसाब तो लगाइये بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ में 19 ह़ुरूफ़ हैं। यूं एक बार بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ने से छिहत्तर76 हज़ार नेकियां मिलेंगी, छिहत्तर हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे और छिहत्तर हज़ार द–रजात बुलन्द होंगे। وَاللّٰہُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْم (या'नी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ साह़िबे फ़ज़्लो अ़ज़्मत है।)

ब-वक़्ते ज़ब्ह़ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ न पढ़ने की ह़िक्मत

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْمَنَّان ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रह़मते बेपायां का तज़्किरा करते हुए फ़रमाते हैं, "ग़ौर तो करो कि सूरए तौबा में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ नहीं लिखी गई इसी त़रह़ ***ज़ब्ह़*** के वक़्त पूरी **बिस्मिल्लाह** नहीं पढ़ते बल्कि यूं केहते हैं, ***"बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर।"*** इस में क्या ह़िक्मत है ? ***ह़िक्मत*** येह है कि सूरए तौबा में अव्वल से आख़िर तक जिहाद और क़िताल का ज़िक्र है और येह काफ़िरों पर क़हर है, इसी त़रह़ ज़ब्ह़ में जानवर की जान ली जाती है। येह भी जब्रो क़हर का वक़्त होता है। इस मौक़ेअ़ पर रह़मत का ज़िक्र न करो। तो जो शख़्स़ पूरी **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ (या'नी بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ) का विर्द करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुदा के ग़ज़ब से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(तफ़सीरे नईमी, जिल्द अव्वल, स़–फ़ह़ा : 43)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उन्नीस19 ह़ुरूफ़ की ह़िक्मतें

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के उन्नीस19 ह़ुरूफ़ हैं और दोज़ख़ पर अ़ज़ाब देने वाले फ़िरिश्ते भी **19**। पस उम्मीद है कि इस के एक एक ह़र्फ़ की ब–र–कत से एक एक फ़िरिश्ते का अ़ज़ाब दूर हो जाए। दूसरी ख़ूबी येह भी है कि दिन रात में **24** घन्टे हैं जिन में से **5** घन्टे पांच नमाज़ों ने घेर लिये और **19** घन्टों के लिये بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के उन्नीस19 ह़ुरूफ़ अ़त़ा फ़रमाए गए। पस जो

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ का विर्द करता रहे اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ उस का हर घन्टा इबादत में शुमार होगा और हर घन्टे के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

(तफ़सीरे कबीर, जिल्द अव्वल स़-फ़ह़ा : 156)

क़ब्र से अ़ज़ाब उठ गया

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक ***क़ब्र*** के क़रीब गुज़रे तो अ़ज़ाब हो रहा था। कुछ वक़्फ़े के बा'द फिर गुज़रे तो मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि उस ***क़ब्र*** में नूर ही नूर है और वहां रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की बारिश हो रही है। आप عَلَیْہِ السَّلَام बहोत हैरान हुए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया, कि मुझे इस का भेद बताया जाए। इर्शाद हुवा, "***ऐ ईसा !*** عَلَیْہِ السَّلَام येह शख़्स़ सख़्त गुनहगार होने के सबब अ़ज़ाब में गरिफ़्तार था, लेकिन ब-वक़्ते इन्तिक़ाल इस की बीवी "उम्मीद" से थी, उस के लड़का पैदा हुवा और आज उस को मक्तब भेजा गया, उस्ताद ने उस को **बिस्मिल्लाह** पढ़ाई, ***मुझे ह़या आई कि मैं उस शख़्स़ को ज़मीन के अन्दर अ़ज़ाब दूं कि जिस का बच्चा ज़मीन के ऊपर मेरा नाम ले रहा है।"***

(तफ़्सीरे कबीर जिल्द अव्वल स़-फ़ह़ा : 155)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

ऐ ख़ुदाए ﷻ मुस़्त़फ़ा ﷺ मैं तेरी रह़मतों पे क़ुरबां
हो करम से मेरी बख़्शिश, ब-तुफ़ैले शाहे जीलां رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ! سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ! سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ! हम सब को चाहिये कि अपने बच्चों को "टाटा पापा" सिखाने के बजाए इब्तिदा ही से ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना सिखाएं और येह नहीं कि सिर्फ़ मरने वाले वालिदैन को ही इस की ब-र-कतें ह़ासिल होती हैं, ख़ुद सीखने और सिखाने वाले को भी इस की ब-र-कतें नसीब होती हैं लिहाज़ा अपने म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नी से खेलते हुए सिखाने की निय्यत से उन के सामने बार बार ***अल्लाह अल्लाह*** करते रहें तो वोह भी اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ज़बान खोलते ही सब से पहला लफ़्ज़ ***अल्लाह*** कहेंगे।

बच्चे की म-दनी तरबिय्यत की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَرِی फ़रमाते हैं, "मैं तीन[3] साल की उ़म्र का था कि रात के वक़्त उठ कर अपने मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना ***मुह़म्मद बिन सुवार*** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْغَفَّار को नमाज़ पढ़ते देखता, एक दिन उन्हों ने मुझ से फ़रमाया, "क्या तू उस अल्लाह तआ़ला को याद नहीं करता जिस ने तुझे पैदा फ़रमाया ? मैं ने पूछा, "मैं उसे किस त़रह़ याद करूं?" फ़रमाया, जब रात सोने लगो तो ज़बान को ह़-र-कत दिये बिग़ैर मह़ज़ दिल में ***तीन[3] मर्तबा*** येह कलिमात कहो।

اَللّٰہُ مَعِیَ، اَللّٰہُ نَا ظِرٌ اِلَیَّ، اَللّٰہُ شَا ھِدِیْ۔

या'नी अल्लाह तआ़ला मेरे साथ है, अल्लाह तआ़ला मुझे देखता है, अल्लाह तआ़ला मेरा गवाह है।[1]

---

1. हो सके तो येह कलिमात लिख कर घर और दुकान वग़ैरा में ऐसी जगह आवेज़ां कर दीजिये जहां आप की नज़र पड़ती रहे।

फ़रमाते हैं, "मैं ने चन्द रातें येह कलिमात पढ़े और फिर उन को बताया।" उन्हों ने फ़रमाया, "अब हर रात ***सात[7] मर्तबा*** पढ़ो," मैं ने ऐसा ही किया और फिर उन को मुत्तला' किया। फ़रमाया, "हर रात ***ग्यारह[11] मर्तबा*** येही कलिमात पढ़ो।"(फ़रमाते हैं) मैं ने इसी त़रह पढ़ा तो मेरे दिल में इस की लज़्ज़त मा'लूम हुई। जब एक साल गुज़र गया तो मेरे मामूं जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने फ़रमाया,"मैं ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है उसे क़ब्र में जाने तक हमेशा पढ़ते रहना। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ येह तुम्हें दुन्या और आख़िरत में नफ़-अ़ देगा।" सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَرِى फ़रमाते हैं, "मैं ने कई साल तक ऐसा ही किया तो मैं ने अपने अन्दर इस का बे इन्तिहा मज़ा पाया। मैं तन्हाई में येह ज़िक्र करता रहा। ***फिर*** एक दिन मेरे मामूं जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने फ़रमाया,"***ऐ सह्ल!*** अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स़ के साथ हो, उसे देखता हो और उस का गवाह हो, क्या वोह उस की ना फ़रमानी करता है? हरगिज़ नहीं। लिहाज़ा तुम अपने आप को गुनाह से बचाओ। फिर मामूं जान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने मुझे ***मक्तब*** में भेज दिया।" मैं ने सोचा कहीं मेरे ज़िक्र में ख़लल न आ जाए लिहाज़ा उस्ताज़ स़ाहि़ब से शर्त मुक़र्रर कर ली कि मैं उन के पास जा कर सिर्फ़ एक घन्टा पढूंगा और वापस आ जाऊंगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैंने मक्तब में ***छे[6] या सात[7] बरस*** की उ़म्र में क़ुरआने पाक ***ह़िफ़्ज़*** कर लिया।

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं रोज़ाना रोज़ा रखता था। ***बारह[12] साल*** की उ़म्र तक मैं ***जव*** की रोटी खाता रहा। ***तेरह[13] साल*** की उ़म्र में मुझे एक मस्अला पेश आया। उस के ह़ल के लिये घर वालों से इजाज़त ले कर मैं ***बस़रा*** आया और वहां के उ़-लमाअ से वोह मस्अला पूछा, लेकिन उन में से किसी ने भी मुझे शाफ़ी जवाब न दिया। फिर मैं ***अब्बादान*** की त़रफ़ चला गया। वहां के मश्हूर आ़लिमे दीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़बीब हम्ज़ा बिन अबी अ़ब्दुल्लाह अब्बादानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی से मैंने मस्अला पूछा तो उन्हों ने मुझे तसल्ली बख़्श जवाब दिया। मैं एक अ़रसे तक उन की स़ोह़बत में रहा, उन के कलाम से फ़ैज़ ह़ासिल करता और उन से आदाब सीखता फिर मैं ***तुस्तर*** की त़रफ़ आ गया। मैं ने गुज़ारे का इन्तिज़ाम यूं किया कि मेरे लिये ***एक दिरह़म*** के ***जव*** शरीफ़ ख़रीद लिये जाते और उन्हें पीस कर रोटी पका ली जाती। मैं हर रात स-ह़री के वक़्त ***एक ऊक़िया*** (या'नी तक़रीबन 70 ग्राम) जव की रोटी खाता, जिस में न नमक होता और न ही सालन। येह एक दिरह़म मुझे साल भर के लिये काफ़ी होता। फिर मैंने इरादा किया कि ***तीन[3] दिन*** मुसल्सल फ़ाक़ा करूंगा और उस के बा'द खाऊंगा। ***फिर पांच[5]*** दिन, ***फिर सात[7]*** दिन और ***फिर पच्चीस[25] दिनों*** का मुसल्सल फ़ाक़ा रखा।(या'नी 25 दिन के बा'द एक बार खाना खाता।) ***बीस[20] साल*** तक येही त़रीक़ा रहा फिर मैंने कई साल सैरो सियाह़त की, वापस ***तुस्तर*** आया तो जब तक अल्लाह आ़ला ने चाहा शब बेदारी इख़्तियार की। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْاَحَد फ़रमाते हैं, "मैंने मरते दम तक सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَرِى को कभी ***नमक*** इस्ते'माल करते नहीं देखा। (एह्याउल उ़लूम जिल्द:3,स़-फ़ह़ा:91)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश नसीब वालिदैन दुन्या के बजाए आख़िरत के मुआ़-मले में अपनी औलाद के लिये ज़ियादा मु-त-फ़क्किर होते हैं, चुनान्चे एक ऐसी ही समझदार मां ने अपने बेटे पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** की जिस के नतीजे में इस की इस्लाह़ का सामान हुवा। येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये और झूमिये।

दा'वते इस्लामी के तरबिय्यती कोर्स की बहार

झंग (पंजाब पाकिस्तान) के एक आ़शिक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बयान का अपने अन्दाज़ में ख़ुलासा़ पेश करता हूं, ''अम्मी जान त़वील अ़रसे से अ़लील थीं, उन की शदीद ख़्वाहिश थी कि मैं किसी त़रह़ गुनाहों के दलदल से निकल जाऊं और सुधर जाऊं। अम्मी जान को ***दा'वते इस्लामी*** से बे हद प्यार था। उन्हों ने अख़राजात दे कर मुझे ब इस़रार बाबुल मदीना कराची भेजा और ताकीद की कि आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आ़लमी म-दनी मर्कज़ ***फ़ैज़ाने मदीना*** में रह़मतों की छमाछम बरसात के अंदर ***तरबिय्यती कोर्स*** करना और मेरी शिफ़ायाबी की दुआ़ भी मांगना। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने बाबुल मदीना कराची आ कर ''तरबिय्यती कोर्स'' करने की सआ़दत ह़ासि़ल की, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र से मुशर्रफ़ हुवा, अम्मी जान के लिये ख़ूब दुआ़एं भी कीं। फ़रागत़ के बा'द जब घर आया तो मेरी ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूं कि तरबिय्यती कोर्स के दौरान फ़ैज़ाने मदीना में मांगी हुई दुआ़ओं की ब-र-कत से मेरी अम्मी जान सि़ह़ह़त याब हो चुकी थीं, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तरबिय्यती कोर्स की ब-र-कत से मैं नमाज़ी बन गया और म-दनी माह़ौल से वाबस्तगी नसीब हुई, सुन्नतों की ख़िदमत और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का जज़्बा मिला। मेरी तमन्ना है कि हमारे घर का हर फ़र्द दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल में रंग जाए और हमारी तमाम परेशानियां दूर हों।

फ़ैज़ाने मदीना में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत है
अम्मी को मुयस्सर अब सि़ह़ह़त की सआ़दत है
फ़ैज़ाने मदीना में आने ही की ब-र-कत है
ख़ूब और बढ़ी मुझ को सुन्नत से मह़ब्बत है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो लोग अपनी औलाद को सिर्फ़ दुन्या बनाने के लिये ही वक़्फ़ रखते हैं और उस को अच्छी सोह़बत से रोकते हैं, वोह अपनी आख़िरत को सख़्त ख़त़रे में डाल देते हैं और बसा अवक़ात दुन्या में भी पछताने के दिन आते हैं चुनान्चे

म-दनी क़ाफ़िले से रोकने का नुक़सान

मदी-नतुल औलिया अह़मदआबाद शरीफ़ (अल-हिन्द) के एक आ़शिक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक नौ जवान पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** कर के उस को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये आमादह कर लिया, मगर वालिद सा़ह़िब ने दुन्यवी ता'लीम में रुकावट के ख़ौफ़ से उख़्रवी ता'लीम के सफ़र से रोक दिया। बे चारे को आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत मिलते मिलते रह गई, नती-जतन वोह बुरे दोस्तों के हथ्थे चढ़ गया और शराबी बन गया। अब उस

के वालिद साहिब को अपनी ग़-लती का एह्सास हुवा, उस ने उसी आशिक़े रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दर-ख़्वास्त की, "इस को क़ाफ़िले में ले जाओ कि कहीं इस की शराब की लत छूटे।" उस नौ जवान पर दो बारा इन्फ़िरादी कोशिश की गई मगर चूं कि पानी सर से ऊंचा हो चुका था। या'नी बे चारा बहुत ज़ियादा बिगड़ चुका था लिहाज़ा किसी सूरत म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये आमादह न हुवा।

वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को शुरूअ़ ही से अच्छा और म-दनी माहौल फ़राहम करें, वरना बुरी सोहबत की वजह से बिगड़ जाने की सूरत में बाज़ी हाथ से निकल जाती है। सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को इस की बड़ी बहन ने बताया, एक इस्लामी बहन ने रो रो कर दुआ के लिये कहा है मेरे बेटे की इस्लाह के लिये दुआ करें, हाए! हाए! मैं ने ख़ुद ही उस को बरबाद किया है, इस को दा'वते इस्लामी के ***मद्र-सतुल मदीना*** में हिफ़्ज़ के लिये बिठाते तो बिठा दिया मगर बे चारा जो सुन्नतें वग़ैरा सीख कर आता वोह घर में बयान कर देता तो उस का मज़ाक़ उड़ाते। आख़िरश उस का दिल टूट गया और उस ने ***मद्र-सतुल मदीना*** में जाना छोड़ दिया। अब बुरे दोस्तों की सोहबत में रह कर आवारा हो गया है, इत्तिफ़ाक़ से मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी माहौल मिल गया है अब मैं सख़्त पछता रही हूं, हाए मेरा क्या बनेगा!

सोहबते सालेह तुरा सालेह कुनद   सोहबते तालेह तुरा तालेह कुनद

(या'नी अच्छों की सोहबत तुझे अच्छा बना देगी, और बुरे की सोहबत तुझे बुरा बना देगी)

दरिन्दों का घर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ***सिद्दीक़*** (या'नी अव्वल द-रजे के औलिया में से) थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नमक इस लिये इस्ते'माल नहीं फ़रमाते थे कि नमक की वजह से खाना लज़ीज़ हो जाता है। और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه लज़्ज़तों से दूर रहते थे। वाक़ेई क़ोरमा, बिर्यानी वग़ैरा में चाहे हज़ार मसालहा जात डालें, अगर नमक नहीं डालेंगे तो खाने का सारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा। येह भी याद रहे कि ***नमक*** की एक मख़्सूस मिक़्दार ब-दने इन्सानी के लिये ज़रूरी है और येह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ***करामत*** थी कि बिग़ैर नमक इस्ते'माल किये ज़िन्दा थे! तुस्तर शरीफ़ में वाक़ेअ़ आप के मकाने आलीशान को ***"बैतुस्सिब्बाअ़"*** या'नी ***दरिन्दों का घर*** केहते थे क्यूं कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के यहां ***ब कसरत दरिन्दे*** (शेर,चीते) वग़ैरा हाज़िर होते थे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه गोश्त के ज़रीए उन की ज़ियाफ़त फ़रमाते। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه आख़िरी उम्र में ***अपाहिज*** हो गए थे मगर जब ***नमाज़*** का वक़्त आता तो हाथ पांव खुल जाते और नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते तो हस्बे साबिक़ मा'ज़ूर हो जाते।

(रिसा-लतुल क़ुशैरिय्या, स-फ़हा:387)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुख़ार का इलाज

मन्क़ूल है, एक शख़्स़ को बुख़ार आ गया, उस के उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते शैख़ फ़क़ीह वली उ़मर बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُعِيْد इयादत के लिये तशरीफ़ लाए, जाते हुए एक ***ता'वीज़*** इनायत कर के फ़रमाया "इस को खोल कर देखना मत। उन के जाने के बा'द उस ने ता'वीज़ बांध लिया, फ़ौरन ***बुख़ार*** जाता रहा। उस से रहा न गया, खोल कर जो देखा तो بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखा था। दिल में वस्वसा आया येह तो कोई भी लिख सक्ता है ! अक़ीदत में कमी आते ही फ़ौरन बुख़ार लौट आया। घबरा कर ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ग़-लत़ी की मुआ़फ़ी चाही। उन्हों ने ता'वीज़ बना कर अपने दस्ते मुबारक से बांध दिया, ***बुख़ार*** फ़ौरन चला गया। अब की बार देखने की मुमा-न-अ़त न फ़रमाई थी मगर डर के मारे खोल कर न देखा। बिल आख़िर साल भर के बा'द जब खोल कर देखा तो वोही بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ तह़रीर थी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ की बड़ी ब-र-कतें हैं और इस में बीमारियों का इ़लाज भी। इस ह़िकायत से ***दर्स*** मिला कि बुज़ुर्गाने दीन عَلَيْهِمْ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن अगर किसी मुबाह़ बात से भी मन्अ़ कर दें तो समझ में न आने के बा वुजूद भी उस से बाज़ रेहना चाहिये येह भी ***दर्स*** मिला कि ता'वीज़ खोल कर नहीं देखना चाहिये कि इस से ए'तिक़ाद मु-त-ज़ल्ज़िल होने का अन्देशा रेहता है। फिर इस के तह करने के मख़्सूस़ त़रीक़े के साथ साथ लपेटने के दौरान बा'ज़ अवक़ात कुछ पढ़ा हुवा भी होता है। लिहाज़ा खोल कर देखने से उस के फ़वाइद में कमी आ सक्ती है।

"या नबी" के पांच[5] ह़ुरूफ़ की निस्बत से बुख़ार के 5 म-दनी इ़लाज

मदीना-1 لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ***(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :)*** न उस में धूप देखेंगे न ठिठर (या'नी सर्दी) (पारह-29, अद्दह्र-13) येह आ-यते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ***बुख़ार*** की शिद्दत में नुमायां कमी मह़सूस होगी और मरीज़ सुकून मह़सूस करेगा।

(तर-जमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं)

मदीना-2 **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे स़ादिक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, "सूरतुल फ़ातिह़ा 40 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के मुंह पर छींटे मारिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ***बुख़ार*** चला जाएगा।"

मदीना-3 **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ***बुख़ार*** था तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह दुआ़ पढ़ कर दम किया था :

بِسْمِ اللهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَآءٍ يُّؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ ط اَللهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللهِ اَرْقِيْكَ

(तर-जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस बीमारी के लिये जो आप को ईज़ा देती है और दूसरों के शर और ह़सद करने वालों की बुरी नज़र से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। मैं आप पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से दम करता हूं । (मुस्लिम स़-फ़ह़ा:1202,ह़दीस़ नंबर: 2186) बुख़ार के मरीज़ को सिर्फ़ अ़-रबी में दुआ़ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये।

मदीना-4 बुख़ार वाला ब कस्रत بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ पढ़ता रहे।

मदीना-5 ह़दीसे़ पाक में है, जब तुम में से किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन[3] दिन तक सुब्ह़ के वक़्त ठन्डे पानी से छींटे मारे जाएं।

(अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम स़-फ़ह़ा:223,ह़दीस़ नंबर:7438)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी से वाबस्ता इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी पर नाज़ है। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र कर के दुआ़ मांगने से बसा अवक़ात डॉक्टरों की त़रफ़ से ला इलाज क़रार दिये गए मरीज़ों की खुशियां भी اَلْحَمْدُلِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दोबारा लौट आई हैं। चुनान्चे

आंखें रौशन हो गईं

लियाक़त कोलोनी हैदराबाद (बाबुल इस्लाम, सिंध, पाकिस्तान) में दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ ने एक नौ जवान को ***म-दनी क़ाफ़िले*** की दा'वत पेश की जिस पर वोह बरहम हो कर कहने लगे "आप लोग किसी की परेशानी का ख़याल भी फ़रमाया करें मेरी वालिदा की आंखों का ऑपरेशन डॉक्टरों ने ग़लत कर दिया जिस की बिना पर उन की बीनाई चली गई, हमारे घर में सफ़े मातम बिछी है और आप कहते हैं, "***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र करो।" मुबल्लिग़ ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए हमदर्दाना अंदाज़ में दुआ़ देते हुए कहा, "***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ आप की वालिदा को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। डॉक्टर क्या केह रहे हैं ?" वोह बोले, "डॉक्टर्ज़ कहते हैं अब अमरीका ले जाओगे तब भी इलाज मुम्किन नहीं"। येह कहते हुए उस की आवाज़ भर्रा गई। मुबल्लिग़ ने बड़ी मह़ब्बत से उस की पीठ थपकते हुए तसल्ली आमेज़ लहजे में कहा, "भाई ! डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है इस पर मायूस क्यूं होते हैं, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा अ़ता फ़रमाने वाला है, मुसाफ़िर की दुआ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ क़बूल फ़रमाता है आप आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र कीजिये और इस दौरान वालिदा के लिये दुआ़ भी मांगिये, अमीरुल मो'मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "**जो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के कामो में लग जाता है अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसके कामों मे लग जाता है।**" उस मुबल्लिग़ की दिलजूई भरी इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में ग़म ज़दा नौ जवान ने सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र किया, दौराने सफ़र वालिदा के लिये ख़ूब दुआ़ मांगी। ***जब घर लौटा तो येह देख कर उस की ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से उस की***

वालिदा की आंखों का नूर वापस आ चुका था। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ

लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो	सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
चश्मे बीना मिले सुख से जीना मिले	पाओगे राहतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है, "तीन3 क़िस्म की दुआएं मक़्बूल हैं उन की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं। (1) मज़लूम की दुआ (2) मुसाफ़िर की दुआ (3) अपने बेटे के हक़ में बाप की दुआ। (जामेए़ तिरमिज़ी जिल्द:5, स-फ़हा:280, ह़दीस़ नं:3459) सफ़र और वोह भी ***म-दनी क़ाफ़िले*** में आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हो फिर उस के क्या कहने ! इसमें दुआएं क्यूं क़बूल न होंगी ! इस हिकायत से येह भी दर्स मिला कि इन्फ़िरादी कोशिश में निहायत ***स़ब्रो*** तहम्मुल की ज़रूरत है, सामने वाला झाड़े बल्कि मारे तब भी मायूस हुए बिग़ैर इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखिये। अगर आप ग़ुस्से में आ गए या ***छिछोरपन*** पर उतर आए तो दीन का बहुत सारा नुक़्स़ान कर बैठेंगे। समझाना तर्क न करें कि समझाना ज़रूर रंग लाता है और क्यूं रंग न लाए के पारह-27 सूरतुज़ ज़ारियात की आयत नंबर-55 में हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह का फ़रमाने ढारस निशान है,



तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :- और समझाओ के समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।

दर्दे सर का इलाज

क़ैसरे रूम ने अमीरुल मो'मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़त लिखा कि मुझे ***दाइमी दर्दे सर*** की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस को एक टोपी भेज दी क़ैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का ***दर्दे सर*** काफ़ूर हो जाता और जब सर से उतारता तो ***दर्दे सर*** फिर लौट आता उसे बड़ा ***तअ़ज्जुब*** हुवा। आख़िरे कार उसने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक कागज़ बर आमद हुवा जिस पर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिखा था।

(असरारुल फ़ातिहा स-फ़हा:163, तफ़सीरे कबीर जिल्द- 1, स-फ़हा:155)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

बिस्मिल्लाह से इलाज का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि जिस को ***दर्दे सर*** हो वोह एक कागज़ पर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिख कर या लिखवा कर उस का ***ता'वीज़*** सर पर बांध ले ***लिखने का त़रीक़ा*** येह है कि अन्मिट सियाही म-स़-लनः बोल पोइन्ट से लिखिये और بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के "ہ" और तीनों "م" के दाइरे खुले रखिये। ता'वीज़ लिखने का उसूल येह है कि आयत या इ़बारत लिखने में हर दाइरे वाले ह़र्फ़ का दाइरा खुला हो यानी इस त़रह़ म-स़-लन : ط،ظ،ہ،ھ،ص،ض،و،م،ف،ق वग़ैरा। आ'राब लगाना ज़रूरी नहीं, लिख कर मोम जामा (या'नी, मोम में तर किये हुवे कपड़े का टुकड़ा लपेट लें) या प्लास्टिक कोटिंग कर लें फिर

कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लें और सर पर बांध लें जिन को ***इमामे शरीफ़*** का ताज सजाने की सआ़दत हा़सिल है, वोह चाहें तो इमामे शरीफ़ की टोपी में सी लें इसी त़रह़ इस्लामी बहनें दुपट्टे या बुरक़े' के उस हिस्से में सी लें जो सर पर रहता है। अगर ए'तिक़ादे कामिल होगा तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर जाता रहेगा। सोने या चांदी या किसी भी धात की डिब्या में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी त़रह़ किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना ***ना जाइज़ो*** गुनाह है। इसी त़रह़ सोने, चांदी और इस्टील वग़ैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगरचे ***अल्लाह*** का मुबारक नाम या ***कलि-मए त़य्यिबा*** वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है ***औ़रत*** सोने-चांदी की डिब्या में ता'वीज़ पहन सक्ती है।

या अल्लाह के छे[6] हुरूफ़ की निस्बत से आधे सर के दर्द के 6 इलाज

मदीना-1 **अगर** किसी को ***आधे सर का दर्द*** हो तो एक बार सूरतुल इख़्लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। ह़स्बे ज़रूरत तीन[3] बार, सात[7] बार या ग्यारह[11] बार इसी त़रह़ दम कीजिये। ग्यारह[11] का अ़दद पूरा होने से क़ब्ल ही اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ***आधे सर*** का दर्द ठीक हो जाएगा।

मदीना-2 **जब** दर्द हो रहा हो उस वक़्त सूंठ (या'नी सूखी हुई अदरक जो के पन्सारी या'नी देसी दवा वालों से मिल सक्ती है।) को थोडे से पानी में घिस कर सूंठ का घिसा हुवा हिस्सा पेशानी पर मलने से اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ***आधे*** सर का दर्द जाता रहेगा।

मदीना-3 **ख़ुश्क** धन्या के थोड़े दाने और थोड़ी सी ***किश्मिश***[1] मटके के ठन्डे या सादा पानी में चन्द घन्टे भिगो कर पीने से اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा होगा।

मदीना-4 **गर्म** दूध में देसी घी मिला कर पीने से भी फ़ाइदा होता है।

मदीना-5 **नारियल** का पानी पीने से आधा सीसी (या'नी आधे सर का दर्द) और पूरे सर के दर्द में कमी आती है।

मदीना-6 ***नीम*** गर्म पानी के बड़े बरतन में नमक डाल कर दोनों पांव 12 मिनट के लिये उस में डाले रहें اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा हो जाएगा। (ज़रू-रतन वक़्त में कमी बेशी कर लीजिये।)

या मुस्त़फ़ा के सात[7] हुरूफ़ की निस्बत से दर्दे सर के सात[7] इलाज

मदीना-1 لَا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ ***तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :*** न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए। (पारह: 27 अल वाकिअह आयत:19) येह आ-यते करीमा तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर ***दर्दे सर*** वाले पर दम कर दीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा हो जाएगा (तर-जमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं)

मदीना-2 सू-रतुन नास सात[7] बार (अव्वल आख़िर एक[1] बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर सर पर दम

कीजिये, और पूछिये, अगर अभी दर्द बाक़ी हो तो दूसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। अगर अब भी दर्द हो तो तीसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। ***पूरे सर*** का दर्द हो या ***आधे सर*** का कैसा ही शदीद दर्द हो तीन[3] बार में اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जाता रहेगा।

मदीना-3 ***पूरे*** सर का दर्द हो या शक़ीक़ा (या'नी आधे सर का दर्द) बा'द नमाज़े अस्र सू-रतुत तकासुर एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दर्द में इफ़ाक़ा होगा।

मदीना-4 ***ज़बान*** पर एक चुटकी ***नमक*** रख कर 12 मिनट के बा'द एक गिलास पानी पी लें। सर में कैसा ही दर्द हो اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इफ़ाक़ा हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ के लिये नमक का इस्ते'माल नुक़्सान देह होता है।)

मदीना-5 **एक** कप पानी में एक चम्मच ***हल्दी*** डाल कर जोश दे कर पीने या भाप लेने से اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ***सर का दर्द*** दूर हो जाएगा। (सालन वग़ैरा में हल्दी ज़रूर इस्ते'माल कीजिये, रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) हल्दी खाने वाला اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ***केन्सर*** से मह़फ़ूज़ रहेगा।)

मदीना-6 ***देसी*** घी में तली हुई, गर्मा गर्म ताज़ा ***जलेबियां*** तुलूए आफ़ताब से क़ब्ल खाने से اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर में आराम हो जाएगा।

मदीना-7 **कभी** इत्तिफ़ाक़िया ***दर्दे सर*** हो जाए तो खाना खाने के बा'द डिस्प्रिन (DISPRIN) की दो टिक्या पानी में घोल कर पी लीजिये। اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ठीक हो जाएगा। (हर त़रह़ के दर्द की टिक्या खाना खाने के बा'द ही इस्ते'माल की जाए वरना नुक़्सान का अन्देशा है)

म-दनी मश्वरह : अगर दवाओं से दर्दे सर ठीक न होता हो तो आंखें टेस्ट करवा लीजिये। अगर नज़र कमज़ोर हो तो ऐनक पहनने से اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ***दर्दे सर*** ठीक हो जाएगा। फिर भी ठीक न हो तो दिमाग़ के ख़ुसूसी डॉक्टर से रुजूअ़ करना ज़रूरी है। इस में कोताही बा'ज़ अवक़ात सख़्त नुक़्सान देह साबित होती है।

नक्सीर फूटने का इ़लाज

अगर किसी की नक्सीर फूट जाए और ख़ून बेहने लगे तो शहादत की उंगली से पेशानी पर से بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखना शुरूअ़ कर के नाक के आख़िर पर ख़त्म करे اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा।

दवा की ह़िकायत

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "जो बीमार **बिस्मिल्लाह** केह कर दवा पिये اِن شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दवा फ़ाइदा देगी। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पेट में निहायत सख़्त दर्द हुवा, ह़क़ तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया, इर्शाद हुवा कि जंगल की फुलां बूटी खाओ। चुनान्चे आप عَلَیْہِ السَّلَام ने खाई और फ़ौरन आराम हो गया। कुछ दिनों बा'द फिर वोही बीमारी हुई, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फिर वोही इस्ते'माल की मगर दर्द में ज़ियादती हो गई ! जनाबे बारी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया के इलाही عَزَّوَجَلَّ ! येह क्या भेद है ? कि दवा एक तासीर दो ! कि पेहली बार इस ने शिफ़ा दी और

इस दफ़्आ़ बीमारी बढ़ाई ! इर्शादे इलाही हुवा कि ***ऐ मूसा !*** उस बार तुम मेरी त़रफ़ से बूटी के पास गए थे और इस दफ़्आ़ अपनी त़रफ़ से। ऐ मूसा ! शिफ़ा तो मेरे नाम में है मेरे नाम के बिग़ैर दुन्या की हर चीज़ ज़हरे क़ातिल है। और मेरा नाम ही इस का तिर्याक़ (या'नी इ़लाज) है।

(तफ़्सीरे नईमी जिल्द अव्वल स़-फ़ह़ा:42)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

दवा पर नहीं खु़दा عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखिये

मा'लूम हुवा कि भरोसा दवा पर नहीं खु़दा عَزَّوَجَلَّ पर रखना चाहिये। अगर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो ही दवा से शिफ़ा मिलेगी वोह न चाहे तो येही दवा बीमारी बढ़ने का सबब बन जाएगी और आम मुशा-हदा है कि एक ही दवा से एक बीमार सिह़्ह़त मन्द हो जाता है और वोही दवा जब दूसरा मरीज़ पीता है तो उस को मन्फी अस़र (REACTION) हो जाता और मज़ीद सख़्त अम्राज़ में मुब्तला या मा'जू़र हो जाता या मौत के घाट उतर जाता है। जब भी दवा पियें तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लीजिये या بِسۡمِ اللّٰهِ شَافِی بِسۡمِ اللّٰهِ كَافِی केह लीजिये।

रूह़ की सैराबी

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य (वह़ी) नाज़िल फ़रमाई कि "दुन्या से हर **रूह़** प्यासी जाती है सिवाए उस के जिस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ा होगा।"

(असरारुल फ़ातिह़ा, स़-फ़ह़ा:162)

उ़म्दगी से पढ़ने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते मौलाए काइनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِیۡم से रिवायत है, "एक शख़्स़ ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ को खू़ब उ़म्दगी से पढ़ा, उस की ***बख़्शिश*** हो गई।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:546, ह़दीस़ नंबर:2667)

नामे खु़दा عَزَّوَجَلَّ की मिठास बाइ़से नजात है

एक गुनहगार को मरने के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, " "مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟" या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया, "एक बार मैं एक मद्रसे की त़रफ़ से गुज़रा और एक पढ़ने वाले ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी, सुन कर मेरे दिल में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के मीठे मीठे नाम की मिठास ने अस़र किया और उसी वक़्त मैंने येह ग़ैबी आवाज़ सुनी, "हम दो चीज़ों को जम्अ़ न करेंगे। (1) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नाम की लज़्ज़त (2) मौत की तल्ख़ी।"

(अनीसुल वाइज़ीन, स़-फ़ह़ा:4)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नामे नामी इस्मे गिरामी से लज़्ज़त अन्दोज़ होने वाला, रह़मतों के साए में दुन्या से रुख़्सत होता है और मौत उस के लिये नजातो बख़्शिश का पयाम लाती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, वोह नुक्ता नवाज़ है, बज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाले आ'माल के सबब बड़े से

बड़े गुनहगारों को बख़्श दिया जाता है।

रह़मते ह़क़ "बहा" न मी जूयद   रह़मते ह़क़ "बहाना" मी जूयद

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत "बहा"(या'नी क़ीमत) त़लब नहीं करती बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो बहाना तलाश करती है।)

क़ियामत के लिये निराली सनद

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" में *बिस्मिल्लाह* के फ़वाइद में लिखा है कि एक वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मरते वक़्त वसिय्यत की थी कि मेरे कफ़न में بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिख कर रख देना। लोगों ने इस की वजह पूछी तो उन्हों ने जवाब दिया कि क़ियामत के दिन येह मेरी ***दस्तावेज़*** (या'नी तह़रीरी सुबूत) होगी जिस के ज़रीए से रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की दर-ख़्वास्त करूंगा।"

(तफ़्सीरे नईमी, पारह अव्वल स़-फ़ह़ा:42)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मिलेगा दोनों आ़लम का ख़ज़ाना पढ़ लो बिस्मिल्लाह
ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ चाहे तो हो जन्नत ठिकाना, पढ़ लो बिस्मिल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا إِلَى الله !   أَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तू अ़ज़ाब से बच गया

फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मशहूरो मा'रूफ़ किताब "**दुर्रे मुख़्तार**" में है एक शख़्स ने मरने से पहले येह वसिय्यत की कि इन्तिक़ाल के बा'द मेरे सीने और पेशानी पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिख देना। चुनान्चे ऐसा ही किया गया। फिर किसी ने ख़्वाब में उस शख़्स को देख कर ह़ाल पूछा, उस ने बताया कि जब मुझे क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए, जब पेशानी पर *बिस्मिल्लाह* शरीफ़ देखी तो कहा, "**तू अ़ज़ाब से बच गया !**"

(अद-दुर्रुल मुख़्तार म-अ़ रद्दुल मुह़तार जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:156)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कफ़न पर लिखने का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी कोई मुसल्मान फ़ौत हो जाए तो بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ वग़ैरा ज़रूर लिख लिया करें। आप की थोड़ी सी तवज्जोह बेचारे मरने वाले की बख़्शिश का ज़रीआ़ बन सकती है। और मय्यित के साथ हमदर्दी की नेकी आप की भी नजात का बाइ़स बन सक्ती है। ह़ज़रते अ़ल्लामा ***शामी*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, "यूं भी हो सकता है कि मय्यित की पेशानी पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखिये और सीने पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखिये। मगर नेहलाने के बा'द और कफ़न पेहनाने से पहले **कलिमे की उंगली** से लिखिये। रौशनाई (INK) से

न लिखिये। (रद्दुल मुहतार जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:157) ए'राब लगाने की ह़ाजत नहीं। "श-जरह या अ़हद नामा **क़ब्र** में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब **ताक़** खोद कर उस में रखें। बल्कि "**दुर्रे मुख़्तार**" में कफ़न में **अ़हद नामा** लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़्फ़िरत की उम्मीद है।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्स़ा:4, स़-फ़ह़ा:108)

जा, हम ने तुझे बख़्श दिया

क़ियामत के रोज़ अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते एक बन्दे को पकड़ लेंगे। हुक्म होगा कि इस के आ'ज़ा को देख लो इस में कोई नेकी है या नहीं ? चुनान्चे फ़िरिश्ते तमाम आ'ज़ा को देख डालेंगे, कोई नेकी नहीं मिलेगी। फिर फ़िरिश्ते उस से कहेंगे, "अब ज़रा अपनी ***ज़बान*** बाहर निकालो कि उस में देख लें कोई नेकी है या नहीं ?"जब वोह ज़बान निकालेगा तो उस पर सफ़ेद ख़त में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखा हुवा पाएंगे। उसी वक़्त हुक्म होगा, ***"जा, हम ने तुझे बख़्श दिया।"***

(नुज़्हतुल मजालिस जिल्द: अव्वल, स़-फ़ह़ा:25)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

गुनहगारो, न घबराओ, न घबराओ, न घबराओ
नज़र रह़मत पे रख्खो जन्नतुल फ़िरदौस में जाओ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम की बात है कि जिस को चाहे बख़्श दे। यक़ीनन उस शख़्स़ ने इख़्लास़ के साथ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी थी जो काम आ गई कि ***इख़्लास़*** के साथ किया जाने वाला बज़ाहिर छोटा अ़मल भी बहुत बड़ा द-रजा रखता है। चुनान्चे इमामुल मुख़्लिस़ीन, सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़मतुल लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने क़बूलिय्यत निशान है, "اَخلِصْ دِیْنَکَ یَکْفِکَ الْعَمَلُ الْقَلِیْلُ", "अपने दीन में मुख़्लिस़ हो जाओ थोड़ा अ़मल भी काफ़ी होगा।"

(अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:435, ह़दीस़ नं:7914)

हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ الوَالِی एक बुज़ुर्ग से नक़्ल करते हैं, "एक साअ़त का इख़्लास़ हमेशा की नजात का बाइस़ है। मगर **इख़्लास़** बहुत कम पाया जाता है।" (एह़्याउल उ़लूम, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:399)

ख़ालिस़ अ़मल की पहचान

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हवारियों ने आप عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया, "किस का अ़मल **ख़ालिस़** होता है ?" फ़रमाया, "उसी शख़्स़ का अ़मल **इख़्लास़** पर मब्नी माना जाएगा जो सिर्फ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करे और इस बात को ना पसन्द करे कि लोग इस अ़मल के सबब इस की ता'रीफ़ करें।"

(एह़्याउल उ़लूम जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:403)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे मुख़्लिस नबी सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का वासित़ा हमें बे सबब बख़्श दे । आमीन । हाए ! हाए ! नफ़्सो शैत़ान के हाथों हम तेज़ी के साथ तबाही के गढ़े में गिरते जा रहे हैं । आह ! आह ! आह ! "हौस़ला अफ़्ज़ाई" के नाम पर जब तक हमारे आ'माल और दीनी अफ़्आ़ल की ता'रीफ़ और वाह ! वाह ! नहीं की जाती हमें सुकून ही नहीं मिलता ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास़ ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

आफ़तें दूर होने का आसान विर्द

मौलाए काइनात, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि सुल्त़ाने **मक्कए मुकर्रमह**, ताजदारे मदी-नए मुनव्वरह, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "ऐ अ़ली ! كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न बता दूं जिन्हें तुम **मुसीबत** के वक़्त पढ़ लो ।" अ़र्ज़ किया, "ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरी जान क़ुरबान ! तमाम अच्छाइयां मैंने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से सीखी हैं" । इर्शाद फ़रमाया, "जब तुम किसी मुश्किल में फंस जाओ तो इस तरह पढ़ो :-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ　　وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

पस ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से जिन बलाओं को चाहेगा दूर फ़रमा देगा ।

(अ-मलुल यौमि वल लै-लति लिइब्नि सुन्नी स-फ़ह़ा:120)

मुश्किलें ह़ल होंगी (اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी ***बीमारी,*** क़र्ज़दारी, मुक़द्दमे बाज़ी, ***दुश्मन*** की त़रफ़ से ईज़ा रसानी, बे रोज़गारी या कोई सी भी आफ़ते ना गहानी आन पड़े । कोई चीज़ **गुम** हो जाए, किसी की बात सुन कर ***स़दमा*** पहुंचे, कोई मारे, दिल दुख जाए, ***ठोकर*** लगे, गाड़ी ख़राब हो जाए, ***ट्राफ़िक*** जाम हो जाए, कारोबार में ***नुक़्स़ान*** हो जाए, ***चोरी*** हो जाए, अल ग़-रज़ छोटी या बड़ी कोई सी भी परेशानी हो । وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ते रहने की आ़दत बना लीजिये । निय्यत स़ाफ़ होगी तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मन्ज़िल आसान होगी । ***मुश्किल*** की आसानी के लिये एक अ़मल येह भी है, क़ब्ल अज़ नमाज़े जुमुआ ग़ुसुल कर कि पाक स़ाफ़ लिबास पहन कर तन्हाई में ***या अल्लाहु*** 200 बार (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूदे पाक) पढ़ लीजिये । कैसी ही मुसीबत हो दूर होगी या कैसी ही ह़ाजत हो पूरी होगी । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र कर के दुआ़एं मांगने से भी बे शुमार इस्लामी भाइयों की मुश्किलात ह़ल होने के वाक़ेआ़त हैं । चुनान्चे

नई ज़िन्दगी

एक मज़दूर के गुर्दे फ़ेल हो गए। अ़ज़ीज़ों ने अस्पताल में दाख़िल करवा दिया। उस का औबाश भांजा इयादत के लिये आया। मामूं जान ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ियां गिन रहे थे। उस का दिल भर आया और आंखों से आंसू छलक पड़े। उस ने सुन रखा था कि ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान दुआ़ क़बूल होती है। चुनान्चे वोह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर चल दिया और ख़ूब गिड़गिड़ा कर मामूंजान की सिह़ह़त याबी के लिये दुआ़ की। ***जब वापस पल्टा तो मामूं जान सिह़ह़त याब हो कर घर भी आ चुके थे। और अब नमाज़ के लिये घर से निकल कर ख़िरामां ख़िरामां जानिबे मस्जिद रवां दवां थे।*** येह रह़मत भरा मन्ज़र देख कर उस नौ जवान ने गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा की और अपने आप को म-दनी रंग में रंग लिया

मर्ज़ गंभीर हो, गर चे दिलगीर हो
होंगी ह़ल मुश्किलें, क़ाफ़िले में चलो
ग़म के बादल छटें, और ख़ुशियां मिलें
दिल की कलियां खिलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى اللّٰه ! أَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल की गेहराई से निक्ली हुई दुआ़ कभी रद नहीं हो सक्ती। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जो भी दुआ़ मांगी जाए वोह लाज़िमन क़बूल होती है और क्यूं न हो कि ख़ुद हमारे प्यारे प्यारे सच्चे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का सच्चा फ़रमान है :-

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।"

(पारह:24,अल मुअमिन आयत:60)

वस्वसा : ख़ुदाए ह़मीद عَزَّوَجَلَّ कलामे मजीद में जब ख़ुद इर्शाद फ़रमाता है कि "मुझ से दुआ़ करो, मैं क़बूल करूंगा" मगर बारहा क़बूलिय्यते दुआ़ का इज़्हार नहीं होता। म-स्-लन : दुआ़ की जाती है फ़ुलां जगह नौकरी मिल जाए मगर नहीं मिलती।

वस्वसे का इलाज : क़बूल होने के मा'ना समझने में ख़ता खाने की वजह से शैत़ान ***वस्वसे*** डालता है। दुआ़ क़बूल ही क़बूल है। क़बूलिय्यत की सू-रतें मुख़्तलिफ़ है, क़बूलिय्यते दुआ़ की ***तीन सू-रतें*** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) जो उसने मांगा वोह न दिया गया कि उस के ह़क़ में बेहतर न था और वोह अर्ह़मुर राह़िमीन جَلَّ جَلَالُه अपने बन्दों के ह़क़ में बेह़तरी चाहता है।

وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۠

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क़रीब है के कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो । और क़रीब है के कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।

(पारह:2, अल ब-क़-रह आयत:216)

(2) उस दुआ़ मांगने वाले पर कोई सख़्त बला व मुसीबत आनी थी । जिसे उस का परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ इस बज़ाहिर क़बूल न होने वाली दुआ़ के सिले में दूर फ़रमा देता है । म-स़-लन : इतवार को बा'दे नमाज़े मग़रिब स्कूटर के ह़ादिसे में उस का पांव टूटने वाला था और अ़स्र की नमाज़ में इस ने दुआ़ मांगी, ***या अल्लाह !*** फ़ुलां पर मेरा 1000/- रूपिया क़र्ज़ है वोह आज मग़रिब के बा'द मिल जाए । येह नमाज़े मग़रिब अदा कर के स़ह़ीह़ सलामत मक़रूज़ के पास पहुंच गया । उस ने कर्ज़ नहीं लौटाया, येह दुआ़ मांगने वाला समझा कि मेरी दुआ़ क़बूल नहीं हुई । मगर इस बे ख़बर को क्या ख़बर के मक़रूज़ के पास पहोंचने से क़ब्ल हादिसे में इस का जो पांव टूटने वाला था वोह इस दुआ़ की ब-र-कत से नहीं टूटा !

(3) येह कि जो मांगा वोह नहीं दिया जाता बल्कि उस दुआ़ के इवज़ आख़िरत में स़वाब का ज़ख़ीरा अ़त़ा किया जाएगा । जैसा कि ह़दीसे़ पाक में फ़रमाया, ''जब बन्दा आख़िरत में अपनी उन दुआ़ओं का स़वाब देखेगा जो दुन्या में मक़्बूल न हुई थीं, तमन्ना करेगा, ''काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ़ क़बूल न होती और सब यहीं (या'नी आख़िरत) के वासित़े जम्अ़ हो जातीं ।'' (अह़सनुल विआ़अ, स़-फ़ह़ा:37,ह़ाशिया मअ़ तौज़ीह) एक ह़दीसे़ पाक में है, ''जिस को दुआ़ की तौफ़ीक़ दी जाए दरवाज़े बिहिश्त (या'नी जन्नत) के उस के लिये खोले जाएंगे ।''

(अह़सनुल विआ़अ स़-फ़ह़ा:141)

"बिस्मिल्लाह" की दीवानी

एक मुबल्लिग़ इज्तिमाअ़ में **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ के फ़ज़ाइल बयान फ़रमा रहे थे । एक यहूदन लड़की फ़ज़ाइले **बिस्मिल्लाह** सुन कर बे हद मु-त-अस्सिर हुई और उस ने ***इस्लाम*** क़बूल कर लिया । उस की ज़बान पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ का ***विर्द*** जारी हो गया । हर वक़्त उठते,बैठते,सोते,जागते,चलते फिरते **बिस्मिल्लाह** पढ़ती रहती । लड़की के काफ़िर मां-बाप उस से सख़्त नाराज़ रहने और उस को त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें देने लगे । नीज़ इस्लाम दुश्मनी के सबब इस कोशिश में लग गए कि अपनी बेटी पर कोई इल्ज़ाम आइद कर के مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस को ***क़त्ल*** करवा दें । चुनान्चे एक दिन उस के बाप ने जो कि बादशाहे वक़्त का **वज़ीर** था । शाही मोहर वाली **अंगूठी** बेटी को रखने के लिये दी, بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर उस ने ली और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर जेब में डाल ली । रात को जब वोह सो गई तो उस के बाप ने उस की जेब से **अंगूठी** निकाल कर दरिया में डाल दी एक **मछली** ने वोह अंगूठी निगल ली । सुब्ह़ को एक माहीगीर ने जाल डाला तो इत्तिफ़ाक़ से वोही मछली जाल में फंस गई, उस ने ला कर वज़ीर को तोह-फ़तन दे दी, वज़ीर

ने पकाने के लिये लड़की के ह़वाले की। उस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ केह कर मछली ली, जब بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ केह कर उस का पेट चाक किया तो उस में से **अंगूठी** निकल पड़ी, उस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर जेब में डाल ली और मछली पका कर बाप के आगे रख दी। खाना खाने के बा'द जब दरबार का वक़्त आया, बाप ने लड़की से **अंगूठी** त़लब की। उस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर जेब से निकाल कर दे दी। बाप येह देख कर ह़ैरानो शश्दर रह गया और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने **बिस्मिल्लाह की दीवानी** को क़त्ल से मह़फ़ूज़ फ़रमा लिया। (लम्आ़ने सूफ़िया)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*

बिस्मिल्लाह लिखने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जिस ने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम के लिये उ़म्दा शक्ल में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ तह़रीर किया ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देगा।"

(अद दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:27)

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के पीरो मुर्शिद सय्यिदुल वासिलीन, इमामुल कामिलीन, ह़ज़रते सय्यिदुना शाह ***आले रसूल*** क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम सिन 1297 हिजरी जु-म'रात ब-वक़्ते ज़ोहर विस़ाल फ़रमाया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़िन्दगी की आख़िरी तह़रीर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ थी। सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विस़ाल शरीफ़ की रिक़्क़त अंगेज़ मन्ज़र कशी करते हुए फ़रमाते हैं, "रोज़े विस़ाल नमाज़े सुब्ह़ (फ़ज्र) पढ़ ली थी और हुनूज़ (या'नी अभी) वक़्ते ज़ोहर बाक़ी था कि इन्तिक़ाल फ़रमाया। नज़्अ़ में सब ह़ाज़िरीन ने देखा कि आंखें बन्द किये मु-तवातर सलाम फ़रमाते थे। (येह इस त़रफ़ इशारा मा'लूम होता है कि औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की अरवाहे मुक़द्दसा इस्तिक़बाल के लिये जमा' हो रही थीं।) जब चन्द सांस बाक़ी रहे, हाथों को आ'ज़ाए वुज़ू पर यूं फेरा गोया वुज़ू फ़रमा रहे हैं। यहां तक कि इस्तिन्शाक़ (या'नी नाक की स़फ़ाई) भी फ़रमाया। سُبۡحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह अपने त़ौर पर ह़ालते बेहोशी में नमाज़े ज़ोहर भी अदा फ़रमा गए। जिस वक़्त रूहे पुर फ़ुतूह ने जुदाई फ़रमाई, फ़क़ीर सिरहाने ह़ाज़िर था। وَاللّٰہِ الْعَظِیْم एक नूरे मलीह़ (या'नी ह़सीन नूर) अ़लानिया नज़र आया (या'नी जो भी मौजूद था वोह देख सकता था) कि सीने से उठ कर बर्क़े ताबिन्दह (या'नी चमकदार बिजली) की त़रह़ चेहरे पर चमका जिस त़रह़ लम्आ़ने ख़ुरशीद (या'नी सूरज की रौशनी) आईने में जुंबिश करता है। येह ह़ालत हो कर ग़ाइब हो गया इस के साथ ही रूह़ बदन में न थी। पिछला (या'नी आख़िरी) कलिमा ज़बाने फ़ैज़ तर्जुमान से निकला, लफ़्ज़ ***"अल्लाह"*** था व बस। और ***अख़ीर तह़रीर*** के दस्ते मुबारक से हुई بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ थी कि इन्तिक़ाल से दो रोज़ पेहले एक कागज़ पर लिखी थी। बा'द, फ़क़ीर (या'नी सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने हुज़ूरे पीरो मुर्शिदे बर ह़क़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रुअ-या (या'नी ख़्वाब) में देखा कि ह़ज़रत

वालिदे माजिद قُدِّسَ سِرُّهُ الْمَاجِد के मर्क़द (मज़ार) पर तशरीफ़ लाए। गु़लाम ने अ़र्ज़ किया, "हु़ज़ूर ! यहां कहां ?" फ़रमाया, "आज से, या अब से यहीं रहा करेंगे।"

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत स़-फ़ह़ा:67, मक्तबा न-बविय्या लाहौर)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*

अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखने का अ़ज़ीम स़वाब पाने के लिये हो सके तो कभी कभी बा वुज़ू ***ख़ुश ख़त़ी*** के साथ क़ागज़ वग़ैरा पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ तह़रीर फ़रमा लिया करें, लेकिन बे अ-दबी की जगह हरगिज़ न लिखिये, दीवारों पर भी आयातो मुक़द्दस कलिमात मत लिखिये कि आहिस्ता, आहिस्ता लिखाई के ज़र्रात ज़मीन पर झड़ जाते हैं। (लिहाज़ा मसाजिद में भी इस अदब का ख़याल रखिये।) और ज़मीन पर लिखने के बारे में तो ख़ुद हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने स़रा-ह़तन मन्अ़ फ़रमा दिया है, चुनान्चे

ज़मीन पर लिखना

हुज़ूरे पुर नूर, शाहे ग़यूर, शाफ़ेए यौमुन नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक जगह से गुज़रे जहां ***ज़मीन*** पर कुछ लिखा हुवा था। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़रीब बैठे हुए नौ जवान से इस्तिफ़्सार फ़रमाया, "येह क्या लिखा हुवा है ?" उसने अ़र्ज़ की, "**बिस्मिल्लाह**।" फ़रमाया, "ऐसा करने वाले पर ला'नत हो, **बिस्मिल्लाह** को उस की जगह पर ही रख्खो।"

(अद दुर्रुल मन्सूर जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:29)

अज़ ख़ुदा جَلَّ ***ख़्वाहीम तौफ़ीक़े अदब***
बी अदब मह़रूम गश्त अज़ फ़ज़्ले रब جَلَّ

(हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अदब की तौफ़ीक़ के त़लबगार हैं कि बे अदब फ़ज़्ले रब से मह़रूम हो कर दर बदर ज़लीलो ख़्वार फिरता है।)

हर ज़बान के हुरूफ़ की ता'ज़ीम कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़मीन पर किसी भी ज़बान में कोई लफ़्ज़ नहीं लिखना चाहिये बा'ज़ औक़ात लोग समझते हैं कि अंग्रेज़ी ज़बान का अदब करने की ज़रूरत नहीं है। येह उन की सख़्त ग़लत फ़ह्मी है। ग़ौर तो फ़रमाइये ! अगर अंग्रेजी में ALLAH लिखा होगा तो क्या आप अदब नहीं करेंगें ? करेंगे और यक़ीनन करेंगे। यहां तक कि अगर तौहीन की निय्यत से مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ उस पर पांव रख दे या पटख़ दे तो काफ़िर हो जाएगा। बहर ह़ाल अंग्रेज़ी और दुन्या की हर ज़बान के हुरूफ़ का अदब करना चाहिये। ***तफ़्सीरे कबीर शरीफ़*** जिल्द अव्वल स़-फ़ह़ा : 396 के मुत़ाबिक़ **दुन्या में बोली जाने वाली तमाम ज़बानें इल्हामी हैं।** ज़ाहिर है ज़मीन पर किसी भी ज़बान में लिखने से उस की बे अ-दबी यक़ीनी है, आज कल ट्राफ़िक के मह्कमे की जानिब से रहनुमाई के लिये सड़कों पर बाज़ तह़रीरें होती हैं येह ग़लत त़रीक़ा है। काश सिर्फ़ रंग बिरंगे (मगर सब्ज़ के इलावा) पट्टों से काम चलाया जाता। दरवाज़ों पर ऐसे ***पायदान*** न रखें जाएं जिन पर WEL COME लिखा होता है। अफ़्सोस ! आजकल हुरूफ़ का अदब करना तक़रीबन ना मुम्किन हो गया है। उ़मूमन बिछाने की दरी व चादर पर नीज़ फ़ोम के गदेलों के अस्तर और पलंग की चादरों पर कंपनी या डेकोरेशन का नाम तह़रीर होता है, W.C. पर, चप्पलों और जूतों के अन्दरूनी हिस्सों बल्कि तल्वों पर और कपड़े की कनारियों पर कारख़ाने के नाम वग़ैरा की लिखाई होती है। बा'ज़ औक़ात सिलाई में पाजामें के अंदर बैठने की जगह पर तह़रीर आ जाती है तो मु-सल्सल बे अ-दबी का सिल्सिला रेहता है। बल्कि सब से ज़ियादा तश्वीशनाक बात येह है कि उ़मूमन हर "लाल ईंट" पर और "फ़्लोर टाइल" के नीचे लिखाई होती है। भट्टे की लाल ईंटों और फ़्लोर टाइल्ज़ की लिखाई ग्राइन्डर से मिटाई जा सक्ती है और ज़ियादा मिक़्दार में ख़रीदने वाले कारख़ाने वालों से बिग़ैर लिखाई के भी बनवा सकते हैं मगर इतनी सारी ज़ह्मतें उठाने वाला बा अदब म-दनी ज़ेह्न कैसे बने ? ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दह तौफ़ीक़ से सब मुम्किन है। एकबार (बाबुल मदीना) कराची में फ़र्श पर रखी एक लाल ईंट की लिखाई देख कर सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का दिल बे क़रार हो गया उस पर ***उ़मर*** लिखा

हुवा था। लाल ईंटें ह़म्माम में, बैतुल ख़ला में हर जगह की दीवारो फ़र्श में इस्ते'माल होती हैं। येह अल्फ़ाज़ लिखते हुए माज़ी की एक दिल ख़राश याद ज़ेह्न पर उभर रही है उस को भी अ़र्ज़ किये देता हूं।

मदीना शरीफ़ की एक दिल ख़राश याद

मस्जिदुन न-बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मश्रिक़ी जानिब बाबे जिब्रईल के सामने एक क़दीम गली थी जो कि जन्नतुल बक़ीअ़ की त़रफ़ जाती थी उस मुक़द्दस गली को उ़श्शाक़ **बिहिश्ती गली** कहा करते थे, उस में कई यादगारें म-स़-लन : अहले बैते अत़्हार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मकानाते त़य्यिबात वग़ैरा थे, अब वोह मीठी मीठी ह़क़ीक़ी **म-दनी गली** शहीद कर दी गई है। सिन 1400 हिजरी की एक सुहानी शाम को (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) उसी **बिहिश्ती गली** से गुज़र रहा था कि **गटर** के एक ढक्कन की अ़-रबी लिखाई पर नज़र पड़ी। ग़ौर से देखा तो उस पर लोहे की ढलाई से ***"मजारियुल मदीना"*** तह़रीर था मैंने जज़्बए अ़क़ीदत में उस तह़रीर को चूम लिया और जिन बद नसीबों ने मेरे मीठे मीठे ***मदीना*** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا के नाम को **गटर** के ढक्कन पर लिखवाया उन से मेरे दिल में इस क़दर शदीद नफ़रत पैदा हुई कि मैं बता नहीं सकता। चूमता हुवा देख कर एक य-मनी बूढ़े ने मुझे झिड़का, मैं सर नीचा किये तेज़ी से आगे बढ़ गया। अभी थोड़ा ही चला था कि पीछे से किसी के ***सलाम*** करने की आवाज़ आई, मैं ने मुड़ कर देखा तो कोई पाकिस्तानी था, बड़े पुर तपाक त़रीक़े से मिला और तअ़ज्जुब की बात येह है कि मुझ से मा'ज़ेरत करते हुए केहने लगा, "उस य-मनी बूढ़े का बुरा मत मनाइयेगा।" मज़ीद उसने कहा, ***"मस्जिदुन न-बवी शरीफ़*** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में हाज़िरी का अन्दाज़ देख कर मुझे कशिश हुई और मैं मुसल्सल आप का पीछा किये चला आ रहा हूं और आप की हर नक़्लो ह़-र-कत का जाइज़ा ले रहा हूं, आप मेरे मकान पर क़ियाम कर लीजिये।" मैं ने जवाब दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे पास क़ियाम की सहूलत मौजूद है।" कहा, "खाना ही खा लीजिये।" मैं ने जवाब दिया, "इस की फ़िल ह़ाल ह़ाजत नहीं।" कहा, "मेरी त़रफ़ से कुछ रक़म क़बूल कर लीजिये," मैं ने शुक्रिया अदा करते हुए कहा, "मैं ह़ाजत मन्द नहीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे पास अख़्राजात मौजूद हैं।" बहर ह़ाल वोह ख़ुश अ़क़ीदा शख़्स़ था और उस ने मुझ से बहोत ही मह़ब्बत का इज़्हार किया, मेरे लिये वोह अज्नबी था और उस के बा'द फिर कभी उस से मुलाक़ात नहीं हुई। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस को इस का अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए। और हर मुसल्मान को बे अ-दबी और बे अ-दबों के शर से मह़फ़ूज़ रखे।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

मह़फ़ूज़ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *रखना सदा बे अ-दबों से*
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सियाने की दलील

अ़-रबी में ***मदीना*** के मा'ना "शहर" है। इस लिये गटर के ढक्कन पर ***मदीना*** लिखने में ह़-रज नहीं।

दीवाने का जवाब

अ़-रबी में शहर के लिये ब-लद का लफ़्ज़ भी मा'रूफ़ है। मदी-नए मुनव्वरह की शहरी इन्तिज़ामिया को भी ब-लदिय्या ही केहते हैं आख़िर ऐसा प्यारा नाम ***मदीना*** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًا **गटर** के ढक्कन ही पर लिखने की क्यूं सूझी ? अ़-रबी ज़बान के इ़लावा ब-शुमूल **उर्दू** दुन्या की किसी भी ज़बान में जब ***मदीना*** कहा जाएगा तो हर एक उस से मुराद मदी-नतुन नबी عَلٰی صَاحِبِھَاالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही लेगा। बल्कि उ़-लमाए किबार رَحِمَھُمُ اللہُ الْغَفَّار ने मदी-नए मुनव्वरह زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًا के जो मु-त-अ़द्दद अस्माए मुबा-रका तह़रीर फ़रमाए हैं उन में मुजर्रद (या'नी तन्हा) लफ़्ज़ ***मदीना*** भी शामिल किया है। और इस को मदी-नतुल मुनव्वरह زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًا की तारीख़ पर लिखी हुई किताबों में देखा जा सकता है। म-स्-लन : अ़ल्लामा नूरुद्दीन अ़ली बिन अह़मद अस्सम्हूदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने वफ़ाउल वफ़ा जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:22 में मदीना शरीफ़ के बहुत सारे अस्माए मुबा-रका लिखे हैं उन में एक नाम ***मदीना*** भी लिखा है। बहर ह़ाल किसी भी ज़ाविये से **गटर** के ढक्कन पर मदीना बल्कि **अल मदीना** लिखने को उ़श्शाक़ का दिल तस्लीम कर ही नहीं सकता। "**अल मदीना**" क्या है येह तो उ़श्शाक़ का दिल ही जानता है। आ़शिक़ों के इमाम, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवा-नए शम्ए रिसालत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के नज़दीक ***मदीना*** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًا की अहम्मिय्यत मुला-ह़ज़ा हो। चुनान्चे फ़रमाते हैं :

नामे मदीना ले दिया चलने लगी नसीमे ख़ुल्द
सोज़िशे ग़म को हम ने भी कैसी हवा बताई क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के भाई जान ह़ज़रत ***मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान*** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان यूं इज़्हारे तमन्ना करते हैं।

रहें उन के जल्वे बसें उन के जल्वे
मेरा दिल बने यादगारे मदीना

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसा : **गटर** फिर **गटर** होता है इस का ढक्कन चूमना सख़्त मा'यूब है।

इलाजे वस्वसा : **गटर** का ढक्कन ऊपर होता है मवाद अन्दर। सूखे हुए ढक्कन को जिस पर नजासत का कोई ज़ाहिरी अस़र न हो उस को नापाक केहने की कोई वजह नहीं, लिहाज़ा ***मदी-नतुल मुनव्वरह*** زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًا के अल मदीना लिखे हुए सूखे हुए ढक्कन को इ़श्क़ो मस्ती में चूमने को اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या का कोई भी मुफ़्तिये इस्लाम ना जाइज़ नहीं कहेगा। सरकारे वाला तबार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस दियार के ढक्कन पर लिखे हुए ***अल मदीना*** को चूमना और मस्ती में झूमना सिर्फ़ ***आ़शिक़ाने मदीना*** کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का ह़िस्स़ा है। मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीवानो, मदीने के मस्तानो और शम्ए बज़्मे रिसालत के परवानो झूम झूम कर कहिये।

अल मदीना से हमें तो प्यार है

إن شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ *अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी की बख़्शिश हो गई

एक नेक आदमी ने अपने भाई को ***नशा*** करने के बाइस़ अपने पास बुला कर सज़ा दी, वापसी में वोह पानी में डूब कर फ़ौत हो गया। जब उसे दफ़्न कर चुके तो उसी रात उस नेक शख़्स़ ने ख़्वाब देखा कि **उस का मर्हूम भाई जन्नत में टहल रहा है।** उस ने पूछा, ''तू तो शराबी था और नशे ही की ह़ालत में **मरा** फिर तुझे ***जन्नत*** कैसे नस़ीब हुई ? वोह केहने लगा, ''आप से मार खाने के बा'द जब मैं वापस हुवा तो राह में एक काग़ज़ देखा जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ तह़रीर था, मैं ने उसे उठाया और निगल लिया। फिर पानी में गिर गया और दम निकल गया। जब **क़ब्र** में पहोंचा तो मुन्कर नकीर के सुवालात पर मैं ने अ़र्ज़ किया, ''आप मुझ से सुवालात फ़रमा रहे हैं, ह़ालां कि मेरे प्यारे परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ का पाक नाम मेरे पेट में मौजूद है। इतने में ग़ैब से आवाज़ आई, ''صَدَقَ عَبْدِیْ قَدْ غَفَرْتُ لَهٗ'' या'नी मेरा बन्दा सच केहता है बेशक मैं ने इसे बख़्श दिया।

(नुज़्हतुल मजालिस, जिल्द अव्वल स़-फ़ह़ा:27)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़्मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا إِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

काश ! हर मुसल्मान तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** के साथ वाबस्ता हो कर सुन्नतें सीखने सिखाने वाले आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शामिल हो जाए। हर दर्स और हर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर हाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल करे और इस के लिये सिद्क़े दिल से जिद्दो जोह्द करे जैसा कि

मग़्फ़िरत का इन्आ़म

एक इस्लामी भाई का बयान है, येह उन दिनों की बात है जब बाबुल मदीना कराची में मुन्अ़क़िद होने वाले तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की तैयारियां ज़ोरो शोर से जारी थीं। म-दनी क़ाफ़िले लाने के लिये ***मु-त-अ़द्दद*** शहरों से बाबुल मदीना कराची के लिये ख़ुसूस़ी ट्रेनों का सिल्सिला था। उन्हीं दिनों हमारे एक अ़ज़ीज़ फ़ौत हो गए। चन्द रोज़ के बा'द घर के किसी फ़र्द ने मर्हूम को ख़्वाब में देख कर जब ह़ाल पूछा तो केहने लगे, ''मैं ने कराची में होने वाले ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत से ख़ुसूस़ी ट्रेन में निशस्त बुक करवाई थी।और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सच्ची निय्यत के सबब मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।''

रह़्मते ह़क़ "बहा" न मी जूयद

रह़्मते ह़क़ "बहाना" मी जूयद

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़्मत "बहा" या'नी कीमत नहीं मांगती। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़्मत तो "बहाना" ढूंढती है।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छी निय्यत की ब-र-कतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने? अच्छी निय्यत का किस क़दर बुलन्द रुत्बा है कि अ़मल करने का मौक़ा' न मिलने के बा वुजूद इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत करने वाले खुश नसी़ब की मग़्फ़िरत कर दी गई। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बस़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "इन्सान को चन्द रोज़ के अ़मल से नहीं अच्छी निय्यत से जन्नत ह़ासि़ल होगी।"

(कीमियाए सआ़दत, जिल्द: 2, स़-फ़ह़ा : 861)

याद रखिये ! निय्यत दिल के इरादे को केहते हैं। दिल में इरादा न होने की सूरत में ख़ाली हां कर देने से निय्यत का स़वाब नहीं मिलता। म-स्-लन : किसी से कहा गया, कि कल आना। उस ने हां केह दिया और दिल में येह इरादा है कि नहीं जाऊंगा तो येह झूटा वा'दा हुवा और झूटा वा'दा करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। जब ***नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, रह़्मते आ़लम, शाहे बनी आदम*** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये तशरीफ़ ले गए तो फ़रमाया, "मदी-नए त़य्यिबा में कुछ लोग हैं कि हम जो भी वादी तै़ करते हैं या ऐसी जगह को पामाल करते हैं जिस से कुफ़्फ़ार को गु़स्स़ा आए नीज़ हम कोई माल ख़र्च करते हैं या हम भूके होते हैं तो वोह इन तमाम बातों में हमारे साथ शरीक होते हैं ह़ालांकि वोह मदी-नए मुनव्वरह में हैं। स़ह़ा-बए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ***या रसूलल्लाह !*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कैसे ? वोह तो हमारे साथ नहीं हैं।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "उन्हें उ़ज़्र (या'नी मजबूरी) ने रोक रखा है।(वोह इस लिये स़वाब के ह़क़दार क़रार पाए कि शिर्कत की पक्की निय्यत होने के बावुजूद मजबूरन शरीक न हो सके थे।)

(सु-ननुल कुब्रा लिल बैहक़ी, जिल्द:9,स़-फ़ह़ा :14 ,किताबुस सियर)

जो शख़्स़ अल्लाह तआ़ला की (रिज़ा जूई) के लिये खु़श्बू लगाए तो वोह क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस की खु़श्बू कस्तूरी से ज़ियादा महक रही होगी और जो आदमी ग़ैरे खु़दा की ख़ात़िर खु़श्बू लगाए वोह क़ियामत के दिन यूं आएगा कि उस की बू मुर्दार से ज़ियादा बदबू दार होगी।

(मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:319, ह़दीस़ नंबर:7932, एह़्याउल उ़लूम, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:813)

हु़ज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوَالِي कीमियाए सआ़दत में ह़दीसे़ पाक नक़्ल करते हैं, "सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जो शख़्स़ इस निय्यत से क़र्ज़ ले कि वापस नहीं करेगा तो वोह चोर है"।

(अत तरग़ी़ब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:602)

अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर

ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान ! वोह बे नियाज़ है। किस बन्दे के साथ उस की क्या ***ख़ुफ़्या तदबीर*** है येह कोई नहीं जानता कि जब वोह नवाज़ने पर आता है तो बज़ाहिर बहुत ही छोटे से अ़मल पर जन्नत की आ'ला ने'मतों से मालामाल फ़रमा देता है और जब गरिफ़्त करने पर आता है तो किसी एक स़ग़ीरह गुनाह पर पकड़ लेता है। लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि किसी भी नेकी को हरगिज़ तर्क न करे और गुनाह से हर सूरत में अपने आप को बचाए और हर ह़ाल में रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की ***बे नियाज़ी*** से डरता रहे। ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रहमान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नक़्ल करते हैं :

रौंगटे खड़े कर देने वाली ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बस़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने अह़बाब के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे कि लोग एक मक़्तूल (या'नी क़त्ल किये हुए मुर्दे) को घसीटते हुए वहां से गुज़रे। सय्यिदुना ह़सन बस़री ने जब मक़्तूल की शक्ल देखी तो एक दम ***बेहोश*** हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। जब होश आया, किसी ने माजरा दर्याफ़्त किया तो फ़रमाया, "येह ***मक़्तूल*** किसी वक़्त बहुत बड़ा अ़ाबिदो ज़ाहिद था। लोगों का तजस्सुस बढ़ा। अ़र्ज़ किया, "या सय्यिदी ! हमें तफ़्स़ीली वाक़ेआ़ इर्शाद फ़रमाइये !" फ़रमाया,"येह ***अ़ाबिद*** एक रोज़ नमाज़ के लिये घर से चला तो रास्ते में एक ईसाई लड़की पर नज़र पड़ गई और एक दम उस के दिल में इश्क़ की आग शो'ला ज़न हुई और उस के फ़ित्ने में पड़ गया, उस से शादी का मुत़ा-लबा किया, उस ने शर्त रखी कि ईसाई हो जाओ। कुछ अ़र्सा ***अ़ाबिद*** ने ज़ब्त़ किया मगर आख़िरे कार शह्वत के हाथों लाचार हो कर इस्लाम छोड़ कर नस़रानी बन गया। जब उस ने लड़की को आ कर ख़बर दी तो वोह बिफर गई और नफ़रीन[1] करते हुए कहा, "***ओ बद नस़ीब !*** तेरे अन्दर कोई भलाई नहीं, तूने अपने दीन से वफ़ा नहीं की तो किसी और के साथ क्या वफ़ा करेगा ! ***बद बख़्त !*** तूने शह्वत से बद मस्त हो कर उ़म्र भर की इ़बादतो रियाज़त बल्कि अपना दीन तक दाव पर लगा गिया ! ***ले सुन ! तू इस्लाम से फिर कर मुर्तद हो चुका है और*** اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***मैं ईसाइयत को छोड़ कर मुसल्मान हो चुकी हूं।*** येह केह कर उस ने ***सू-रतुल इख़्लास़*** की तिलावत की, किसी सुनने वाले ने ह़ैरत से पूछा, "येह तुझे कैसे याद हो गई ?" केहने लगी, "दर अस़्ल बात येह है कि ख़्वाब के अन्दर मैं जहन्नम में दाख़िल होने लगी, अचानक एक स़ाह़िब वहां आ गए और मुझे तसल्ली देते हुए केहने लगे, "डरो मत, तुम्हारी जगह उसी शख़्स़ को फ़िदया बना दिया गया है। इतने में येह अ़ाशिक़े ना शादो ना मुराद मेरी जगह जहन्नम में जाने के लिये आ गया। फिर वोह स़ाह़िब मुझे जन्नत में ले गए वहां मैं ने येह लिखा हुवा देखा,

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَ يُثْبِتُ ۚۖ وَ عِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ○

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जो चाहे मिटाता और स़ाबित करता है और अस़्ल लिखा हुवा उसी के पास है।

(पारह:13 अर्रअ़्द आयत:39)

फिर उन्हों ने मुझे *सू-रतुल इख़्लास* याद करवाई, जब मैं बेदार हुई तो येह मुझे याद हो चुकी थी।

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया, "वोह ख़ुश नसीब लड़की तो मुसल्मान हो गई लेकिन बद नसीब आबिद शहवत से मग़्लूब हो कर मुर्तद होने के बा'द आज क़त्ल कर दिया गया। نَسْأَلُ اللهَ الْعَافِيَة हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आफ़ियत का सुवाल करते हैं।

(बहरुद्दुमूअ, अल फ़स्लुस्सादिस अ़श्र स-फ़हा:76)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की ***ख़ुफ़्या तदबीर*** से हर एक को हर दम डरते रहना चाहिये हम में से किसी को नहीं मा'लूम कि हमारा ख़ातिमा ईमान पर होगा या नहीं। आह ! आह ! आह ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम दुन्या में पैदा हो कर सख़्त तरीन आज़माइश में पड़ गए, इस मुआ-मले में तो जानवर और कीड़े मकोड़े अच्छे रहे कि न उन्हें सल्बे ईमान का ख़ौफ़, न सकरात व क़ब्रो हश्र की होलनाकियों की वहशत, न अ़ज़ाबे जहन्नम का डर।

काश के मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता | *क़ब्रो हश्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता*
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है | *काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता*

आह ! कस्रते इस्यां हाए ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है, हमें उस से हर दम डरते रहना चाहिये, ईमान की हिफ़ाज़त के मुआ-मले में कभी भी ग़फ़्लत नहीं करना चाहिये, बुरी सोहबत में हलाकत ही हलाकत और अच्छी सोहबत और अच्छों से महब्बत व निस्बत में हर तरह से आफ़ियत है। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलम गीर ग़ैर सियासी तहरीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माहौल से मुन्सलिक हो कर जो उ़म्र भर वाबस्ता रेहता है उस पर वोह रहमतें बरस्ती हैं कि सुनने वाले वर्त़ए हैरत में डूब जाते हैं। चुनान्चे

मदीने का मुसाफ़िर

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़ा नया आबाद के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में पेश करता हूं, उन का केहना है कि मेरे वालिदे बुज़ुर्ग वार ***हाजी अ़ब्दुर्रहीम अ़त्तारी*** (पटनी) जिन की उ़म्र कमोबेश **70** साल थी। इब्तिदाई दौर दुन्या की रंगीनियों की नज़्र रहा मगर फिर اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल की ब-र-कत से ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बर्पा हो गया। **1995** ईसवी में जब दूसरी बार हज का मुज़्दए जां फ़िज़ा मिला तो उन की ख़ुशी क़ाबिले दीद थी। जैसे जैसे रवान्गी का वक़्त क़रीब आ रहा था ख़ुशी दो चन्द होती जा रही थी। आख़िर उन की ख़ुशियों की मे'राज का वक़्त क़रीब आ गया। रात **4.00** बजे एरपोर्ट की तरफ़ रवान्गी थी। पूरी रात ख़ुशी ख़ुशी तैयारी में मश्ग़ूल रहे, मेहमानों से घर भरा हुवा था तक़रीबन **3.00** बजे एहराम बराबर में रख कर अपने कमरे में लेट गए। मैं भी लेट गया, अभी ब-मुश्किल पन्दरह15 मिनट हुए होंगे कि मेरे कमरे के दरवाज़े पर दस्तक पड़ी। चौंक कर दरवाज़ा

खोला तो सामने वालिदा परेशानी के आ़लम में खड़ी फ़रमा रही थीं, तुम्हारे वालिद साहि़ब की त़बीअ़त ख़राब हो गई है। मैं ब-उ़ज्लत तमाम पहुंचा तो वालिद साहि़ब बे क़रारी के साथ सीना सहला रहे थे, फ़ौरन अस्पताल ले जाया गया डॉक्टर ने बताया कि हार्ट अटेक हुवा है। घर में कोहराम मच गया के कुछ ही दैर बा'द सफ़रे मदीना के लिये रवान्गी है और वालिद साहि़ब को येह क्या हो गया ! अफ़्सोस तै़यारह वालिद साहि़ब को लिये बिग़ैर ही सूए मदीना परवाज़ कर गया। वालिदे मोहतरम **5** दिन अस्पताल में रहे। इस दौरान मज़ीद चार बार दिल का दौरा पड़ा। मगर اَلحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से होश के आ़लम में उन की एक भी नमाज़ क़ज़ा न हुई। जब भी नमाज़ का वक़्त आता तो कान में अ़र्ज़ कर दी जाती, नमाज़ पढ़ लें, आप फ़ौरन आंख खोल देते। ***तयम्मुम*** करा दिया जाता और आप नक़ाहत के बाइ़स इशारे से नमाज़ पढ़ लेते। आख़िरी "अटेक" पर फिर बे होश हो गए। इशा की अज़ान पर आंखें झपकीं तो मैं ने फ़ौरन अ़र्ज़ किया, अब्बा जान नमाज़ के लिये ***तयम्मुम*** करवा दूं, इशारे से फ़रमाया, हां। اَلحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने ***तयम्मुम*** करवाया और वालिद साहि़ब ने अल्लाहु अक्बर केह कर हाथ बांध लिये मगर फिर बे होश हो गए। हम घबरा कर दौड़े और डॉक्टर को बुला लाए I.C.U में ले जाया गया, चन्द मिनट बा'द डॉक्टर ने आ कर बताया कि आप के वालिद बड़े ख़ुश नसीब थे कि उन्हों ने बुलन्द अवाज़ से لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ा और उन का इन्तिक़ाल हो गया।

اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ ۝

(पारह:2, अल ब-क़रह,156)

एक सय्यिद ज़ादे ने वालिदे मर्हूम को गुस्ल दिया। चूं कि वालिद साहि़ब को उंगलियों पर गिन कर अज़्कार पढ़ने की आ़दत थी लिहाज़ा आप की उंगली उसी अन्दाज़ में थी गोया कुछ पढ़ रहे हैं, बार बार उंग्लियां सीधी की जातीं। मगर दोबारा उसी अन्दाज़ पर हो जातीं, اَلحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कसीर इस्लामी भाई जनाज़े में शरीक हुए। اَلحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे भाई की भी वालिद साहि़ब के साथ ह़ज पर जाने की तरकीब थी। वोह ह़ज की सआ़दत से बहरा मन्द हुए। बड़े भाई का केहना है कि मैं ने ***मदीनए मुनव्वरह*** में रो रो कर **बारगाहे रिसालत** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की कि मेरे वालिदे मर्हूम का ह़ाल मुझ पर मुन्कशिफ़ हो, जब रात को सोया तो ख़्वाब में देखा कि वालिदे बुज़ुर्ग-वार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْغَفَّار एह़राम पहने तशरीफ़ लाए और फ़रमा रहे हैं, "मैं उमरे की निय्यत करने (मदीने शरीफ़)आया हूं, तुम ने याद किया तो चला आया, اَلحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बहोत ख़ुश नसीब हूं।" दूसरे साल मेरे भतीजे ने मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के अन्दर का'बतुल्लाह शरीफ़ के सामने अपने दादा जान या'नी मेरे वालिदे मर्हूम हाजी अ़ब्दुर्रहीम अ़त्तारी को ऐ़न बेदारी के आ़लम में अपने बराबर में नमाज़ पढ़ते देखा। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर बहुत तलाश किया मगर न पा सके।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मदीने का मुसाफ़िर सिन्ध से पहुंचा मदीने में
क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने नाम की ता'ज़ीम करने वालों से बहुत ख़ुश होता और इन्आ़मो इकराम की बारिशें फ़रमा देता है येह भी उस की ***ख़ुफ़्या तदबीर*** है कि सख़्त गुनहगार व शराब ख़ोर के बज़ाहिर छोटे से नेक अ़मल से ख़ुश हो कर तौबा की तौफ़ीक़ दे कर वलिय्ये कामिल बना दे। चुनान्चे

शराबी वली बन गया

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى तौबा से क़ब्ल बहुत बड़े शराबी थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मर्तबा शराब के नशे में धुत कहीं जा रहे थे कि रास्ते में एक काग़ज़ पर नज़र पड़ी जिस पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखा हुवा था आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ता'ज़ीमन उठा लिया और इ़त्र ख़रीद कर मुअ़त्तर किया फिर उसे एक बुलन्द जगह पर अदब के साथ रख दिया। उसी रात एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में सुना कि कोई केह रहा है, "जाओ! ***बिशर*** से केह दो कि तुमने मेरे नाम को मुअ़त्तर किया, उस की ता'ज़ीम की और उसे बुलन्द जगह रखा हम भी तुम्हें पाक करेंगे"। उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दिल में सोचा कि ***बिशर तो शराबी है।*** शायद मुझे ग़लत़ फ़ह्मी हुई है। चुनान्चे उन्हों ने वुज़ू किया, नफ़्ल पढ़े और फिर ***सो*** रहे। दूसरी और तीसरी बार भी येही ख़्वाब देखा और येह भी सुना कि "हमारा येह पैग़ाम ***बिशर*** ही की त़रफ़ है, जाओ उन्हें हमारा पैग़ाम पहोंचा दो!" चुनान्चे वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते बिशर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तलाश में निकल पड़े। उन को पता चला कि वोह शराब की मह़फ़िल में है तो वहां पहुंचे और ***बिशर*** को आवाज़ दी। लोगों ने बताया कि वोह तो नशे में बद मस्त हैं! उन्हों ने कहा, उन्हें जा कर किसी त़रह बता दो कि एक आदमी आप के नाम कोई पैग़ाम लाया है और वोह बाहर खड़ा है। किसी ने जा कर अन्दर ख़बर दी ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى ने फ़रमाया, उस से पूछो कि वोह किस का पैग़ाम लाया है? दरयाफ़्त करने पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाने लगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम लाया हूं जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह बात बताई गई तो झूम उठे और फ़ौरन नंगे पांव बाहर तशरीफ़ ले आए पैग़ामे ह़क़ सुन कर सच्चे दिल से तौबा की और उस बुलन्द मक़ाम पर जा पहोंचे कि मुशा-ह-दए ह़क़ के ग़-लबे की शिद्दत से नंगे पांव रहने लगे। इसी लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ***ह़ाफ़ी*** (या'नी नंगे पांव रहने वाला) के लक़ब से मश्हूर हो गए।

(तज़्कि-रतुल औलिया, स़-फ़ह़ा:68)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा अदब बा नस़ीब बे अदब बे नस़ीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिखे हुए क़ागज़ के टुकड़े का अदब करने से एक सख़्त गुनहगार और शराबी वलिय्युल्लाह बन गया तो जिन के दिलों में ***रब्बुल अनाम*** عَزَّوَجَلَّ का नाम कन्दा है और जिन के क़ुलूब ***ज़िक्रुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से मा'मूर हैं उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के अदब के सबब हम गुनहगार, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से क्यूं बहरा वर न होंगे? नीज़ जो तमाम औलिया व अम्बिया के भी आक़ा हैं या'नी ***सय्यिदुल अम्बिया, अह़मदे मुज्तबा,***

मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन का अदब हमारे रब عَزَّوَجَلَّ को किस क़दर मह़बूब होगा। यक़ीनन किसी शान वाले के नाम का अदब अजरो स़वाब का मूजिब है। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الكَافِى ने अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के नाम का अदब किया तो अ़ज़्मत पाई। तो आज हम अगर शहन्शाहे अ़ाली नसब, सुल्त़ाने अ़रब, मह़बूबे रब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे पाक का अदब करें, जहां सुनें ***चूम*** कर आंखों से लगा लें तो क्यूं कर इ़ज़्ज़त न पाएंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الكَافِى ने जहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम देखा वहां ***इ़त्र*** लगाया तो पाक हो गए, हम भी जहां ज़िक्रे रिसालत मआब صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हो वहां **अ़-रक़े गुलाब** छिडकें तो क्यूं पाक न होंगे ?

क्या महकते हैं महकने वाले | *बू पे चलते हैं भटकने वाले*
आ़सियो ! थाम लो दामन उन का | *वोह नहीं हाथ झटकने वाले*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जानवर भी वली की ता'ज़ीम करते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الكَافِى हमेशा नंगे पांव चलते थे और जब तक **बग़दाद शरीफ़** में आप رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیه ह़यात रहे किसी चौपाए ने रास्ते में गोबर न किया और वोह सिर्फ़ ह़ुर्मते अदब के पेशे नज़र के ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الكَافِى यहां नंगे पांव चलते फिरते हैं। एक दिन एक चोपाए ने रास्ते में गोबर कर दिया तो उस का मालिक येह बात देख कर घबरा गया कि हो न हो आज ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الكَافِى का ***इन्तिक़ाल*** हो गया है वरना येह जानवर कभी रास्ते में गोबर न करता। चुनान्चे थोड़ी देर के बा'द उस ने सुन लिया कि ह़ज़रत رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیه का ***विस़ाल*** हो गया है।

(मुलख़्ख़स़ अज़ अह्सनुल विआ़अ,स़-फ़ह़ा: 137)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

जो के इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई | *जो के इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया*
ठोकरें खाते फिरोगे इन के दर पर पड़ रहो | *क़ाफ़िला तो ऐ रज़ा अव्वल गया आख़िर गया*

अ़क़ीदत मन्दों की भी मग़्फ़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الكَافِى को इन्तिक़ाल के बा'द क़ासिम बिन मुनब्बेह ने ख़्वाब में देख कर पूछा, " مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?" जवाब दिया, "***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया" और इर्शाद फ़रमाया, "तुम को बल्कि तुम्हारे जनाज़े में जो जो शरीक हुए उन को भी मैं ने बख़्श दिया।" तो मैं ने अ़र्ज़ किया, "या ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ मुझ से मह़ब्बत करने वालों को भी बख़्श दे तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत मज़ीद जोश पर आई, और फ़रमाया, **क़ियामत तक जो तुम से मह़ब्बत करेंगे उन सब को भी मैं ने बख़्श दिया।**

(शर्हुस्सुदूर, स़-फ़ह़ा:289)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ'माल न देखे येह देखा, है मेरे वली के दर का गदा

ख़ालिक़ ने मुझे यूं बख़्श दिया, سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ की ता'ज़ीम की ब-र-कत से सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی का मक़ाम कितना बुलन्द हो गया कि उन की ब-र-कतों से हमें भी इस का हिस्सा मिल रहा है ! जी हां ! बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करने पर उन्हें उन से मह़ब्बत करने वालों की मग़्फ़िरत की भी बिशारत मिल गई। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी भी बिगड़ी बन जाएगी, क्यूंकि ***हमें तमाम औलियाउल्लाह से मह़ब्बत और वलिये कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी*** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ***से भी प्यार है।***

बिशरे ह़ाफ़ी से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है
हम को सारे औलिया से प्यार है
اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अब ज़मीन से मुक़द्दस काग़ज़ उठाने की फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये :-

मु-तबर्रक काग़ज़ उठाने की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि दो जहां के सुल्त़ान, सर-वरे ज़ी शान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है, "जो कोई ज़मीन से ऐसा काग़ज़ उठाए जिस में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नामों में से कोई नाम हो तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस (उठाने वाले) का नाम (रूहों के सब से आ'ला मक़ाम) इ़ल्लिय्यीन में बुलन्द फ़रमाएगा और उस के वालिदैन के अ़ज़ाब में ***तख़्फ़ीफ़*** (या'नी कमी) करेगा अगर्चे उस के वालिदैन काफ़िर ही क्यूं न हों।"

(मज्मउज़ ज़वाइद, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:300)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! जब वालिदैन को ब-र-कत पहुंच रही है तो ख़ुद उठाने वाले के लिये न जाने किस क़दर रह़मतें और ब-र-कतें होंगी। येह भी दर्स मिला कि वालिदैन अगर्चे काफ़िर हों तब भी मरने के बा'द औलाद के नेक आ'माल का उन को नफ़्अ़ पहोंचता है।

वस्वसा : काफ़िर को नेक आ'माल का दुन्या में ही बदला चुका दिया जाता है, मरने के बा'द तो उसे अ़ज़ाबे क़ब्र होगा और फिर क़ियामत में उठने के बा'द हमेशा हमेशा के लिये वोह जहन्नम ही में रहेगा, इस रिवायत में मरने के बा'द भी काफ़िर को नफ़अ पहुंचने का तज़्किरा है !

वस्वसे का इ़लाज : इस में कोई शक नहीं कि हर काफ़िर हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में ही रहेगा। ताहम किसी को अ़ज़ाब ज़ियादा होगा किसी को कम। दुन्या में बा'ज़ आ'माल ऐसे भी

हैं जिन का सिला काफ़िर को मरने के बा'द अ़ज़ाब की कमी की सूरत में दिया जाएगा। देखिये ! अबू लहब का वाक़ेआ़ मशहूर है, वोह कितना बद तरीन काफ़िर था, कु़रआने करीम के अन्दर उस की मज़म्मत में पूरी सू-रतुल लहब मौजूद है ताहम उस ने अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के यहां बेटे की विलादत पर ख़ुश हो कर अपनी कनीज़ को दूध पिलाने के लिये आज़ाद कर दिया था उस का येह अ़मल इस के लिये अ़ज़ाबे क़ब्र में तख़्फ़ीफ़ या'नी कमी का बाइस़ बना चुनान्चे

अबू लहब और मीलाद

जब अबू लहब मर गया तो उस के बा'ज़ घर वालों ने उसे ख़्वाब के अन्दर बुरे ह़ाल में देखा। पूछा, क्या गुज़री ? बोला, तुम से जुदा हो कर मुझे कोई भलाई नसीब न हुई। हां मुझे इस कलिमे की उंगली से पानी मिलता है क्यूं कि (इस के इशारे से) मैं ने सुवैबा लौंडी को आज़ाद किया था।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:432,ह़दीस़ नं:5101)

मुसल्मान और मीलाद

इस रिवायत के तह़त सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْقَوِی फ़रमाते हैं, इस वाक़िए में मीलाद मनाने वालों के लिये बड़ी दलील है जो ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शबे विलादत में ख़ुशियां मनाते और माल ख़र्च करते हैं। (या'नी अबू लहब जो कि काफ़िर था जब वोह ताजदारे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़बर पा कर ख़ुश होने और अपनी लौंडी (सुवैबा) को दूध पिलाने की ख़ातिर आज़ाद करने पर बदला दिया गया। ह़ालां कि उस ने ***मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नहीं अपने भतीजे की विलादत पर ख़ुशी मनाई थी, तो उस मुसल्मान का क्या ह़ाल होगा जो किसी आ़म शख़्स़ की नहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और ख़ुशी से भरा हुवा है और माल ख़र्च कर रहा है। लेकिन येह ज़रूरी है कि मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ गाने बाजों और आलाते मूसीक़ी से पाक हो।)

(मदारिजुन नुबुव्वत, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:38)

धूम हैं अ़त्तार हर सू शाह ﷺ के मीलाद की
झूम कर तुम भी पुकारो मर्ह़बा या मुस्त़फ़ा ﷺ

जश्ने ***मीलादुन्नबी*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ***मह़ब्बत*** रखने वालों के यहां अबू लहब की कनीज़ सुवैबा के नाम पर अपनी बच्चियों का नाम रखने का रवाज है। मगर अस़्ल तलफ़्फ़ुज़ से ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर नाम **''सौबिया''** रख लेते हैं लिहाज़ा अस़्ल तलफ़्फ़ुज़ समझ लीजिये **''सुवैबा''**।

اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल हर दौर में मीलादे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की धूम मचाते रहे हैं। और आज भी दुन्या भर में आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की स़ना ख़्वानी की धूमधाम है। इस की फ़ज़ीलत सुनिये और इश्क़ो मस्ती में सर धुनिये। चुनान्चे

ईमान की हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

शैख़ुल इस्लाम हज़रते अ़ल्लामा इब्ने हजर मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से मन्क़ूल है, हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने फ़रमाया, "महफ़िले मीलादे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ-दबो ता'ज़ीम के साथ हाज़िरी देने वाले का ईमान सलामत रहेगा। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ" ।

(अन्ने'मतुल कुब्रा, स़-फ़ह़ा:24)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुक़द्दस काग़ज़ की ब-र-कत

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की तौबा का सबब येह हुवा कि एक मर्तबा उन को राह में काग़ज़ का पुर्ज़ा मिला। जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखा था। उन्हों ने अदब से रखने की कोई मुनासिब जगह न पाई तो उसे निगल लिया। रात ख़्वाब देखा कोई केह रहा है, इस **मुक़द्दस काग़ज़** के एह़तेराम की ब-र-कत से ***अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त*** جَلَّ جَلَالُه ने तुझ पर हिक्मत के दरवाज़े खोल दिये।

(अर्रिसा-लतुल क़ुशैरिय्यह, स़-फ़ह़ा:48)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखे हुए कागज़ को उठा कर उस की ता'ज़ीम करने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तौबा की तौफ़ीक़ दे कर विलायत का रुत्बा इनायत फ़रमा कर ***अवताद*** के अ़ज़ीम मन्स़ब से सर-फ़राज़ फ़रमा दिया जैसा कि ***"बह्जतुल असरार शरीफ़"*** में है, हज़रते सय्यिदुना शैख़ ***अबू बक्र*** बिन हवार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْجَبَّار फ़रमाते हैं, इराक़ के अवताद सात हैं, (1) हज़रते सय्यिदुना शैख़ ***मा'रूफ़*** करख़ी (2) हज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम ***अह़मद*** बिन ह़म्बल (3) हज़रते सय्यिदुना शैख़ ***बिशरे*** हाफ़ी (4) हज़रते सय्यिदुना शैख़ ***मन्सूर*** बिन अ़म्मार (5) हज़रते सय्यिदुना शैख़ ***जुनैद*** (6) हज़रते सय्यिदुना शैख़ ***सहल*** बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी (7) हज़रते सय्यिदुना शैख़ ***अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी*** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى (हमारे ग़ौसे आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की अभी विलादत भी नहीं हुई थी इस लिये येह ग़ैब की ख़बर सुन कर) अ़र्ज़ किया गया, अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी कौन ? हज़रते सय्यिदुना शैख़ हवार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْجَبَّار ने जवाबन इरशाद फ़रमाया, "एक अ़-जमी "शरीफ़" होंगे (अहले अ़रब के यहां सादाते किराम को "शरीफ़" और "ह़बीब" बोलते हैं जब कि जनाब की जगह लफ़्ज़ "सय्यिद" इस्ते'माल किया जाता है मत़लब येह है कि एक ग़ैर अ़-रबी सय्यिद स़ाह़िब) जो कि **बग़दाद शरीफ़** में क़ियाम फ़रमाएंगे, उन का ज़ुहूर **पांचवीं सदी हिजरी** में होगा और वोह सिद्दीक़ीन (या'नी औलियाए किराम की सब से आ'ला क़िस्म) से होंगे।"

अवताद वोह अफ़राद हैं जो दुन्या के सरदार और ज़मीन के क़ुतुब हैं।

(बह्जतुल असरार, मुतर्जम:385, प्रोग्रेसीव बुक्स)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

किसी ख़ित़्त़ए ज़मीन या'नी शहर वग़ैरा का इन्तिज़ाम जिस वलिय्युल्लाह के सिपुर्द हो उस को ***क़ुत़्ब*** कहते हैं ।

चार दुआ़ओं की ह़िकायत

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की तह़रीर वाले काग़ज़ की ता'ज़ीम की ब-र-कत से ह़ज़रते सय्यिदुना ***मन्सूर बिन अ़म्मार*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار का शुमार औलियाए किबार से होने लगा, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नेकी की दा'वत की धूमें मचाते थे, ला ता'दाद अफ़राद बस़द अ़क़ीदत आप का बयान सुनने आते थे । एक बार आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इज्तिमाअ़ में किसी ह़क़दार ने चार दिरहम का सुवाल किया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ए'लान फ़रमाया, जो इस को चार दिरहम देगा मैं उस के लिये ***चार दुआ़एं*** करूंगा । उस वक़्त वहां से एक ग़ुलाम गुज़र रहा था एक वलिये कामिल की रह़मत भरी आवाज़ सुन कर उस के क़दम थम गए और उस के पास जो चार दिरहम थे वोह उस ने साइल को पेश कर दिये । ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया, बताओ कौन कौन सी ***चार दुआ़एं*** करवाना चाहते हो ? अ़र्ज़ किया, **(1)** मैं ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं **(2)** मुझे इन दराहिम का बदला मिल जाए । **(3)** मुझे और मेरे आक़ा को तौबा नस़ीब हो **(4)** मेरी, मेरे आक़ा की, आप की और तमाम ह़ाज़िरीन की बख़्शिश हो जाए । ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار ने हाथ उठा कर ***दुआ़*** फ़रमा दी । ग़ुलाम अपने आक़ा के पास देर से पहुंचा । आक़ा ने सबबे ताख़ीर दर्याफ़्त किया तो उस ने वाक़िआ़ केह सुनाया, आक़ा ने पूछा, ***पेहली दुआ़*** कौन सी थी ? ग़ुलाम बोला, मैं ने अ़र्ज़ किया, दुआ़ कीजिये मैं ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं । येह सुन कर आक़ा की ज़बान से बे साख़्ता निक्ला, "जा तू ग़ुलामी से आज़ाद है ।" पूछा, ***दूसरी दुआ़*** कौन सी करवाई ? कहा, जो चार दिरहम मैं ने दे दिये हैं उस का ने'मुल बदल मिल जाए । आक़ा बोल उठा, मैं ने तुझे चार दिरहम के बदले चार हज़ार दिरहम दिये । पूछा, ***तीसरी दुआ़*** क्या थी ? बोला, मुझे और मेरे आक़ा को गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ नस़ीब हो जाए । येह सुनते ही आक़ा की ज़बान पर इस्तिग़फ़ार जारी हो गया और केहने लगा, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूं । ***चोथी दुआ़*** भी बता दो, कहा, मैंने इल्तिजा की कि मेरी, मेरे आक़ा की, आप जनाब की और तमाम हाज़िरीने इज्तिमाअ़ की मग़्फ़िरत हो जाए । येह सुन कर आक़ा ने कहा, "***तीन*** बातें जो मेरे इख़्तियार में थीं वोह कर ली हैं ***चौथी*** सब की मग़्फ़िरत वाली बात मेरे इख़्तियार से बाहर है । उसी रात आक़ा ने ख़्वाब में किसी केहने वाले को सुना, "**जो तुम्हारे इख़्तियार में था वोह तुमने कर दिया । और मैं अर्ह़मुर राह़िमीन हूं मैं ने तुम्हें, तुम्हारे ग़ुलाम को, मन्सूर को और तमाम ह़ाज़िरीन को बख़्श दिया ।**

(रौज़ुर रियाह़ीन, स़-फ़ह़ा: 222,223)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

दुआ़ए वली में वोह तास़ीर देखी — *बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मिट्टी का शकिस्ता प्याला

सिल्सि-लए आ़लिय्या ***नक़्श बन्दिय्या*** के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिद अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی ने एक दिन आ़म बैतुल ख़ला में भंगी का सफ़ाई के लिये रखा हुवा गन्दगी से आलूदा कोना टूटा हुवा बड़ा सा मिट्टी का प्याला मुला-ह़ज़ा फ़रमाया, "ग़ौर से देखा तो बेताब हो गए क्यूं कि उस प्याले पर लफ़्ज़ ***"अल्लाह"*** कन्दह था ! लपक कर प्याला उठा लिया और ख़ादिम से पानी का आफ़्ताबह (या'नी ढक्कन वाला दस्ता लगा हुवा लोटा) मंगवा कर अपने दस्ते मुबारक से ख़ूब मल मल कर अच्छी त़रह़ धो कर उस को पाक किया, फिर एक सफ़ेद कपड़े में लपेट कर अदब के साथ ऊंची जगह रख दिया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उसी प्याले में पानी पिया करते । एक दिन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इल्हाम फ़रमाया गया, "जिस त़रह़ तुमने मेरे नाम की ता'ज़ीम की मैं भी दुन्या व आख़िरत में तुम्हारा नाम ऊंचा करता हूं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे, "***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नामे पाक का अदब करने से मुझे वोह मक़ाम ह़ासिल हुवा जो सौ[100] साल की इ़बादतो रियाज़त से भी ह़ासिल न हो सक्ता था !"

(मुलख़्ख़स अज़ ह़ज़रातुल क़ुद्स, दफ़्तर दुवुम स़-फ़ह़ा:113, मुका-शफ़ह नं :35)

सादा काग़ज़ का भी अदब

सिल्सि-लए आ़लिय्या नक़्श बन्दिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद सर हिन्दी अल मा'रूफ़ मुजद्दिद अल्फ़े सानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبَّانِی सादा काग़ज़ का भी एह़तिराम फ़रमाते थे ।

चुनान्चे एक रोज़ अपने बिछौने पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि यकायक बे क़रार हो कर नीचे उतर आए और फ़रमाने लगे, "मा'लूम होता है इस बिछौने के नीचे कोई काग़ज़ है ।"

(ज़ुब्दतुल मक़ामात, स़-फ़ह़ा:192)

राह चलते हुए काग़ज़ात को लात मत मारिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा, सादा कागज़ का भी अदब है और क्यूं न हो कि इस पर क़ुरआनो ह़दीस़ और इस्लामी बातें लिखी जाती हैं । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बयान कर्दह ह़िकायत में ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिद अल्फ़े सानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبَّانِی की खुली करामत है कि बिछौने के नीचे के काग़ज़ का ज़ाहिरी त़ौर पर बिन देखे पता चल गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नीचे उतर आए ता कि ग़ुलामों को भी काग़ज़ात के अदब की तरग़ीब मिले । "बहारे शरीअ़त" मैं है, काग़ज़ से इस्तिन्जा मन्अ़ है अगर्चे उस पर कुछ भी न लिखा हो या अबू जह्ल ऐसे काफ़िर का नाम लिखा हो ।

(हिस्स़ा:2, स़-फ़ह़ा:114, मत़्बूआ़ मदी-नतुल मुर्शिद, बरेली शरीफ़)

चूं कि लफ़्ज़े "अबू जह्ल" के तमाम ह़ुरूफ़े तहज्जी (ا ب و ج ہ ل) क़ुरआनी हैं । इस लिये लिखे हुए लफ़्ज़े "अबू जह्ल"की (न कि शख़्स़े अबू जह्ल की) इन मा'नों कर ता'ज़ीम है कि उस को नापाक गन्दी जगहों पर डालने और जूते मारने वग़ैरा की इजाज़त नहीं । इस से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अख़्बारात को बत़ौरे पुड़िया इस्ते'माल करते और फिर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

वोह अख़्बारात बे अ-दबियों के मुख़्तलिफ़ मराहि़ल म-स्-लन : مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर के कचरा डालने के डिब्बे, गलियों में क़दमों तले रोंदे जाने, गन्दगियों और त़रह़ त़रह़ की आलू-दगियों से दो चार होने के बा'द बिल आख़िर कचरा कूंडी में जा पहुंचते हैं, नीज़ बा'ज़ लोगों की येह ना मा'क़ूल आ़दत होती है कि चलते चलते राह में पड़े हुए लिखाई वाले ख़ाली डिब्बों, अख़्बारात और काग़ज़ात वग़ैरा को مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ लातें मारते हैं। हा़लांकि स़वाब तो इस में है कि तह़रीरों वाले काग़ज़ात और गत्ते उठा कर अदब की जगह रखे जाएं या ठन्डे किये जाएं। बहर ह़ाल लातें मारने और इधर उधर फेंकने, अख़्बारात या लिखे हुए काग़ज़ात से मेज़ या बरतन वग़ैरा स़ाफ़ करने, हाथ पूंछने, उन पर पांव रखने नीज़ अख़्बारात वग़ैरा बिछा कर उस के ऊपर बैठने वग़ैरा से बचना बहुत ज़रूरी है।

क़लम की छीलन

"**बहारे शरीअ़त**" में है, नए क़लम का तराशा (या'नी छीलन) इधर उधर फेंक सकते हैं। मगर मुस्ता'मल (या'नी इस्ते'माल शुदह) क़लम का तराशा ऐसी जगह न फेंका जाए कि एह़तिराम के ख़िलाफ़ हो। (जब तराशे का एह़तिराम है तो ख़ुद मुस्ता'मल क़लम का कितना एह़तिराम होगा येह हर ज़ी शुऊ़र समझ सकता है।) नीज़ जिस काग़ज़ पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिखा हो उस में कोई चीज़ रखना मकरूह है और थैली पर अस्माए इलाही عَزَّوَجَلَّ लिखे हों उस में रूपिया पैसे रखना मकरूह नहीं। खाने के बा'द उंगलियों को कागज़ से पूंछना मकरूह है। (बहारे शरीअ़त, हिस्स़ा:16,स़-फ़ह़ा:119 मदी-नतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़, आ़लमगीरी) टिश्यू पेपर से हाथ पूंछने, जहां मुफ़्त ढेले वग़ैरा दस्तियाब न हों वहां टोइलेट पेपर से जाए इस्तिन्जा ख़ुश्क करने की उ़-लमाअ इजाज़त देते हैं क्यूं कि येह इसी काम के लिये है इस पर कुछ लिखा नहीं जाता। जब कि काग़ज़ लिखने के लिये बनाए जाते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सियाही (INK) के नुक़्ते़ का अदब

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद हाशिम कशमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "मैं सिल्सि-लए आ़लिय्या नक़्श बन्दिय्या के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिद अल्फ़े स़ानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبَّانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तह़रीरी काम कर रहे थे, ज़रू-रतन बैतुल ख़ला गए मगर फ़ौरन वापस आ कर पानी का लोटा मंगवा कर बाएं हाथ के अंगूठे का नाख़ुन शरीफ़ धोया, फिर बैतुल ख़ला तशरीफ़ ले गए। बा'दे फ़राग़त जब तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, बैतुल ख़ला में जूं ही बैठा कि मेरी नज़र बाएं हाथ के अंगूठे के नाख़ुन की पुश्त पर पड़ी जिस पर क़लम का इम्तिह़ान करते वक़्त का (या'नी क़लम को चेक करने के लिये के काम कर रहा है या नहीं उस मौक़ेअ़ का) सियाही (INK) का नुक़्त़ा लगा हुवा था। चूं कि येह उसी क़लम से था जिस से क़ुरआनी ह़ुरूफ़ (अ़-रबी ज़बान के सारे जब कि फ़ारसी और उर्दू के अक्स़र ह़ुरूफ़ क़ुरआनी हैं।) लिखे जाते हैं। इस लिये बाएं हाथ के अंगूठे पर लगे हुए उस नुक़्ते़ के साथ वहां बैठना अदब के ख़िलाफ़ था, ह़ालां कि बहोत शिद्दत से पेशाब की ह़ाजत थी मगर उस तक्लीफ़ के मुक़ाबले में इस बे अ-दबी की तक्लीफ़ बहुत ज़ियादा थी लिहाज़ा फ़ौरन बाहर आ कर

सियाही के नुक़्ते को धो कर फिर गया।"

(ज़ुब्दतुल मक़ामात स़-फ़ह़ा:180)

दीवारों पर इश्तिहार न लगाएं

अल्लाह ! अल्लाह ! सिल्सि-लए आ़लिय्या ***नक़्श बन्दिय्या*** के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते मुजद्दिद अल्फ़े सानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّبَّانِی क़लम की सियाही (INK) के नुक़्ते का भी इस क़दर अदब फ़रमाते थे जब कि हमारे यहां ह़ालत येह है कि लिखने के दौरान लगी हुई सियाही के निशानात धो कर उ़मूमन **गटर** में बहा दिया जाता है और ना क़ाबिले इस्ते'माल हो जाने पर क़लम और उस के अजज़ा को पहले कचरे के डिब्बे में डालते और बा'द में कचरा कूंडी की नज़्र कर देते हैं। ब्लेक बोर्ड पर चॉक (CHALK) की आ़म लिखाई कुजा अक्स़र अह़ादीसे मुबा-रका लिखने वाले भी बिला तकल्लुफ़ साफ़ी से पूंछ कर चाक के ज़र्रात के अदब का बिल्कुल भी ख़याल नहीं करते। हुक़ूक़ुल इ़बाद की मुत़्लक़ परवाह किये बिग़ैर दीवारों पर "चॉकिंग" की जाती और दुन्यवी या दीनी लिखाई वाले इश्तिहारात दूसरों के साइन बोर्डों और लोगों के घरों या दुकानों वग़ैरा की दीवारों पर बिला इजाज़ते मालिकान लगा दिये जाते हैं जो कि मालिक को ना गवार गुज़रने की सूरत में ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। और बच्चा बच्चा जानता है कि दीवार पर चस्पां कर्दह मज़हबी इश्तिहार अन्जामे कार पुर्ज़ा पुर्ज़ा हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आता है और जो कुछ बे अ-दबी होती है उस का तसव्वुर ही दिल हिला देने वाला है। काश ! इश्तिहार चस्पां करने के बजाए गत्तों पर लगा कर मुनासिब मक़ामात पर टांगने की तरकीब रवाज पा जाए। मगर ज़रूरत पूरी हो जाने के बा'द गत्तों को भी उतार लेना चाहिये। इसी त़रह़ ज़रूरत पूरी हो जाने के बा'द बेनर्ज़ भी उतार लिये जाएं वरना फट कर लीरे लीरे हो कर बिखर जाते हैं।

अख़्बारात रद्दी में न बेचें

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! आज कल उ़मूमन अख़्बारात में بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ आयाते करीमा, अह़ादीसे मुबा-रका और इस्लामी मज़ामीन होते और लोग सिर्फ़ चन्द सिक्कों की ख़ात़िर उन्हें रद्दी में फ़रोख़्त कर देते हैं। अफ़्सोस ! स़द करोड़ अफ़्सोस ! इस क़िस्म के अख़्बारात गन्दी नालियों तक में नज़र आते हैं। काश ! ***मुक़द्दस अवराक़*** का हमें अदब नसीब हो जाता। ***मेरे ज़िन्दा दिल इस्लामी भाइयो !*** बराए करम ह़क़ीर रक़म पाने के लिये रद्दी में बेचने के बजाए अख़्बारात को बीच समुन्दर में ठन्डा कर दिया करें, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। ***मेरे ताजिर इस्लामी भाइयो !*** आप भी रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और अ़ज़्मत की ख़ात़िर अख़्बारात को पुड़िया बांधने के लिये इस्ते'माल करने से गुरेज़ फ़रमाइये। बा'ज़ लोग मज़हबी मज़ामीन जुदा कर के बक़िय्या अख़्बार को बन्डल वग़ैरा बनाने में इस्ते'माल कर के दिल को यूं मना लेते हैं कि हम ने कोई बे अ-दबी नहीं की। ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि मुकम्मल अख़्बार ही ठन्डा कर दीजिये क्यूंकि ख़बरें हों या फ़िल्मी इश्तिहार जगह ब-जगह इस्लामी नाम होते हैं और इन में उ़मूमन ***"अल्लाह"*** और ***"मुह़म्मद"*** के अल्फ़ाज़ भी शामिल होते हैं। म-स़-लन : अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुर्रह़मान, ग़ुलाम मुह़म्मद वग़ैरा।

उर्दू हो या सिंधी, इंग्रेज़ी हो या हिन्दी दुन्या की हर ज़बान में शाएअ़ होने वाले हर अख़्बार में मुक़द्दस नामों का इम्कान मौजूद है। बल्कि दुन्या की हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (ALPHA-BETS) का अदब करना चाहिये क्यूंकि ***साहिबे तफ़्सीरे सावी शरीफ़ के क़ौल के मुताबिक़ दुन्या में बोली जाने वाली तमाम ज़बानें इल्हामी हैं।*** (तफ़्सीरे सावी, जिल्दः1, स-फ़हाः30) लिहाज़ा इन को ठन्डा कर देने ही में आफ़िय्यत हैं। अल्लाह इस अदब का आप को ज़रूर सिला अता फ़रमाएगा।

मेरे वालिद साहिब ज़ेहनी मरीज़ हैं

एक बार सगे मदीना (राक़िमुल हुरूफ़) के पास एक नौ जवान आया और केहने लगा कि मुझे अपने वालिद साहिब के लिये दुआ करवानी है ताकि उन का ज़ेहन ठीक हो जाए, वोह ज़ेहनी मरीज़ हैं, उन पर एक धुन सुवार रेहती है और वोह **अख़्बारात,** लिखे हुए **काग़ज़ात** सड़कों से चुनने और जम्अ़ कर के ठन्डे करते हैं, मेरे पैसे भी इस्ते'माल नहीं करते। मैं मुआ-मला समझ गया, मैं ने उस नौ जवान से पूछा, ''क्या आप ***सरकारी मुलाज़िम*** हैं ?'' उस ने कहा, ''हां''। तो मैंने उन से कहा, ''वालिद साहिब को मेरा सलाम अ़र्ज़ कर के और मेरे लिये दुआए मग़्फ़िरत करवाइये, आप भी उन की ख़िदमत कीजिये वोह अख़्बार वग़ैरा इस लिये चुनते हैं कि उन में मुक़द्दस तहरीरें होती हैं और आप के पैसे इस लिये इस्ते'माल नहीं फ़रमाते कि आप सरकारी मुलाज़िम हैं और अक्सर सरकारी मुलाज़िमीन पूरी ड्यूटी न कर के ना जाइज़ तन-ख़्वाह लेते हैं। येह बात सुन कर उस ने तस्लीम किया कि वाक़ेई मैं ड्यूटी में कोताही करता हूं। ***इस्लामी भाइयो !*** अगर उस नौ जवान के वालिद साहिब كَثَّرَهُ اللهُ تَعَالٰى (या'नी अल्लाह ऐसों की कसरत करे) की तरह हर मुसल्मान ज़ेहनी ***म-दनी मरीज़*** हो जाए तो यक़ीनन हर तरफ़ अन्वारो तजल्लियात की बरसात और ब-रकात की बोहतात हो और हमारा मुआ-शरा ''म-दनी मुआ-शरा''बन जाए।

ऐ हम नशीं ! अज़िय्यते फ़रज़ान्गी न पूछ
जिस में ज़रा सी अ़क़्ल थी दीवाना हो गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! ''म-दनी सोच'' पैदा करने के लिये आशिक़ाने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र फ़रमाते रहिये, दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले वालों पर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लुत्फ़ो करम का ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ सुनिये और झूमिये :-

म-दनी क़ाफ़िले पर सरकार ﷺ की करम नवाज़ी

एक आशिक़े रसूल के बयान का अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है, हमारा ***म-दनी क़ाफ़िला*** सुन्नतों की तरबिय्यत लेने के लिये हैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिंध) से सू-बए सरहद पहुंचा। एक मस्जिद में तीन[3] दिन गुज़ार कर दूसरे अ़लाक़े की तरफ़ जाते हुए रास्ता भूल कर हम जंगल की तरफ़ जा निकले, रात की सियाही हर तरफ़ फैल चुकी थी, दूर दूर तक आबादी का कोई नामो निशान नहीं था, लम्हा ब-लम्हा तश्वीश में इज़ाफ़ा होता जा रहा था,

इतने में उम्मीद की एक किरन फूटी और काफ़ी दूर एक बत्ती टिमटिमाती नज़र आई, ख़ुशी के मारे हम उस सम्त लपके मगर आह ! चन्द ही लम्हों के बा'द वोह रौशनी ग़ाइब हो गई, हम *ठिठक* कर खड़े के खड़े रह गए, हमारी घबराहट में एक दम इज़ाफ़ा हो गया ! क्या करें, क्या न करें और किस सम्त को चलें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। आह ! आह ! आह !

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है — सोने वालो ! जागते रहियो चोरों की रखवाली है
जुग्नू चमके पत्ता खड़के मुझ तन्हा का दिल धड़के — डर समझाए कोई पवन है या अग्या बेताली है
बादल गरजे बिजली तड़पे धक से कलेजा हो जाए — बन में घटा की भयानक सूरत कैसी काली काली है
पांव उठा और ठोकर खाई कुछ संभला फिर औंधे मुंह — मीह ने फिसलन कर दी है और धुर तक खाई नाली है
साथी साथी केह के पुकारूं साथी हो तो जवाब आए — फिर झुंझुला कर सर दे पटकूं चल रे मौला वाली है
फिर फिर कर हर जानिब देखूं कोई आस न पास कहीं — हां इक टूटी आस ने हारे जी से रफ़ाक़त पाली है

तुम तो चांद अ़रब के हो प्यारे तुम तो अ़जम के सूरज हो
देखो मुझ बे कस पर शब ने कैसी आफ़त डाली है

इस परेशानी में न जाने कितना वक़्त गुज़र गया, यकायक उसी सम्त फिर रौशनी नुमूदार हुई। हम ने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर हिम्मत की और एक बार फिर आबादी की उम्मीद पर रौशनी की जानिब तेज़ तेज़ क़दम चल पड़े। जब क़रीब पहुंचे तो एक शख़्स रौशनी लिये खड़ा था, वोह निहायत पुरत पाक त़रीक़े पर हम से मिला और हमें अपने मकान में ले गया, आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के म-दनी क़ाफ़िले के बारह मुसाफ़िरों की ता'दाद के मुत़ाबिक़ 12 कप मौजूद थे और चाय भी तैयार। उस ने गर्म गर्म चाय के ज़रीए हमारी "ख़ैर ख़्वाही" की। हम इस ग़ैबी इम्दाद और पूरे बारह कप चाय की पहले से तैयारी पर हैरान थे। इस्तिफ़्सार पर हमारे अज्नबी मेज़बान ने इन्किशाफ़ किया कि मैं सोया हुवा था कि क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया, "दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर रास्ता भूल गए हैं उन की रहनुमाई के लिये तुम रौशनी ले कर बाहर खड़े हो जाओ।"** मेरी आंख खुल गई और बत्ती ले कर बाहर निकल पड़ा। कुछ देर तक खड़ा रहा मगर कुछ नज़र न आया, वस्वसा आया कि शायद ग़लत़ फ़ह्मी हुई है, आंखो में नींद भरी हुई थी, घर में दाख़िल हो कर फिर सो रहा, सर की आंख बन्द होते ही दिल की आंख वापस खुल गई और फिर एक बार मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेह्रए नूर बार नज़र आया, लब्हाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए, ***दीवाने ! म-दनी क़ाफ़िले में बारह मुसाफ़िर हैं, इन के लिये चाय का इन्तिज़ाम कर के फ़ौरन रौशनी ले कर बाहर खड़े हो जाओ।*** मैं ने दम ज़दन में ख़ैर ख़्वाही की तरकीब की और रौशनी ले कर बाहर निकल आया कि इतने में आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का म-दनी क़ाफ़िला भी आ पहुंचा।

आता है फ़क़ीरों पे उन्हें प्यार कुछ ऐसा *ख़ुद भीक दें और ख़ुद कहें मंगता का भला हो*
तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महब्बत *है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकार ﷺ ने खाना खिलाया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से जहां इल्मे ग़ैबे माहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मा'लूम हुवा वहां दा'वते इस्लामी की हक़्क़ानिय्यत और बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में मक़्बूलिय्यत का भी पता लगा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे मीठे मीठे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने गुलामों को हर वक़्त अपनी नज़र में रखते हैं, मुसीबत में फंस जाने की सूरत में इम्दाद फ़रमाते और भूकों को खाना खिलाते हैं, चुनान्चे ह़ज़रते इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی नक़्ल करते हैं, ह़ज़रते शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन नफ़ीस तूनिसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते है, मैं एक बार मदी-नए मुनव्वरह में सख़्त भूक के आ़लम में सरकारे आ़ली वक़ार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा, ***या रसूलल्लाह !*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं भूका हूं, यकबारगी आंख लग गई, दरीं अस्ना किसी ने जगा दिया, और मुझे साथ चलने की दा'वत दी, चुनान्चे मैं उन के साथ उन के घर आया, मेज़बान ने खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश कर के कहा, पेट भर कर खा लीजिये क्यूं कि मुझे मेरे जद्दे अम्जद, मीठे मक्की म-दनी ***मुह़म्मद*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है। आइन्दा भी जब कभी भूक मह़सूस हो हमारे पास तशरीफ़ लाया करें।

(हुज्जतुल्लाहे अलल आ़-लमीन,जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:573)

पीते हैं तेरे दर का खाते हैं तेरे दर का
पानी है तेरा पानी दाना है तेरा दाना

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हर ज़बान के हुरूफ़ का अदब कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم और दीगर अस्माए मुक़द्दसा को ऐसी जगह हरगिज़ मत लिखिये जहां इन की बे हुर्मती होने का अन्देशा हो। बल्कि किसी भी ज़बान में ज़मीन पर कुछ न लिखा जाए हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (या'नी ALPHABETS)की ता'ज़ीम की जाए। लिखाई किसी भी ज़बान में हो उस पर पांव न रखा जाए। म-स़-लन : ऐसे पाएदान (DOOR MATE) दरवाज़े के बाहर न रखे जाएं जिन पर WEL COME लिखा होता है। चप्पल वगै़रा पर ख़्वाह इंग्लिश ज़बान ही में कंपनी का नाम लिखा हो पहनने से क़ब्ल उसे मिटा देना चाहिये। अक्स़र मुसल्लों के साथ चिट लगी होती है जिस पर अ़-रबी उर्दू या इंग्लिश में फेकटरी वगै़रा का नाम लिखा होता है और वोह भी अक्स़र पांव रखने की जगह पर। नीज़ प्लास्टिक की चटाई, लिहा़फ़ व तौलिया वगै़रा में

भी अक्स़र तह़रीरी चिट होती है, लिहाज़ा ऐसी चिट को जुदा कर के ठन्डी कर देना चाहिये। पलंग पर बिछे हुए फ़ोम के गदेलों के अस्तर पर उ़मूमन MOLTY FOAM वग़ैरा लिखा होता है काश ! कंपनियों वाले हमें इम्तिह़ान में न डालें, येह फ़िक़्ही जुज़इय्या ग़ौर से मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे ***बहारे शरीअ़त*** हिस्सा:16,स़-फ़ह़ा:237 पर रद्दुल मोह़तार के ह़वाले से लिखा है, "***बिछौने*** या मुसल्ले पर कुछ लिखा हुवा हो तो उस को इस्ते'माल करना ***ना जाइज़*** है येह इबारत उस की बनावट में हो या काढी गई हो या रौशनाई (INK) से लिखी हो अगर्चे हु़रूफ़े मुफ़रदह (ALPHABETS) लिखे हों क्यूं कि हु़रूफ़े मुफ़रदह (या'नी जुदा जुदा लिखे हुए हु़रूफ़) का भी एह़तेराम है।" स़ाह़िबे बहारे शरीअ़त رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं, "अक्स़र दस्तर ख़्वान पर इबारत लिखी होती है ऐसे (कंपनी का नाम या अश्आ़र लिखे हुए) दस्तर ख़्वान को इस्ते'माल में लाना और उन पर खाना न खाना चाहिये। बा'ज़ लोगों के तकियों पर अश्आ़र लिखे होते हैं उन को भी इस्ते'माल न किया जाए।" बहर ह़ाल मुस़ल्ले हों या चादरें, क़ालीन हों या डेकोरेशन की दरियां, तकिया हो या गदेला जिस चीज़ पर भी बैठने या पांव रखने की ज़रूरत पड़ती हो उस पर किसी भी ज़बान में कुछ भी न लिखा जाए न ही छपी हुई चिट सिलाई की जाए। ख़ूब सूरत मुकम्मल क़ालीन (ONE PIECE CARPET) के पीछे आ़म त़ौर पर कंपनी का नाम व पता लिखा हुवा इस्टीकर चस्पां होता है, उस इस्टीकर पर पानी लगा दीजिये फिर चन्द मिनट के बा'द उतार लीजिये। ***अ़-रबी तह़रीरों*** का तो ख़ास त़ौर पर अदब करना चाहिये कि मीठे मीठे अ़-रबी आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान अ़-रबी है, क़ुरआने पाक की ज़बान अ़-रबी और जन्नत में अहले जन्नत की ज़बान भी अ़-रबी है। ***अ़-रबी तह़रीरें*** ख़्वाह खाने पीने के पेकेट पर ही क्यूं न हों उस को फेंक देना या مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कचरा कूंडी में डाल देना सख़्त बे अ-दबी व बद नस़ीबी है।

नम्बरों की निस्बतें

बा'ज़ अवक़ात चप्पल पर अगर कुछ नहीं भी लिखा होता तो नम्बर ज़रूर नक़्श होता है उस पर पांव रखने में भी अहले मह़ब्बत का दिल नहीं करता, क्यूं कि हर नम्बर में कोई न कोई निस्बत होती है। म-स़-लन : ***त़ाक़ अ़दद*** (SINGULER) के बारे में "अह़सनुल विआ़अ"स़-फ़ह़ा 22 पर दुआ़ की तकरार के बारे में है, "***अल्लाह*** वित्र (अकेला) और वित्र (या'नी एक,तीन,पांच,सात वग़ैरा को) दोस्त (मह़बूब) रखता है, ***पांच*** बेहतर है और ***सात*** का अ़दद ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को निहायत मह़बूब और अ-क़ल (या'नी कम अज़ कम) ***तीन*** है।" मत़लब येह है कि जब भी दुआ़ मांगो तो उस को ***सात*** मर्तबा दोहराओ, वरना ***पांच*** मर्तबा या कम अज़ कम ***तीन*** मर्तबा ही दोहरा लो।) ***जुफ़्त अ़दद*** (PLULER) में भी निस्बतें ही निस्बतें हैं। ***2 की निस्बत :*** म-स़-लन : 2, मुह़र्रमुल ह़राम को ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ क़रख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और 2 ज़ी का'दतुल ह़राम को सदरुश-शरीअ़ह मुस़न्निफ़े बहारे शरीअ़त رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का यौमे उ़र्स। ***4 की***

निस्बत : चार यार عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से जिस किसी को प्यार है। اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का बेड़ा पार है, ***6 की निस्बत :*** 6 र-जबुल मुरज्जब को ग़रीब नवाज़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की छटी शरीफ़। ***8 की निस्बत :*** जन्नतें आठ हैं और 8 मुहर्रमुल ह़राम शेरे बे-शए अहले सुन्नत ह़ज़रते मौलाना हश्मत अ़ली ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الۡمَنَّان का यौमे उ़र्स, ***10 की निस्बत :*** यौमे आ़शूरा, इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदु श्शु-हदाअ, सुल्त़ाने करबला इमाम हु़सैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه का यौमे शहादत, ब-क़रह ईद और ***11,12 की निस्बतों की तो उ़श्शाक़ में हर त़रफ़ धूम धाम है।***

किया ग़ौर जब ग्यारहवीं बारहवीं में — मुअ़म्मा येह हम पर खुला ग़ौसे आ'ज़म
तुम्हें वस्ले बे फ़स्ल है शाहे दीं से — दिया ह़क़ ने येह मर्तबा ग़ौसे आ'ज़म

मुक़द्दस अवराक़ ठन्डे करने का त़रीक़ा

जो ख़ुश नसीब मुसल्मान तह़रीरों का अदब करते हुए अख़्बारात व मुक़द्दस काग़ज़ात और गत्ते वग़ैरा ज़मीन पर देख कर उठा लेते और उन को बीच समुन्दर या गहरे दरिया में ठन्डा कर देते हैं वोह क़ाबिले रश्क हैं। कम गहरे समुन्दर में ***मुक़द्दस अवराक़*** न डाले जाएं कि उ़मूमन बह कर कनारे पर आ जाते हैं, ***ठंडा करने का त़रीक़ा*** येह है कि मुक़द्दस अवराक़ किसी थैली या ख़ाली बोरी में भर कर उस में वज़्नी पत्थर डाल दिया जाए नीज़ थैली या बोरी पर चन्द जगह ***चीरे*** ज़रूर लगाए जाएं ता कि उस में फ़ौरन पानी भर जाए और वोह तेह में चली जाए कि पानी अन्दर न जाने की सूरत में बा'ज़ अवक़ात मीलों तक तैरती हुई कनारे पहोंच जाती है और बा'ज़ अवक़ात गंवार या कुफ़्फ़ार बोरी ह़ासिल करने की लालच में ***मुक़द्दस अवराक़*** कनारे ही पर ढेर कर देते हैं और फिर इतनी सख़्त बे अ-दबियां होती हैं कि सुन कर ***उ़श्शाक़*** का कलेजा कांप उठे ! मुक़द्दस अवराक़ की बोरी गेहरे पानी तक पहुंचाने के लिये मुसल्मान ***किश्ती वाले*** से भी तआ़वुन ह़ासिल किया जा सकता है। मगर बोरी में चीरे हर ह़ाल में डालने होंगे।

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुक़द्दस अवराक़ दफ़्न करने का त़रीक़ा

मुक़द्दस अवराक़ को ***दफ़्न*** भी कर सकते हैं, इस का त़रीक़ा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे ***बहारे शरीअ़त*** हिस्सा:16, स-फ़ह़ा नंबर:121 पर **आ़लमगीरी** के ह़वाले से लिख्खा है, "अगर मुस्ह़फ़ शरीफ़ पुराना हो गया, इस क़ाबिल न रहा कि उस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि इस के अवराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ होंगे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़्तियात़ की जगह ***दफ़्न*** किया जाए और दफ़्न करने में इस के लिये (गढ़ा खोद कर जानिबे क़िब्ला की दीवार को इतना खोदें कि सारे मुक़द्दस अवराक़ समा जाएं ऐसी) ***लह़्द*** बनाई जाए ताकि इस पर मिट्टी न पड़े या (गढ़े में रख कर) उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें कि इस पर मिट्टी न पड़े, मुस्ह़फ़ शरीफ़ पुराना हो जाए तो उस को जलाया न जाए।"

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

“लूट लो फ़ैज़ाने بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ” के उन्तीस[29] हुरूफ़ की निस्बत से 29 म-दनी फूल

(इब्तिदाई दस म-दनी फूल तफ़्सीरे नईमी पारह अव्वल स़-फ़ह़ा नंबर:44 से लिये गए हैं)

मदीना-1 بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ कु़रआने पाक की पूरी आयत है मगर किसी सूरत का जुज़्व नहीं बल्कि सू-रतों में फ़ासिला करने के लिये उतारी गई है इसी लिये नमाज़ में इस को आहिस्ता ही पढ़ते हैं हां जो ह़ाफ़िज़ तरावीह़ में पूरा कु़रआने पाक ख़त्म करे वोह ज़रूर किसी न किसी सूरत के साथ एक बार بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ज़ोर से पढ़े।

मदीना-2 ***सूरए*** तौबा के इलावा बाक़ी हर सूरत بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ से शुरूअ़ कीजिये अगर सूरए तौबा से ही तिलावत शुरूअ़ करें तो तिलावत के लिये بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ पढ़ लीजिये।

मदीना-3 ***शामी*** में है कि हुक़्क़ा पीते वक़्त और बदबूदार चीज़ें (कच्ची प्याज़ व लह्सन वग़ैरा) खाते वक़्त ***बिस्मिल्लाह*** न पढ़ना बेहतर है।

मदीना-4 ***इस्तिन्जा*** ख़ाने में पहोंच कर ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ना मन्अ़ है।

मदीना-5 ***नमाज़ी*** नमाज़ में जब कोई सूरत पढ़े तो पहले आहिस्ता से بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ पढ़ना मुस्तह़ब है।

मदीना-6 ***जो*** साह़िबे शान काम बिग़ैर ***बिस्मिल्लाह*** के शुरूअ़ किया जाएगा उस में ब-र-कत न होगी।

मदीना-7 ***जब*** मुर्दे को ***क़ब्र*** में उतारा जाए तो उतारने वाले येह पढ़ते जाएं (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ)
بِسْمِ اللّٰهِ وَ عَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

मदीना-8 ***जुमुअ़ा,*** ईदैन, निकाह़ वग़ैरा का ख़ुत़्बा اَلْحَمْدُلِلّٰه से शुरूअ़ किया जाए या'नी (इब्तिदाअन) ***बिस्मिल्लाह*** आहिस्ता से पढ़ी जाए फिर जब कु़रआने पाक की आयत आए तब ख़त़ीब बुलन्द आवाज़ से ***बिस्मिल्लाह*** पढ़े।

मदीना-9 ***जानवर*** को ज़ब्ह़ करते वक़्त ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ना (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना) वाजिब है कि अगर जान बूझ कर छोड़ दिया (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम न लिया) तो जानवर मुर्दार होगा अगर भूले से छूट गई तो जानवर ह़लाल है।

मदीना-10 (ज़ब्हे इज़्तिरारी म-स़-लन) शिकारी तीर या भाला वग़ैरा धारदार चीज़ से शिकार करे और येह चीज़ें फेंकते वक़्त ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ ले तो अगर जानवर उस के पास पहोंचते पहोंचते मर भी गया तब भी ह़लाल होगा। यूं ही अगर पालतू जानवर क़ब्ज़े से निकल गया म-स़-लन : गाय कुंवें में गिर गई या ऊंट भाग गया तो ***बिस्मिल्लाह*** केह कर तीर या भाला या तल्वार मार दी गई तो जानवर ह़लाल है। (***बिस्मिल्लाह*** पढ़ कर डन्डा या पत्थर मारने या बन्दूक़ से गोली या छर्रा चलाने से वह़्शी जानवर या परिन्दा मर गया तो ह़राम है क्यूं कि येह ख़ून बेहने के सबब नहीं बल्कि चोट से मरा है। हां अगर ज़ख़्मी ह़ालत में हाथ आ गया तो ज़ब्हे शर-ई से ह़लाल हो जाएगा। जो वह़्शी जानवर या परिन्दा कब्ज़े में है उस के ह़लाल होने के लिये ज़ब्हे इख़्तियारी ज़रूरी है। या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम

ले कर उस को क़ाइदे के मुताबिक़ ज़ब्ह़ करना होगा)

मदीना-11 ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अ़ली बूनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, जो बिला नाग़ा सात[7] दिन तक بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **786** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस की हर ह़ाजत पूरी हो। अब वोह ह़ाजत ख़्वाह किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स़-फ़ह़ा : 73)

मदीना-12 ***जो*** कोई सोते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **21** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले उस रात शैत़ान,चोरी,अचानक मौत और हर त़रह़ की आफ़तो बला से मह़फ़ूज़ रहे।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम स़-फ़ह़ा : 73)

मदीना-13 ***जो*** किसी ज़ालिम के सामने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **50** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स़-फ़ह़ा : 73)

मदीना-14 ***जो*** शख़्स़ तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख़ कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **300** बार और दुरूद शरीफ़ **300** बार पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा। और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर हो जाएगा।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स़-फ़ह़ा : 73)

मदीना-15 ***कुन्द*** ज़ेहन अगर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **786** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस का ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए और जो बात सुने याद रहे।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स़-फ़ह़ा:73)

मदीना-16 **अगर** क़ह़त़ साली हो तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **61** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ें, (फिर दुआ़ करें) اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ बारिश होगी।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स़-फ़ह़ा:73)

मदीना-17 بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ काग़ज़ पर **35** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) लिख कर घर में लटका दें اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ शैत़ान का गुज़र न हो और ख़ूब ब-र-कत हो। अगर दुकान में लटकाएं तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ कारोबार ख़ूब चमके।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स़-फ़ह़ा : 73,74)

मदीना-18 ***यकुम मुह़र्रमुल ह़राम को*** بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **130** बार लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े रेग्ज़ीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले, धात की डिब्या में किसी क़िस्म का ता'वीज़ न पहनें इस का मस्अला

स़-फ़ह़ा:69 पर गुज़रा) إن شآء الله عزوجل उ़म्र भर उस को या उस के घर में किसी को बुराई न पहोंचे।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स़-फ़ह़ा :74)

मदीना-19 ***जिस*** औ़रत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों वोह بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **61** बार लिख कर (या लिखवा कर) अपने पास रखे। (चाहे तो मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग कर के कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर गले में पहन ले या बाज़ू में बांध ले।) إن شآء الله عزوجل बच्चे ज़िन्दा रहेंगे।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम स़-फ़ह़ा : 74)

मदीना-20 بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **70** बार लिख कर मय्यित के कफ़न में रख दीजिये। إن شآء الله عزوجل मुन्कर नकीर का मुआ़-मला आसान हो जाएगा। (बेहतर येह है कि मय्यित के चेहरे के सामने दीवारे क़िब्ला में मेहराब नुमा त़ाक़ बना कर उस में रखिये साथ ही अ़ह्द नामा और मय्यित के पीर स़ाह़िब का श-जरह वग़ैरा भी रख दीजिये।)

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम स़-फ़ह़ा : 74)

मदीना-21 بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ किसी क़ारी या आ़लिम को पढ़ कर सुना दीजिये अगर ह़ुरूफ़ स़ह़ीह़ मख़ारिज से अदा न होते हों तो सीख लीजिये वरना फ़ाइदे के बदले नुक़्स़ान का अन्देशा है।

मदीना-22 ***लिखने*** में ए'राब लगाने की ज़रूरत नहीं जब भी पहनने पीने या लटकाने के लिये बत़ौरे ता'वीज़ कोई आयत या इ़बारत लिखें तो दाइरे वाले ह़ुरूफ़ के दाइरे खुले रखने होंगे। म-स़-लनः "الله" में "ہ" का और "رَحْمٰن" और "رَحِیۡم" दोनों में "م" का दाइरा खुला हो।

मदीना-23 ***कपड़े*** उतारते वक़्त ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ लेने से जिन्नात सित्र नहीं देख सकते। (अ़-मलुल यौमि वल लै-लति लिइब्ने सुन्नी स़-फ़ह़ा : 8) कमरे का दरवाज़ा, खिड़कियां, अलमारी की दराज़े जितनी बार भी खोल बन्द करें नीज़ लिबास,बरतन वग़ैरा हर चीज़ रखते उठाते हर बार بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ने की आ़दत बना लीजिये। إن شآء الله عزوجل सरकश जिन्नात आप के घर में दाख़िले, चोरी और आप की चीज़ें इस्ते'माल करने से बा'ज़ रहेंगे।

मदीना-24 ***सुवारी*** (गाड़ी) फिसले, या उस को झटका लगे तो ***बिस्मिल्लाह*** कहिये।

मदीना-25 ***सर*** में तेल डालने से क़ब्ल بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लीजिये वरना **70** शैत़ान सर में तेल डालने में शरीक हो जाते हैं।

मदीना-26 ***घर*** का दरवाज़ा बन्द करते वक़्त याद कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लीजिये إن شآء الله عزوجل शैत़ान और सरकश जिन्नात घर में दाख़िल न हो सकेंगे

(स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:312)

मदीना-27 **रात** को खाने पीने के बरतन ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ कर ढक दीजिये, अगर ढकने के लिये कोई चीज़ न हो तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ केह कर बरतन के मुंह पर तिन्का वग़ैरा रख दीजिये। (स़ह़ीह़ बुख़ारी जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:312) ***मुस्लिम शरीफ़*** की एक रिवायत में है, साल में एक रात ऐसी आती है कि उस में ***वबा*** उतरती है जो बरतन छुपा हुवा नहीं

है या मश्क का मुंह बंधा हुवा नहीं है अगर वहां से वोह वबा गुज़रती है तो उस में उतर जाती है।

(मुस्लिम, स-फ़्हा : 1115, हदीस नंबर : 2114)

मदीना-28 ***सोने*** से क़ब्ल بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर तीन बार बिस्तर झाड़ लीजिये, اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मूज़िय्यात (या'नी ईज़ा देने वाली चीज़ों) से पनाह हासिल होगी।

मदीना-29 ***कारोबार*** में लैन दैन के वक़्त या'नी जब किसी से लें तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ें और जब किसी को दें तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ कहें اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब ब-र-कत होगी।

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की ब-र-कतों से मालामाल फ़रमा और हर नेक व जाइज़ काम की इब्तिदा में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात हिकायात

(1) लकड़ हारा कैसे मालदार बना ?

एक लकड़ हारा रोज़ाना दरिया पार जा कर लकड़ियां काट कर लाता और बेच कर अपने बाल बच्चों का पेट पालता। पुल चूं कि उस के घर से काफ़ी दूर था इस लिये आने जाने में काफ़ी वक़्त सर्फ़ हो जाता और यूं माली तौर पर वोह मुस्तह्कम नहीं हो पाता था। एक दिन उस ने मस्जिद के अन्दर **मुबल्लिग़** के बयान में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल सुने, मुबल्लिग़ की येह बात उस के ज़ेह्न में बैठ गई कि "***बिस्मिल्लाह*** शरीफ़ की ब-र-कत से बड़े से बड़ा मस्अला हल हो सकता है।" चुनान्चे जब जंगल में जाने का वक़्त हुवा तो ***पुल*** पर जाने के बजाए بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर वोह ***दरिया*** में उतर गया और चलता हुवा जल्द ही आसानी के साथ दूसरे कनारे पहोंच गया, लकड़ियां काटने के बा'द उस ने फिर इसी त़रह किया ***बिस्मिल्लाह*** की ब-र-कतों का ज़ुहूर होने लगा और थोड़े ही अ़रसे में वोह ***मालदार*** हो गया।

(मुलख़्ख़स अज़ शम्सुल वाइज़ीन)

है पाक रुत्बा फ़िक्र से उस बे नियाज़ का
कुछ दख़्ल अ़क़्ल का है न काम इम्तियाज़ का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह सब यक़ीने कामिल की बहारें हैं, अगर ***ए'तेक़ाद मु-त-ज़लज़िल*** हो तो इस त़रह के नताइज बर आमद नहीं हो सकते "यक़ीने कामिल" से मु-त-अ़ल्लिक़ ***हुज्जतुल इस्लाम*** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡوَالِی ने सू-रए

यूसुफ़ की तफ़्सीर में एक इन्तिहाई ***सबक़ आमोज़ ह़िकायत*** नक़्ल की है। चुनान्चे एक मर्तबा बग़दादे मुअ़ल्ला में एक शख़्स़ ने खड़े हो कर लोगों से एक दिरहम का सुवाल किया, मश्हूर मुह़द्दिस़ ह़ज़रते ***सय्यिदुना इब्ने सम्माक*** رَحمۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने फ़रमाया, तुम को कौन सी सूरह अच्छी त़रह़ याद है ? उस ने कहा, ***सू-रतुल फ़ातिह़ा।*** फ़रमाया, एक बार पढ़ कर उस का स़वाब मेरे हाथ बेच दो, मैं इस के बदले अपनी सारी दौलत तुम्हारे ह़वाले कर दूंगा ! ***साइल*** केहने लगा, ह़ज़रत ! मैं मजबूर हो कर एक दिरहम का सुवाल करने आया हूं, क़ुरआन बेचने नहीं आया। येह केह कर वोह साइल क़ब्रिस्तान चला गया, ***बारिश*** शुरूअ़ हो गई ह़त्ता कि ओले बरसने लगे, वोह एक छज्जे के नीचे पनाह लेने के लिये लपका, वहां ***सब्ज़ लिबास*** में मल्बूस एक सुवार पहले ही से मौजूद था उस ने कहा, तुम ने ही ***सू-रतुल फ़ातिह़ा*** का स़वाब बेचने से इन्कार किया था ? कहा, जी हां। सुवार ने उस को दस हज़ार दिरहम की थैली दी और कहा ''इन को ख़र्च करो ख़त्म होने पर اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इतने ही मज़ीद दूंगा। ***साइल*** ने पूछा ''आप कौन है ?'' सुवार ने बताया ''मैं तेरा ***यक़ीन*** हूं।'' येह केह कर सुवार चला गया।

(मुलख़्ख़स़ अज़ सू-रए यूसुफ़ लिल ग़ज़ाली, स़-फ़ह़ा:17,18)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यहां उन लोगों को इ़ब्रत ह़ासि़ल करनी चाहिये जो भीक मांगने के लिये तिलावत करते, पैसे और खाना मिलने की लालच में मह़ाफ़िले ख़त्मे क़ुरआन और इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में शिर्कत करते और रकम मिलने के शौक़ में तरावीह़ में क़ुरआने पाक सुनाते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ***इख़्लास़*** व ***यक़ीन*** की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमाए

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास़ ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *!*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इख़्लास़ निहायत ही अ़ज़ीम दौलत है, जिस को मिल जाए उस का बेड़ा पार हो जाए। आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आ'माल में इख़्लास़ पैदा करने की ''म-दनी सोच'' बनेगी और जब आ'माल में इख़्लास़ पैदा हो जाएगा तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

जल्वे ख़ुद आएं त़ालिबे दीदार की त़रफ़

केसेट इज्तिमाअ़ में दीदारे मुस़्त़फ़ा ﷺ

दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (स़ह़राए मदीना, मदी-नतुल औलिया, मुल्तान) के इख़्तिताम पर आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ढेरों ***म-दनी क़ाफ़िले*** सुन्नतों की तरबिय्यत ह़ासि़ल करने के लिये शहर ब-शहर और गांव ब-गांव रवाना होते हैं, चुनान्चे एक आ़शिक़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बयान का अपने अन्दाज़ में ख़ुलास़ा पेशे ख़िदमत है। ***सिने 1423 हिजरी*** के बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक म-दनी क़ाफ़िला **12** दिन के लिये ज़िला' लय्या (पंजाब,पाकिस्तान)

पहुंचा, जद्वल के मुत़ाबिक़ एक दिन जब ***केसेट इज्तिमाअ़*** हुवा तो केसेट का सुन्नतों भरा बयान सुन कर एक आ़शिक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह बिलक बिलक कर रोने लगे यहां तक कि होश जाता रहा, जब इफ़ाक़ा हुवा तो काफ़ी हश्शाश बश्शाश थे, उन्हों ने बताया कि اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ गुनहगार पर फ़ैज़ाने करम हुवा और मुझे मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार का शरबत नसीब हो गया। दूसरे दिन फिर ***केसेट इज्तिमाअ़*** हुवा, उन के साथ वोही कैफ़िय्यत हुई, अब की बार ख़्वाब में वोह ज़ियारते रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस त़रह फ़ैज़याब हुए कि म-दनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िर भी ह़ाज़िरे ख़िदमत थे।

आंखें जो बन्द हों तो मुक़द्दर खुलें ह़सन
जल्वे ख़ुद आएं त़ालिबे दीदार की त़रफ़

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वस्वसा : बा'ज़ लोग ख़्वाब सुना सुना कर लोगों को अपना गिर्वीदह बना लेते हैं, लिहाज़ा जो भी ख़्वाब में ज़ियारत का दा'वा करे उस पर आंखें बन्द कर के ए'तिमाद नहीं करना चाहिये कम अज़ कम उस से क़सम तो लेनी ही चाहिये।

इ़लाजे वस्वसा : स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ की सब से पहली ह़दीस़ है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। तो अगर कोई ह़ुब्बे जाह के बाइस़ लोगों को अपना ख़्वाब सुनाता, अपनी शोहरत और वाह ! वाह चाहता है तो वाक़ेई मुजरिम है। और अगर अच्छी निय्यत से सुनाता है, **म-स़्-लन :** ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में ख़ुश क़िस्मती से किसी ने अच्छा ख़्वाब देखा अब वोह इस लिये सुना रहा है ताकि इस गए गुज़रे दौर में लोगों को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र की तरग़ीब मिले और उन्हें इत़्मीनान की दौलत नसीब हो कि दा'वते इस्लामी अहले ह़क़ और **आ़शिक़ाने रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों भरी तह़रीक है और यूं इस से वाबस्ता हो कर अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त का सामान करें। येह निय्यत मह़मूद है और इस निय्यत से ख़्वाब सुनाने वाले को اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ स़वाब मिलेगा। नीज़ तह़दीस़े ने'मत या'नी ने'मत का चरचा करने की निय्यत से सुनाता है तब भी जाइज़ है। हां अगर रियाकारी का ख़ौफ़ हो तो अपना नाम ज़ाहिर न करे कि इस में ज़ियादा आ़फ़िय्यत है। बहर ह़ाल दिल की निय्यत का ह़ाल ***अल्लाह ज़ुल जलाल*** عَزَّوَجَلَّ जानता है, मुसल्मान के बारे में बिला वजह बद गुमानी करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, बद गुमानी की क़ुरआने पाक और अह़ादीस़े मुबा-रका में मज़म्मत वारिद हुई है। चुनान्चे पारह : ***26 सू-रतुल ह़ुजुरात*** की बारहवीं आयत में इर्शादे रब्बानी है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ؗ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

ह़दीसे़ पाक में है, "बद गुमानी से बचो, क्यूं कि बद गुमानी सब से ज़ियादा झूटी बात है।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़, जिल्द : 6, स़-फ़ह़ा : 166, ह़दीस़ नंबर : 5143)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में नक़्ल करते हैं, "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक शख़्स़ को चोरी करते हुए देख लिया तो फ़रमाया, "क्या तूने चोरी नहीं की ?" उस ने कहा, "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने चोरी नहीं की," येह सुन कर आप عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़रमाया, "वाक़ेई तूने चोरी नहीं की मेरी आंखों ने धोका खाया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से ***एह़तिरामे मुस्लिम*** की अहम्मिय्यत का ब-ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। कि शरीअ़त के दाइरे में रहते हुए मुसल्मान की पर्दा पोशी की जाए येह न हो कि बे सबब उस पर बद गुमानी का दरवाज़ा खोल कर उसे झूटा और गप्पी वग़ैरा क़रार दे कर अपनी आख़िरत को दाव पर लगाते हुए ख़ुद को مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जहन्नम का ह़क़दार बना दिया जाए।

تُوْبُوْا إِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُاللّٰه

झूटा ख़्वाब सुनाने का अ़ज़ाब

बिल फ़र्ज़ कोई झूटा ख़्वाब गढ़ कर सुनाता भी है तो इस का वोह ख़ुद ही ज़िम्मादार, सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मु-नज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है, "जो झूटा ख़्वाब बयान करे उसे बरोज़े क़ियामत जव के दो दानों में गांठ लगाने की तक्लीफ़ दी जाएगी और वोह हरगिज़ गांठ नहीं लगा पाएगा।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द : 8, स़-फ़ह़ा:106, ह़दीस़ नंबर : 7042)

बे सोचे समझे बोल पड़ने वालो ख़बरदार !

एक और ह़दीसे़ पाक में है, एक शख़्स़ ऐसा कलाम करता है जिस में वोह ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता (ह़ालांकि येह गुफ़्तुगू, झूट, ग़ीबत, ऐ़ब जूई या मन घड़त ख़्वाब वग़ैरा ह़राम पर मब्नी होती है।) तो वोह इस बात के सबब जहन्नम में इस मिक़्दार से भी ज़ियादा गिरेगा जिस क़दर मश्रिक़ो मग़रिब के दरमियान फ़ासिला है

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द :7, स़-फ़ह़ा:236,ह़दीस़ नंबर:6477)

ख़्वाब सुनाने वाले से क़सम का मुता-लबा शर-अ़न वाजिब नहीं। और जो مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ झूटा होगा, हो सकता है वोह झूटी क़सम भी खा ले।

वस्वसा : येही मुनासिब लगता है कि लोगों में बयान करने के बजाए ख़्वाब को सी़-ग़ए राज़ में रखा जाए।

इ़लाजे वस्वसा : क्या मुनासिब है और क्या मुनासिब नहीं, इस को बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن हम से ज़ियादा बेहतर समझते थे। अच्छे ख़्वाब बयान करने से शरीअ़त ने मन्अ़ नहीं फ़रमाया तो हम कौन हैं रोकने वाले ! क़ु.रआने करीम, अह़ादीसे़ मुबा-रका, और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن की किताबों में ख़्वाबों का ब-कस़रत तज़्किरा है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

अबुल क़ासिम क़ुशैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ***रिसा-लए क़ुशैरिय्या*** में ***"रुअ-यल क़ौम"*** नामी बाब में स़-फ़ह़ा : 368 ता 377 पर औलियाए किराम के **66** ख़्वाब नक़्ल किये हैं। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الوالی ने ***एह़्याउल उ़लूम*** की चौथी जिल्द के स़-फ़ह़ा नंबर: 540 ता 543 पर ***"मनामातुल मशाइख़"*** नामी बाब में **49** ख़्वाब नक़्ल किये हैं। नीज़ "ह़याते आ'ला ह़ज़रत" (मत़्बूआ़ मक्त-बए न-बविय्या गंज बख़्श रोड, लाहौर) के स़-फ़ह़ा नंबर :424 ता 432 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवा-नए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे़ ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी **अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के **14** ख़्वाब ख़ुद आप ही की ज़बानी मरवी हैं। उन में से एक ख़्वाब के ज़िम्न में अ़र्ज़ है,

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का ख़्वाब

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दो[2] हाथ से ***मुस़ा-फ़ह़ा*** के जवाज़ में **40** स़-फ़ह़ात का रिसाला बनाम "صَفَائِحُ اللُّجَیْن فِیْ کَوْنِ تَصَافُحٍ بِکَفَّی الْیَدَیْن" (या'नी चांदी के पत्तर दोनों हाथों की हथेलियों से मुसा-फ़ह़ा करने के बयान में) तह़रीर फ़रमाया है, उस के स़-फ़ह़ा नंबर 3 पर अपना वोह ख़्वाब मुफ़स्स़ल त़ौर पर बयान फ़रमाया है जिस में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की ज़ियारत हुई है। नीज़ मुसल्मानों को वसाविस से बचाने और उन की मा'लूमात में इज़ाफ़ा फ़रमाने की ख़ात़िर इसी रिसा-लए मुबा-रका में लागों के आगे ख़्वाब बयान करने के बारे में दलाइल क़ाइम किये हैं। चुनान्चे मज़कूरा रिसाले में फ़रमाते हैं :

आज किस ने ख़्वाब देखा ? :

अह़ादीसे़ ***स़ह़ीह़ा*** से स़ाबित हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसे (या'नी ख़्वाब को) अम्रे अ़ज़ीम जानते और इस के सुनने, पूछने, बताने, बयान फ़रमाने में निहायत द-रजे का एहतिमाम फ़रमाते। स़ह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा में ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े सुब्ह़ पढ़ कर ह़ाज़िरीन से दर्याफ़्त फ़रमाते, "आज की शब किसी ने कोई ख़्वाब देखा ?" जिस किसी ने देखा होता अ़र्ज़ कर देता, हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ता'बीर फ़रमाते।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:2,स़-फ़ह़ा:127,ह़दीस़ नंबर:1386)

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं, "अह़मद व बुख़ारी व तिरमिज़ी ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जब तुम में से कोई ऐसा ख़्वाब देखे जो उसे प्यारा मा'लूम हो तो वोह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है, चाहिये कि इस पर अल्लाह तआ़ला की ह़म्द बजा लाए और **लोगों के सामने बयान करे।**

(मुस्नदे इमाम अह़मद, जिल्द:2, स़फ़ह़ा:502, ह़दीस़ नंबर:6223)

बिशारतें बाक़ी हैं

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحمۃُ اللہِ تعَالٰی علَیہ मज़्कूरा रिसाले में नक़्ल फ़रमाते हैं । ''हुज़ूर मुफ़ीज़ुन नूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, ''नुबुव्वत गई, अब मेरे बा'द नुबुव्वत न होगी । मगर बिशा-रतें । वोह क्या हैं ? नेक ख़्वाब के आदमी ख़ुद देखे या उस के लिये देखी जाए ।

(त़-बरानी अल मो'जमुल कबीर, जिल्द:3,स़-फ़ह़ा:179, ह़दीस़ नंबर:3051)

अपने बारे में अच्छा ख़्वाब देखने वाले को इन्आ़म

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحمۃُ اللہِ تعَالٰی عَلَیہ मज़ीद फ़रमाते हैं, ''येह भी सुन्नते स़ह़ाबा عَلَیہِمُ الرِّضْوَان से स़ाबित, कि जो ख़्वाब ऐसा देखा गया जिस में उन के क़ौल की ताईद निकली इस पर शाद (या'नी ख़ुश) हुए और देखने वाले की तौक़ीर (इ़ज़्ज़तो अहम्मिय्यत) बढ़ा दी । ***स़ह़ीह़ैन*** में है, ''अबू ***जम्रह ज़ब्ई़*** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने ***तमत्तोअ़*** हज में ख़्वाब देखा, जिस से (फ़िक़्ही मसाइल में) मज़्हबे इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا की ताईद हुई । इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا ने (वोह मुबारक ख़्वाब सुन कर अपने माल से) उन का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया । और उस रोज़ से उन्हें अपने साथ तख़्त पर बिठाना शुरूअ़ किया ।

(मुलख़्ख़स़न अज़ स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:186, ह़दीस़ नंबर:1567)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

इमाम बुख़ारी की वालिदा का ख़्वाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आपने दूसरों को ख़्वाब सुनाने के ज़िम्न में स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ के हवाले से भी दो² रिवायात मुला-ह़ज़ा फ़रमाईं । स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ के मुअल्लिफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیہِ رَحمۃُ اللّٰہِ البَارِی ने निहायत ही अ-रक रेज़ी के साथ अह़ादीसे़ मुबा-रका की तदवीन फ़रमाई, आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ ख़ुद फ़रमाते हैं, ''اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने ''स़ह़ीह़ बुख़ारी'' में तक़रीबन छे हज़ार[6000] अह़ादीसे़ शरीफ़ा ज़िक्र की हैं, ''हर ह़दीस़ को लिखने से क़ब्ल ग़ुसुल कर के दो² रक्अ़तें नमाज़ अदा कर लिया करता था ।'' आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल رَحمۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیہ बहुत नेक आदमी थे और आप की वालि-दए माजिदह رَحمۃُ اللّٰہ تعَالٰی عَلَیہَا स़ावालेह़ा और ***मुजा-बतुद दुआ़अ*** (या'नी वोह ख़ातून जिस की दुआ़ क़बूल होती हो ।) थीं । बचपन शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी की बीनाई जाती रही । वालि-दए माजिदह رَحمۃُ اللّٰہ تعَالٰی عَلَیہَا इस स़दमे से रोती रेहतीं और गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगा करतीं । एक रात सोते में क़िस्मत का सितारा चमक उठा, दिल की आंखे खुल गईं, ख़्वाब में देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए हैं और फ़रमा रहे हैं, ''आप अपने बेटे की बीनाई की वापसी के लिये दुआ़एं मांगती रही हैं । मुबारक हो कि आप की दुआ़ क़बूल हो चुकी है । ***अल्लाह*** तबा-र-क-व तआ़ला ने आप के बेटे की बीनाई बह़ाल फ़रमा दी है ।'' जब सुब्ह़ हुई और देखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَیہِ رَحمۃُ اللّٰہِ البَارِی की आंखें रौशन हो चुकी थीं ।

(मुलख़्ख़स़ अज़ तफ़्हीमुल बुख़ारी, जिल्द:अव्वल स़-फ़ह़ा:4, मुअल्लिफ़ शैख़ुल ह़दीस़ अ़ल्लामा ग़ुलाम रसूल र-ज़वी)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) यहूदी और यहूदन की दिलचस्प हिकायत

एक यहूदी एक यहूदन पर आशिक़ हो गया और उस के इश्क़ में मजनून की मिस्ल हो गया के खाने पीने तक का होश न रहता। आख़िरश ह़ज़रते सय्यिदुना ***अ़ताउल अक्बर*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّاوَر की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर अपना ह़ाल अ़र्ज़ किया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक काग़ज़ के पुर्ज़े पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिख कर दी और फ़रमाया, इस को निगल जाओ इस उम्मीद पर के अल्लाह तआ़ला तुम्हें इस के मुआ़-मले में तसल्ली अ़ता फ़रमा दे या तुम्हें इस से नवाज़ दे। जब उस ***यहूदी*** ने उसे निगल लिया, (बस निगलते ही उस के दिल में म-दनी इन्क़िलाब आ गया चुनान्चे उस ने) अ़र्ज़ की, "ऐ अ़ता ! رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मैं ने ह़ला-वते ईमान (या'नी ईमान की मिठास) को पा लिया और मेरे दिल में नूर ज़ाहिर हो चुका, मैं उस औ़रत (के इश्क़) को भूल चुका, मुझे ***इस्लाम*** के बारे में आगाह फ़रमाइये। सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस पर इस्लाम पेश किया। और येह ***बिस्मिल्लाह*** की ब-र-कत से मुसल्मान हो गया। उधर उस ***यहूदन*** ने जब उस की इस्लाम आ-वरी की ख़बर सुनी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ताउल अक्बर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّاوَر की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुई, "ऐ इमामल मुस्लिमीन ! मैं ही वोह औ़रत हूं जिस का तज़किरा इस्लाम क़बूल करने वाले यहूदी ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किया और मैं ने गुज़श्ता शब ख़्वाब देखा कि एक आने वाला मेरे पास आ कर केहने लगा, "अगर तू जन्नत में अपना ठिकाना देखना चाहती है तो सय्यिदुना अ़ताउल अक्बर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّاوَر की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जा वोह तुझे तेरा ठिकाना दिखा देंगे" । तो मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुई हूं इर्शाद फ़रमाइये, "जन्नत कहां है ?" इर्शाद फ़रमाया, "अगर **जन्नत** का इरादा है तो पहले तुझे इस का दरवाज़ा खोलना होगा इस के बा'द ही तू उस (अपने ठिकाने) की त़रफ़ जा सकेगी।" अ़र्ज़ किया, "मैं इस का दरवाज़ा किस त़रह़ खोल सकूंगी ?" इर्शाद फ़रमाया, "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़।" उस ने ***बिस्मिल्लाह*** शरीफ़ पढ़ी। (बस पढ़ते ही उस के दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया चुनान्चे) कहने लगी, "ऐ अ़ता (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ! मैं ने अपने दिल में नूर पा लिया और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुदाई को देख लिया, मुझे ***इस्लाम*** से आगाह फ़रमाइये।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस पर इस्लाम पेश किया तो ***बिस्मिल्लाह*** शरीफ़ की ब-र-कत से वोह भी मुसल्मान हो गई, फिर अपने घर लौटी। उसी रात जब सोई तो आ़लमे ख़्वाब में ***जन्नत*** में दाख़िल हुई और उस ने जन्नत के मह़ल और गुंबद देखे और उन में से एक गुंबद पर लिखा था لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ उस ने इसे (या'नी इस इ़बारत को) पढ़ा तो एक मुनादी केह रहा था, "ऐ पढ़ने वाली ! जो तूने पढ़ा, अल्लाह तआ़ला ने इसी त़रह़ सब का सब तुझे अ़ता फ़रमा दिया।" औ़रत जाग उठी और अ़र्ज़ किया, *"या इलाही عَزَّوَجَلَّ !* मैं जन्नत में दाख़िल हो चुकी थी फिर तूने मुझे इस से बाहर निकाल दिया। ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ! अपनी क़ुदरते कामिला के वासित़े मुझे ग़मे दुन्या से नजात अ़ता फ़रमा" । जब अपनी दुआ़ से फ़ारिग़ हुई तो घर की छत उस पर गिर पड़ी और

येह शहीद हो गई। तो अल्लाह तआ़ला ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की ब-र-कत से उस पर रह़म फ़रमाया।

(कल्यूबी, हिकायत:26, स़-फ़ह़ा:22,23)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى الله ! أَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कितनी अच्छी क़िस्मत है बिस्मिल्लाह ﷻ की ब-र-कत है
येह सब रब ﷻ की रह़मत है हम ने पाई जन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, वोह अपने फ़ज़्लो करम से अपने वलियों के आस्तानों पर भेज कर बड़े से बड़े बिगड़े हुए की भी बिगड़ी बना देता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** का बच्चा बच्चा औलियाउल्लाह की ग़ुलामी पर नाज़ां है, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के ग़ुलाम भी जब इख़्लास़ के साथ आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के नेकी की दा'वत देते हैं तो बसा अवक़ात कुफ़्फ़ार दामने इस्लाम में आ जाते हैं। चुनान्चे म-दनी क़ाफ़िले की एक बहार मुला-ह़ज़ा हो।

एक ईसाई का क़बूले इस्लाम :

खानपूर (पंजाब) के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान है कि बाबुल मदीना कराची से सुन्नतों की तरबिय्यत ह़ासि़ल करने के लिये तशरीफ़ लाए हुए ***म-दनी क़ाफ़िले*** के साथ मुझे भी अ़लाक़ाई दौरा करने का शरफ़ ह़ासि़ल हुवा। एक दरज़ी की दुकान के बाहर लोगों को इकठ्ठा कर के हम ***"नेकी की दा'वत"*** दे रहे थे। जब बयान ख़त्म हुवा तो उसी दुकान के एक मुलाज़िम नौ जवान ने कहा, "मैं ईसाई हूं। आप ह़ज़रात की नेकी की दा'वत ने मेरे दिल पर गहरा अस़र किया है। महरबानी फ़रमा कर मुझे इस्लाम में दाख़िल कर लीजिये" اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ वोह मुसल्मान हो गया।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
स़दक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ﷻ मदीने का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) बुज़ुर्ग पहेलवान

एक काफ़िर डाकू किसी शानदार मह़ल में दाख़िल हुवा, वहां एक बूढ़े बुज़ुर्ग और उन की एक नौ जवान बेटी के सिवा कोई न था, उस ने इरादा किया कि उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को शहीद कर के उन की लड़की पर ब-मअ़ मालो दौलत क़ाबिज़ हो जाऊं, चुनान्चे उस ने ह़म्ला कर दिया, मगर **वोह बुज़ुर्ग** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तो **पहेलवान** निकले ! उन्हों ने फ़ौरन उस नौ जवान डाकू को चारों ख़ाने चित गिरा दिया ! डाकू किसी त़रह़ आज़ाद

हो कर फिर ह़म्ला आवर हो गया मगर ***बुज़ुर्ग पहेलवान*** رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दोबारा ह़ावी हो गए ! इस त़रह़ कुश्ती चलती रही, हर बार वोह ज़ईफ़ुल उ़म्र बुज़ुर्ग رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ही काम्याब होते रहे, डाकू ने मह़सूस किया कि वोह बुज़ुर्ग رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आहिस्ता आहिस्ता कुछ पढ़ रहे हैं, उस ने पूछा, क्या पढ़ते हो ? उन्हों ने अपनी पहेलवानी का राज़ फ़ाश करते हुए मुस्करा कर फ़रमाया, मैं इन्तिहाई कमज़ोर शख़्स़ हूं, بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ता हूं तो तुम पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ग़-लबा अ़त़ा फ़रमा देता है। जब उस काफ़िर डाकू ने येह सुना तो उस के दिल में ***म-दनी इन्क़िलाब*** बरपा हो गया, और केहने लगा, जिस दीन में ***फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह*** की येह शान है तो खु़द उस दीन की न जाने क्या आन बान होगी ! लिहाज़ा वोह بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ सुनने की ब-र-कत से मुसल्मान हो गया। उन के आपस में गहरे मुरासिम हो गए यहां तक कि उन बुज़ुर्ग رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इन्तिक़ाल के बा'द वोह ***शानदार मह़ल*** और सारी दौलत उसी ***नौ मुस्लिम*** को मिल गई और उस बुज़ुर्ग رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बेटी से उस की शादी हो गई।

(मुलख़्ख़स़ अज़ अस्‌रारुल फ़ातिह़ा,स़-फ़ह़ा:165)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

ह़म्द है उस ज़ात عَزَّوَجَلَّ को जिस ने मुसल्मां कर दिया
इ़श्क़े सुल्त़ाने जहां ﷺ सीने में पिन्हां कर दिया

(कबा-लए बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! वोह बुज़ुर्ग यक़ीनन वलिय्युल्लाह थे और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की ब-र-कत से वोह काफ़िर पर ग़-लबा पा लेते थे जो कि उन की करामत थी और बिल आख़िर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की ब-र-कत से काफ़िर डाकू को इस्लाम की अ़ज़ीम ने'मत मुयस्सर आ गई। अब एक ***बिस्मिल्लाह*** की दीवानी की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनिये और झूमिये :-

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) कुंवें से थैली कैसे निकली ?

एक नेक ख़ातून थीं जो बात बात पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ा करती थीं, उन का शौहर जो कि ***मुनाफ़िक़*** था वोह उन की इस आ़दत से बहुत चिड़ता था, आख़िरे कार उस ने येह त़ै किया कि मैं अपनी ज़ौजा को ऐसा ज़लील करूंगा कि याद करेगी। चुनान्चे इस ने उस को एक थैली देते हुए कहा, संभाल कर रख लो, ख़ातून ने वोह थैली ब-ह़िफ़ाज़त रख ली, शौहर ने मौक़अ़' पा कर वोह थैली उठा ली और अपने घर के ***कुंवें*** में फेंक दी ताकि मिलने का सुवाल ही न रहे। इस के बा'द उस ने उन से थैली त़लब की। येह नेक बन्दी थैली की जगह आई और जूं ही ***बिस्मिल्लाह*** कहा, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ***जिब्रील*** عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि तेज़ी के साथ जाओ और थैली उसी जगह रख दो। चुनान्चे सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आनन फ़ानन थैली कुंवें से निकाल कर उस की जगह रख दी। जब ख़ातून ने उठाने के लिये हाथ बढ़ाया तो थैली को वैसे ही पाया कि जैसे रखा था। शौहर थैली पा कर सख़्त ***मु-त-अ़ज्जिब*** हुवा और अल्लाह

तआला से उस ने सच्चे दिल से ***तौबा*** की।

(क़ल्यूबी, हिकायत:11,स-फ़हा:11,12)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह सब ***बिस्मिल्लाह*** की बहारें हैं कि उठते बैठते और हर जाइज़ व साहिबे शान छोटे बड़े काम से क़ब्ल जो ख़ुश नसीब بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ता रहता है मुसीबत के वक़्त उस की ग़ैब से मदद की जाती है।

महब्बत में ऐसा गुमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
न पाऊं फिर अपना पता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

(5) फ़िरऔन का महल

फ़िरऔन ने ख़ुदाई के दा'वे से पहले महल बनाया था और उस के बा-हरी दरवाज़े पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखवाया था, जब उस ने ख़ुदाई का दा'वा किया और ***हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह*** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने की दा'वत दी, तो उस सर-कशी की। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ किया, ***"या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ मैं बार बार इसे तेरी तरफ़ बुलाता हूं लेकिन येह सर-कशी से बाज़ नहीं आता, मुझे तो इस में भलाई के आसार नज़र नहीं आते," ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, ***"ऐ मूसा*** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तुम इसे हलाक कर देना चाहते हो, तुम इस के कुफ़्र को देख रहे हो और मैं अपना नाम देख रहा हूं जो उस ने अपने दरवाज़े पर लिख रखा है!

(तफ़्सीरे कबीर, जिल्द : 1 ,स-फ़हा : 152)

घर की हिफ़ाज़त के लिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! हमें चाहिये कि हम अपने घर के दरवाज़े पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिख लें اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हर तरह की दुन्यवी आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी। हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "जिस ने अपने घर के बा-हरी दरवाज़े **(MAIN GATE)** पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिख लिया वोह (सिर्फ़ दुन्या में) हलाकत से बे ख़ौफ़ हो गया ख़्वाह काफ़िर ही क्यूं न हो, तो भला उस मुसल्मान का क्या आलम होगा जो ज़िन्दगी भर अपने ***दिल*** के आब्गीने पर इस को लिखे हुए होता है।"

(तफ़सीरे कबीर, जिल्द:1,स-फ़हा:152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) आप इन्सान हैं या जिन्न ?

किताबुन नसाएह में है, मश्हूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना ***अबुद्दर्दा*** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की कनीज़ ने एक दिन अर्ज़ किया, "हुज़ूर ! सच बताइये कि ***आप इन्सान हैं या जिन्न ?"*** फ़रमाया,

"اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं इन्सान ही हूं।" केहने लगी, "मुझे तो इन्सान नहीं लगते क्यूं कि मैं चालीस[40] दिन से लगातार आप को ***ज़ह्र*** खिला रही हूं मगर आप का बाल तक बीका नहीं हुवा!" फ़रमाया, "क्या तुझे मा'लूम नहीं जो लोग हर ह़ाल में ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करते रहते हैं उन को कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहोंचा सकती और मैं اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्मे आ'ज़म के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हूं। पूछा, "वोह इस्मे आ'ज़म कौन सा है?" फ़रमाया, (मैं हर बार खाने पीने से क़ब्ल येह पढ़ लिया करता हूं):

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ

(या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की ब-र-कत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोह सुनने जानने वाला है)

इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि तूने किस वजह से मुझे ***ज़ह्र*** दिया? अ़र्ज़ किया, "मुझे आप से बुग्ज़ था।" येह जवाब सुनते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, तू लि-वजहिल्लाह (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये) आज़ाद है। और तूने मेरे साथ जो कुछ किया वोह भी मैं ने तुझे मुआ़फ़ किया।"

(ह़यातुल ह़ैवानुल कुब्रा, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:391)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मानिन्दे शम्अ़ तेरी त़रफ़ लौ लगी रहे
दे लुत़्फ़ मेरी जान को सोज़ो गुदाज़ का

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सह़ा-बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़्मतों के क्या कहने! येह ह़ज़रात हुक्मे कुरआनी, اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ (***तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :*** ऐ सुनने वाले! बुराई को भलाई से टाल। (पारह:24, हा मीम अस्सज्दा:34)) की स़ह़ीह़ तफ़्सीर थे, बार बार ज़ह्र पिलाने वाली कनीज़ को सज़ा दिलवाने के बजाए आज़ाद फ़रमा दिया! इस ह़िकायत से मिलती जुलती एक और ह़िकायत मुला-ह़ज़ा हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) ज़ह्र आलूद खाना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की एक कनीज़ उन से बुग्ज़ रखती थी। येह आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ***ज़ह्र*** देती थी मगर अस़र न करता था। जब अ़र-स़ए दराज़ तक येह मुआ़-मला चलता रहा तो केहने लगी, "एक दराज़ मुद्दत से मैं आप को ज़ह्र देती चली आ रही हूं मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर अस़र अन्दाज़ ही नहीं हो रहा! इर्शाद फ़रमाया, "ऐसा क्यूं करना पड़ा?" कहा, "इस लिये कि आप बूढ़े हो चुके हैं।" इर्शाद फ़रमाया "اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं खाने पीने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ लिया करता हूं।" (इस की ब-र-कत से ज़ह्र से ह़िफ़ाज़त होती रही) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फिर उसे आज़ाद फ़रमा दिया।

(क़ल्यूबी, ह़िकायत: 64 स़-फ़ह़ा : 52)

बे नवा मुफ़्लिसो मोह़ताज गदा कौन ? कि मैं
स़ाह़िबे जूदो करम वस्फ़ है किस का ? तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! ***बिस्मिल्लाह*** शरीफ़ की क्या ख़ूब बहारें हैं.

वस्वसा : रिवायातो ह़िकायात से येही ज़ाहिर होता है कि ***बिस्मिल्लाह*** शरीफ़ पढ़ कर ***ज़ह्‌र*** भी खा लें तो कोई अस़र नहीं होता मगर हम इतना बड़ा ख़त़रा किस त़रह़ मोल लें ! क्यूं कि हमारा तजरिबा है कि अगर्चे ***बिस्मिल्लाह*** पढ़ कर भी कोई मुरग़्ग़न ग़िज़ा खा ली तो पेट में "गड़बड़"हो जाती है !

इलाजे वस्वसा : "कारतूस" शेर को भी मार सकता है जब कि बेह्‌तरीन बन्दूक़ से अच्छी त़रह़ फ़ायर (FIRE) किया जाए, इसी त़रह़ यूं समझिये कि अवरादो वज़ाइफ़ और दुआ़एं "कारतूस" की त़रह़ हैं और पढ़ने वाले की ज़बान मिस्ले बन्दूक़ । तो दुआ़एं वोही हैं मगर हमारी ज़बानें स़ह़ाबा व औलिया عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सी नहीं । जिस ज़बान से रोज़ाना झूट, ग़ीबत,चुग़ली,गाली गलोच,दिल आज़ारी व बद अख़्लाक़ी का सुदूर जारी रहे उस में तास़ीर कहां से आए ? हम ***दुआ़*** तो मांगते ही हैं मगर जब मुश्किल आती है तो **बुज़ुर्गों** के पास ह़ाज़िर हो कर भी दुआ़ की दर-ख़्वास्त करते हैं, क्यूं ? इस लिये कि हर एक का ज़ेह्‌न येही बना हुवा है कि ***पाक ज़बान*** से निकली हुई दुआ़ ज़ियादा कारगर होती है । यक़ीनन بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर ***ख़ालिद*** बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिला ख़त़र ***ज़ह्‌र*** पी लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन की ज़बान पाक, उन का दिल पाक, उन का सारा वुजूद गुनाहों से पाक लिहाज़ा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नामे पाक की ब-र-कत से ज़ह्‌र ने अस़र न किया । इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ***अबुद्दरदा*** और सय्यिदुना ***अबू मुस्लिम*** ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपनी पाक ज़बान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का पाक नाम लेते तो ज़ह्‌र बे अस़र हो कर रह जाता था । वरना ज़ह्‌र फिर ज़ह्‌र होता है इन्सान को कहीं का नहीं छोड़ता इस को इस ***सन्सनी ख़ैज़ ह़िकायत*** से समझने की कोशिश कीजिये, ***किताबुल अज़्किया*** में है, एक ह़ज का क़ाफ़िला दौराने सफ़र एक चश्मे पर पहुंचा, मा'लूम हुवा कि यहां माहिर त़बीबों का घर है, उन के पास जाने का उन्हों ने येह ह़ीला निकाला कि जंगल की एक लकड़ी से अपने एक साथी की पिंडली पर ***ख़राश*** लगा दी जिस से वोह ख़ून आलूद हो गई, फिर उस को ले कर उस घर के दरवाज़े पर पहुंच कर आवाज़ लगाई, क्या ***सांप*** के काटे का यहां इलाज मुम्किन है ? आवाज़ सुन कर एक छोटी लड़की बाहर निकल पड़ी, उस ने पिंडली के ज़ख़्म को ग़ौर से देखते हुए कहा, "इस को सांप ने नहीं काटा बल्कि जिस चीज़ से इस को ख़राश लगी है उस पर कोई ***नर सांप*** पेशाब कर गया होगा, अब येह शख़्स़ बचेगा नहीं, जब आफ़्ताब त़ुलूअ़ होगा तो इन्तिक़ाल कर जाएगा !" चुनान्चे ऐसा ही हुवा सूरज निकलते ही उस ने दम तोड़ दिया ।

(मुलख़्ख़स़ अज़ ह़यातुल हैवानुल कुब्रा, जिल्द अव्वल,स़-फ़ह़ा:391)

हर शै से है इयां मेरे स़ानेअ़ की स़न्अ़तें
आ़लम सब आईनों में है आईना साज़ का

(ज़ौके़ ना'त)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ हमें बार बार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***या रब्बे मुस्त़फ़ा*** पढ़ने की सआ़दत दे, गुनाहों से नजात अ़त़ा कर के हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा । या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ***मदी-नए मुनव्वरह*** में जे़रे गुंबदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में शहादत और ***जन्नतुल बक़ीअ़*** में मदफ़न और ***जन्नतुल फ़िरदौस*** में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ौस अ़त़ा फ़रमा । अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ۙ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۙ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ

"मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाईस22 हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फै़ज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल"

मदीना:1 ***फ़रमाने*** मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो शख़्स़ मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है ।

(ह़िल्यतुल औलियाअ, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा : 45, ह़दीस़ नंबर :14466, मत़्बूआ़ दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मदीना:2 ***सरकारे*** मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस़ को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहोंचाए ।"

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द : 4, स़-फ़ह़ा : 298, ह़दीस़ नंबर : 366, मत़्बूआ़ दारुल फ़िक्र, बैरूत)

मदीना:3 ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है कि आप عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ा कर्दह स़ह़ीफ़े लोगों को कस़रत से सुनाया करते थे । लिहाज़ा आप عَلَیْہِ السَّلَام का नाम ही इदरीस (या'नी दर्स देने वाला) हो गया"

(तफ़्सीरे बग़्वी, जिल्द : 3, स़-फ़ह़ा : 199 मत़्बूआ़ मुल्तान, तफ़्सीरे जुमल, जिल्द : 5, स़-फ़ह़ा : 30, मत़्बूआ़ क़दीमी कुतुब ख़ाना, ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान स़-फ़ह़ा : 556, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़)

मदीना:4 ***हु़ज़ूरे*** ग़ौसे़ पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا (या'नी मैं इ़ल्म का दर्स देता रहा यहां तक कि मक़ामे कुत़्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया ।) (क़स़ीदए ग़ौस़िय्या)

मदीना:5 ***फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स*** देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कालिज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना ***दर्स*** के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के ***म-दनी फूल*** लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।

मदीना:6 ***फ़ैज़ाने सुन्नत*** से रोज़ाना कम अज़ कम ***दो*** [2] ***दर्स*** देने या सुनने की सआदत हासिल कीजिये।

मदीना:7 पारह : 28 ***सू-रतुत तह़रीम*** की छटी आयत में इर्शाद होता है,

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا

तर-जम ए कन्ज़ुल ईमान : (ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ।) अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ ***फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स*** भी है। (दर्स के इ़लावा सुन्नतों भरे बयान या म-दनी मुज़ा-करे का रोज़ाना एक केसेट भी घर वालों को सुनाइये)

मदीना:8 ***ज़िम्मादार*** घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना ***चौक दर्स*** का एहतिमाम करें। म-स़-लन : रात-9 बजे ***मदीना चौक*** (साढ़े नव बजे) ***बग़दादी चौक*** में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर ***चौक दर्स*** का एहतिमाम कीजिये। (मगर ह़ुक़ूक़े आम्मा त-लफ़ न हों।) (म-स़-लन : किसी मुसल्मान या जानवर वग़ैरा का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

मदीना:9 ***दर्स*** के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

मदीना:10 ***दर्स*** वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ ***बा जमाअ़त*** अदा फ़रमाइये।

मदीना:11 ***मेह़राब*** से हट कर (सेह़्न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस़ कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

मदीना:12 ***ज़ैली*** निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में ***दो*** [2] ***ख़ैर ख़्वाह*** मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़ेअ़ पर जाने वालों को नरमी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

मदीना:13 ***पर्दे में पर्दा*** किये दो ज़ानू बैठ कर ***दर्स*** दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर माइक पर देने में भी ह-रज नहीं जब कि नमाज़ियों वग़ैरा को तश्वीश न हो।

मदीना:14 ***आवाज़*** ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से ***दर्स*** दीजिये कि सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। बहर सूरत नमाज़ियों को तक्लीफ़ नहीं होनी चाहिये।

मदीना:15 ***दर्स*** हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

मदीना:16 ***जो*** कुछ ***दर्स*** देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ा-लआ़ कर लीजिये। ताकि ग-लतियां न हों।

मदीना:17 ***फ़ैज़ाने सुन्नत*** के मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़ ***तलफ़्फ़ुज़*** की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी। إن شاءَ الله عزّوجلّ

मदीना:18 ***ह़म्दो*** सलात, दुरूदो सलाम के चारों स़ीग़े, आ-यते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़-रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में अपने त़ौर पर भी न पढ़ा करें।

मदीना:19 ***फ़ैज़ाने सुन्नत*** के इलावा मक्त-बतुल मदीना से शाए' होने वाले ***म-दनी रसाइल*** से भी ***दर्स*** दे सकते हैं।[1]

मदीना:20 ***दर्स*** ब-मअ़ इख़्तितामी दुआ़ सात[7] मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

मदीना:21 ***हर*** मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह ***दर्स का त़रीक़ा,*** बा'द की **तरग़ीब,** और ***इख़्तितामी दुआ़*** ज़बानी याद कर ले।

मदीना:22 ***दर्स*** के त़रीक़े में इस्लामी बेहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा

तीन[3] बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये : क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये।

पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये। :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۙ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये।

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ الله

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا نُوْرَ الله

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये। نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف

(***तर-जमा:*** मैंने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।)

फिर इस त़रह़ कहिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये। अगर थक जाएं तो जिस त़रह़ आप को आसानी हो उसी त़रह़ बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ फ़ैज़ाने सुन्नत का ***दर्स*** सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास, बदन या बालों वग़ैरा को सेहलाते हुए सुनने से इस की ब-र-कतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। (बयान के आग़ाज़ में भी इसी अन्दाज़ में तरग़ीब दिलाइये।) येह केहने के बा'द ***फ़ैज़ाने सुन्नत*** से देख कर दुरूद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये फिर कहिये :

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़-रबी इ़बारात का सिर्फ़ तर-जमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस़ का अपनी राय से हरगिज़ ख़ुलास़ा मत कीजिये। कि ऐसा करना ह़राम है।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी व बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे।)

اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा 'वते इस्लामी*** के महके महके म–दनी माह़ौल में ब–कस़रत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। (अपने यहां के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ का ए'लान इस त़रह़ कीजिये। म–स़–लन : अह़मद आबाद वाले कहें) हर जुमे'रात को शाहे आ़लम दरवाज़ा के पास म–दनी मर्कज़, शाही मस्जिद में, मग़रिब की नमाज़ के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने की म–दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के ***म–दनी क़ाफ़िलों*** में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ***फ़िक्रे मदीना*** के ज़रीए़ ***म–दनी इन्आ़मात*** का कार्ड पुर कर के हर म–दनी माह के इब्तिदाई दस[10] दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब–र–कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफरत करने और ***ईमान की ह़िफ़ाज़त*** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह म–दनी ज़ेह्न बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म–दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये[1] म–दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*
ऐ दा'वते इस्लामी ! तेरी धूम मची हो

आख़िर में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ (ख़ुशूअ़ या'नी बदन की आ़जिज़ी और ख़ुज़ूअ़ या'नी दिलो दिमाग़ की ह़ाज़िरी) के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी व बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

या रब्बे मुस़्त़फ़ा ! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब–त़ुफ़ैले मुस़्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां–बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ दर्स की ग़–लतिय्यां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, अ़मल का जज़्बा दे, हमें परहेज़गार और मां–बाप का फ़रमां बरदार बना। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें अपना और अपने म–दनी ह़बीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ***मुख़्लिस़*** आ़शिक़ बना। हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें म–दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, म–दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दूसरों को भी म–दनी कामों की तरग़ीब दिलवाने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें बीमारियों, क़र्ज़दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, बेजा मुक़द्दमे बाज़ियों परेशानियों और बलाओं से नजात अ़त़ा फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इस्लाम का बोल बाला कर और दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ौल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें ज़ेरे गुंबदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ौस नसीब फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासिता हमारी तमाम जाइज़ दुआ़एं क़बूल फ़रमा।

जिस किसी ने भी दुआ़ के वासिते या रब عَزَّوَجَلَّ *कहा*
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मज्बूर की

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

शे'र के बा'द येह आ-यते दुरूद और दुआ़ की इख़्तितामी आयात पढ़िये:

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये : سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

दर्स की कमाई पाने के लिये (खड़े खड़े नहीं बल्कि) ***बैठ*** कर ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब बिठा लीजिये। और ***इन्फ़िरादी कोशिश*** के ज़रीए़ उन्हें ***म-दनी इन्आ़मात*** और ***म-दनी क़ाफ़िलों*** की ब-र-कतें समझाइये।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ ! येह मेरी दुआ़ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

दुआ़ए अ़त्तार : ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ मुझे और पाबन्दी के साथ ***फ़ैज़ाने सुन्नत*** से रोज़ाना कम अज़ कम ***दो² दर्स मस्जिद,*** घर, चौक, स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा। और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़
मिले दिन में दो² मर्तबा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***"दा'वते इस्लामी"*** के महके महके म-दनी माह़ौल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। (अपने यहां के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ का ए'लान इस त़रह़ कीजिये म-स्-लन : मदी-नतुल औलियाअ अह़मद आबाद वाले कहें) हर जु-म'रात को शाहे आ़लम दरवाज़ा के पास, म-दनी मर्कज़, शाही मस्जिद में मग़रिब की नमाज़ ता फ़ज्रो इश्राक़ होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की म-दनी इल्तिजा है। सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र और रोज़ाना ***फ़िक्रे मदीना*** के ज़रीए़ ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई

दस[10] दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِن شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِن شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلّ। अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात[1] पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِن شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी ! तेरी धूम मची हो

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

महमूद ग़ज़्नवी की बारगाहे रिसालत में मक़्बूलिय्यत

ह़ज़रते सुल्तान महमूद ग़ज़्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى[1] की ख़िदमत में एक शख़्स़ हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की कि मैं मुद्दते मदीद से ह़बीबे रब्बे मजीद عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दीद की ईदे सईद का आरज़ू मन्द था। क़िस्मत से गुज़श्ता रात सर-वरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ***ज़ियारत*** की सआ़दत मिली। **ह़ुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर, शाहे ग़यूर** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मसरूर पा कर अ़र्ज़ की, ***"या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं एक हज़ार दिरहम का मक़रूज़ हूं, इस की अदाएगी से आ़जिज़ हूं और डरता हूं कि अगर इसी ह़ालत में मर गया तो बारे क़र्ज़ मेरी गरदन पर होगा। रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : महमूद सुबुक्तगीन के पास जाओ वोह तुम्हारा क़र्ज़ उतार देगा। मैं ने अ़र्ज़ की, "वोह कैसे ए'तेमाद करेंगे ?" अगर उन के लिये कोई निशानी इनायत फ़रमा दी जाए तो करम बालाए करम होगा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जा कर उस से कहो, **"ऐ महमूद ! तुम रात के अव्वल हिस्से में तीस हज़ार30000 बार दुरूद पढ़ते हो और फिर बेदार हो कर रात के आख़िरी हिस्से में मज़ीद तीस हज़ार30000 बार पढ़ते हो। इस निशानी के बताने से** اِن شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلّ **वोह तुम्हारा क़र्ज़ उतार देगा। सुल्तान महमूद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَدُوْد **ने जब शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रह़मतों भरा पैग़ाम सुना तो रोने लगा और तस्दीक़ करते हुए उस का क़र्ज़ उतार दिया और एक हज़ार दिरहम मज़ीद पेश किये। वु-ज़राअ वग़ैरा मु-त-अ़ज्जिब हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए ! "आ़लीजाह ! इस शख़्स़ ने एक ना मुम्किन सी बात बताई है और आपने भी उस की तस्दीक़ फ़रमा दी ह़ालां कि हम आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते हैं आपने कभी इतनी ता'दाद में दुरूद शरीफ़ पढ़ा ही नहीं और न ही कोई आदमी रात भर में साठ हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ सक्ता है। सुल्तान

---

1. महमूद ग़ज़्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى दसवीं सदी ईसवी में ग़ज़्नी के बहुत बहादुर और आ़शिक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बादशाह गुज़रे हैं। इन का नाम सुल्तान नासिरुद्दीन इब्ने सुबुक्तगीन था, इन्हों ने काफ़ी फ़ुतूह़ात कीं और जबर दस्त काम्याबियां ह़ासिल कीं।

महमूद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡوَدُوۡد ने फ़रमाया ! ''तुम सच केहते हो लेकिन मैं ने उ़-लमाए किराम से सुना है कि जो शख़्स़ दस हज़ारी दुरूद शरीफ़ एक बार पढ़ ले उस ने गोया ***दस हज़ार बार दुरूद शरीफ़*** पढ़े। मैं तीन बार अव्वल शब में और तीन बार आख़िरी शब में ***दस हज़ारी दुरूद शरीफ़*** पढ़ लेता हूं। इस त़रह़ से मेरा गुमान था कि मैं हर रात साठ हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूं। जब इस ख़ुश नस़ीब आ़शिक़े रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ***शाहे ख़ैरुल अनाम*** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रह़मतों भरा पयाम पहुंचाया, मुझे इस ***दस हज़ारी दुरूद शरीफ़*** की तस्दीक़ हो गई, और गिर्या करना (या'नी रोना) इस ख़ुशी से था कि उ़-लमाए किराम का फ़रमान स़ह़ीह़ स़ाबित हुवा कि रसूले ग़ैबदान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर गवाही दी है।

(मुलख़्ख़स़ अज़ तफ़्सीरे रूहुल बयान, जिल्द : 7 स़-फ़ह़ा : 234 मक्त-बए उ़स्मानिया,कोएटा)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الۡحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दस हज़ारी दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ مَّا اخۡتَلَفَ الۡمَلَوَانِ وَتَعَاقَبَ الۡعَصۡرَانِ وَكَرَّ الۡجَدِيۡدَانِ وَاسۡتَقَلَّ الۡفَرۡقَدَانِ وَبَلِّغۡ رُوۡحَهٗ وَاَرۡوَاحَ اَهۡلِ بَيۡتِهٖ مِنَّا التَّحِيَّةَ وَالسَّلَامَ وَبَارِكۡ وَسَلِّمۡ عَلَيۡهِ كَثِيۡرًا ط

तर-जमा : **ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे सरदार मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज जब तक कि दिन गरदिश में रहें और बारी बारी आएं सुब्ह़ो शाम, और बारी बारी आएं रात दिन, और जब तक कि दो सितारे बुलन्द हैं। और हमारी त़रफ़ से आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की और अहले बैत رِضۡوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡهِمۡ اَجۡمَعِيۡن की अरवाह़ को सलाम पहुंचा और ब-र-कत दे और उन पर बहोत सलाम भेज।